SWAMI RAMA TIRTHA

Last photo taken at Lucknow in 1905.

ॐ

राम वर्षा.

द्वितीय भाग.

अर्थात

स्वामी राम तीर्थ जी महाराज के कुल भजन तथा कवितायें जो स्वामी जी के अपने लेखों तथा नोट बुकों में पाई गयीं

जिस को

स्वामी जी के परम शिष्य, आर, ऐस नारायण स्वामी ने उर्दू भाषा से हिन्दी टिप्पनी (अक्षरों) में उलथा कर के सर्व जनों के हित के लिये ९ अध्यायों में विभक्त कर विषयानुसार रचा

और

गोविन्द जी डाया भाई व अन्य कई प्रेमीजनों ने राजकोट (काठियावार) यन्त्रालय गणात्रा से छपवा कर प्रकाशित कीया

मुल्य प्रति जिल्द ०॥)

१९१२

सूचना.

राम वर्षा का मुल्य ०॥) प्रति भाग केवल मास फर वरि तक रहेगा। मास मार्च सन १९१२ से दाम ०॥=) प्रति भाग हो जायगा, अर्थात् दोनों भागों का मुल्य फिर १।) रूपय होगा॥

प्रबन्ध कर्त्ता

विज्ञापन.

विदित हो कि स्वामी राम तीर्थ जी महाराज की अन्य पुस्तकें और उन के परम शिष्य स्वामी नारायण जी के अन्य संशोधित तथा रचित ग्रन्थ भी निम्न लिखित पते पर मिल सक्ते हैं:—

(१) अंग्रेजी भाषा में स्वामी राम तीर्थ जी के कुल उपदेश सहित संक्षिप्त जीवन चरितके॥ पृष्ठ १६०० के लगभग। तीन भागों (जिल्दों) में विभक्त॥

मूल्य प्रति भाग बिना जिल्द के १॥) १—८—०

" सहित जिल्द के २) २—०—०

(२) श्री वेदानुवचन (उर्दू भाषा में) बाबा नगीना सिंह जी कृत और स्वामी नारायण जी से संशोधित॥ इस में उपनिषदों के गूढ़ रहस्य अति उत्तम तथा वचित्र रीति से स्पष्ट खोल कर वर्णन हैं

मूल्य बिना जिल्द के १)........................१—०—०

" सहित " १॥)..................१—८—०

(३) राम वर्षा उर्दू भाषा में भी छप रही है और स्वामी जी के कुल उपदेश अन्य भाषाओं में भी छपने वाले हैं। यह सब निम्न लिखित पते पर ही मिलेंगे॥

अमीरचंद

प्रेम धाम, बड़ा दरीबा—देहिली

शुद्धिपत्र.

शुद्धिपत्र. (प्रस्तावना का)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	१२	२५।१५	२५।५५
७	१६	(मौलवी महम्मद दीन जी)	(मौलवी महम्मद अली जी)
८	५	दश (१०)	सात (७)
९	१६	सर्वदा प्रथम	बहुधा प्रथम
१०	१	सारे पंजाब भर	अपने स्कूल भर
१०	१५	तमाम पंजाब भर	तमाम स्कूल भर
१८	९	नितान्त अपरिचित	अधिक परिचय नहीं रखते थे
१९	६	(संस्कृत) से तो हीन और बेखबर	संस्कृत से तो कम प्रेम और रुचि रखते हो
१९	९	यवन भाषा में तो चतुर	यवन भाषा में अधिक रुचि रखता हो
१९	९	कुछ	अधिक
२१	७	संस्कृत से	संस्कृत व्याकरण से
२१	९	संस्कृत भाषा से	संस्कृत व्याकरण से

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५७	७	मास मार्गशिर	मास पौष
७५	७	एफ बड़े	एक बड़े
७५	नोट की पंक्ति २	केशो आश्रम	केश्वाश्रम

शुद्धि पत्र भजनों का

४०४	१२	बज़ुर्ग	बु.जुर्ग
४११	१२	घुनता	धुनना
४३२	८	* गेब से	* .रोब से
४३२	नोट की पंक्ति ३	* .गुस्सा	दबदबा
४३९	१०	मलिया भेट	मलिया मेट
४४५	३	* कुदर	क़दर
,,	६	क़दम	* क़दम रंजा
४४७	नोटकी पंक्ति २	१७ अबर	१७ अम्बर ६८
	११	ज़ाते बेहत	ज़ाते बेहत
४६८	३	कटल	क़त्ल

पृष्ट	पंक्तिं	अशुद्ध	शुद्ध
४७८	६	अंजब	.अंजब

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४८०	नोट की पंक्ति २	प्रमाणु	परमाणु
४९८	नोट	समद्र	समुद्र
४९७	१	षर्दा	पर्दा
५०१	६	दो पंक्ति रह गयीं	हर दीदाः शोलाः बार है! बिजली है खासो .आम ॥ वह तालियों की गूंज में यक दिल हुए तमाम।
५०२	नोट	१४ दिल...१५...	१३ दिल...नम्बर १५ सारा काट दो
५०४	१	चब रंग हो दिलखाह	जब रंग हो दिलख्वाह (२)
५०६	२	हवासे .आम	हवासे .आम
,,	६	शास्त्र, युक्ति	(१) शास्त्र, युक्ति
,,	नोट	ऐलो	ऐ लो
५०७	३	हैं आब	हैं आब
५०८	१०	मुसत्व्वर	मुतसव्वर
५०८	नोट, ४	अरु दर्या	और दर्या

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५१०	८	१९ अग्नि	१९ केन्द्र
५१२	१३	सुली	सूली
५२४	१४	ओर ही	और ही
५२७	७	५ पनाह (आश्चर्य)	५ पनाह, आश्रय
५२८	११	पोषन	पोषण
५३५	९	जाक दर जौक	जौक दर जौक
५५५	९	क़ावू	क़ाबू
५५६	१४	५७ बाणि	५७ वाणि
५६१	९	बनीये	बंनिये
५७२	१६	२७ माप	२७ नखरे टखरे
५७५	१४	ज़ ॥ ने	ज़माने
५७६	९	९ राहत	१० राहत (सब के ऊपर १ अङ्क और बढ़ा दो)
५८०	१०	काक शास्त्र	कोक शास्त्र
५८९	१०	पौद पौदे	पौदे पौदे
५९०	११	३८ ज़र्द	३८ ज़र्द

प्रस्तावना

अर्थात

स्वामी रामतीर्थजी का संक्षिप्त जीवन चरित्र.

इस भजन पुस्तक में स्वामी राम तीर्थजी महाराज की अन्दरूनी ज़िन्दगी अर्थात आन्तरिक मानासिक अवस्था तो उन के मस्ती भरे भजनों से फूट २ कर स्वतः प्रकट हो रही है परन्तु उन की शारीरिक ज़िन्दगी अर्थात बाह्य जीवन चरित्र का इन (भजनों) से कुछ पता नहीं मिलता और न यह स्पष्ट होता है कि स्वामी जी को यह अंतिम दशा अर्थात निजानन्द का अनुभव किन २ अवस्थाओ के बीच में गुज़र कर अथवा किन २ उपायों से प्राप्त हुई ॥ इस त्रुटि को पूरा करने के अर्थ उचित समझा गया कि इस प्रस्ताव में स्वामी जी का संक्षेप से जीवन चरित भी दीया जाय जिस से राम वर्षा के पाठक कुछ शिक्षा ग्रहण कर के लाभ उठा सकें ॥

विक्रमीय संवत १९३०, कार्त्तिक शुक्ल १, बुधवार, तदनुसार

२२ अक्तूबर सन् १८७३ ईसवी को स्वामी जी के शरीर का जन्म पञ्जाब देश, ज़िला कुजराँ वाले के मुराली वाले ग्राम में एक उत्तम गोस्वामी कुल में हुआ था। यह वही कुल है जिस में गोस्वामी तुलसीदासजी रामायण के कर्त्ता उत्पन्न हुए थे। स्वामी रामजी उन्हीं के वंशज थे। यह कुल पहले से ही अपनी प्राचीन पवित्रता के लिये प्रसिद्ध था मगर अब स्वामी राम तीर्थ जी ने इस में जन्म लेकर इस की प्रतिष्ठा और भी बढ़ा दी॥

स्वामी जी के पूज्य पिता का नाम गोस्वामी हीरानन्द जी था। स्वभाव से यह बहुत सरल सीधे सादे और क्रूर थे। स्वामी जी के जन्म लेने के थोड़े ही दिन पश्चात् उन की परम सुशीला माता का देहान्त होगया। तदनन्तर उन के पिता की प्रेम भरी बहिन अर्थात स्वामी जी की बुआ ने उन का पालन पोषण कीया॥ उत्पत्ति काल में माता का दुग्ध न पाने के कारण स्वामी जी बाल्यावस्था में बहुत दुर्बल और कृश शरीर थे, परन्तु पीछे से यही शारीरक शक्ति हीन बालक तीर्थराम जी जिस भान्ति आत्मिक बल में

प्रबल होगये उसी प्रकार शारीरक स्वास्थ्य और पुष्टता में भी इतनी उन्नति कर गये कि तीस (३०) मील दिन भर में पर्वतों पर चलना उन के लिये बालकों का सा खेल होगया ॥ और हिमालय तथा अन्य शीतल स्थानों में बिलकुल नग्न या केवल एक वस्त्र से रहना किञ्चिद् मात्र भी उन्हें कष्ट न देसका ॥

स्वामी जी की बुवा (अर्थात उन के पिता की बहिन) बड़ी धार्मिक वृत्ति रखती थीं, और नित्य प्रति मन्दिरों, शिवालों और कथा स्थानों में जाया करती थीं ॥ जब जब उत्तम स्थानों में जातीं बालक तीर्थ राम जी को भी अपने साथ ले जाया करतीं ॥ बुवा जी के प्रेम भरे व धार्मिक सुभाव ने बालक तीर्थ राम जी के चित्त पर ऐसा उत्तम असर डाला कि वह अपनी बाल्यावस्था में ही उदार चित्त होगये, और नित्य मन्दिरों तथा कथा स्थानों में जाने से ईश्वर भजन और धर्म्म में लीन तथा युक्त होने लग पड़े। इतनी छोटी सी आयु में ही तीर्थ राम जी को शङ्ख ध्वनि अथवा प्रणव ध्वनि मोहने अर्थात आकर्षण करने लग पड़ी ॥ एक समय स्वामी जी ने अपने

मुखारविन्द से स्वयं यह वर्णन कीया कि:—" बाल्यावस्था में ही राम के चित्त को प्रणव या शंख की ध्वनि अपनी ओर बलपूर्वक खैंच लिया करती थी, वरन् यहां तक अपना असर डालती कि अगर राम रो भी रहा हो तो झट उस के सुनने से चुप होजाया करता था " ॥

अपने एक अङ्ग्रेजी भाषा के व्याख्यान में स्वामी जी ने अपने विषय में इस प्रकार वर्णन किया है कि:—" ताथ राम के दादा जी ज्योतिःशास्त्र में बड़े निपुण थे, जब राम (बालक तीर्थराम) का जन्म हुवा तो वह जन्म लग्न देखते ही रोये और हंसे ॥ जब इस हंसने और रोने का कारण पूछा गया, तो कहने लगे कि 'रोये हम इसलिये है कि यह बालक ऐसी घड़ी उत्पन्न हुवा है कि या तो यह स्वयं नहीं रहेगा और या अपनी माता पर भारी होने के कारण अपनी परम सुशीला जननी को हाथ से जल्द खो देगा । और हंसे हम इसलिये हैं कि यदि यह बालक जीता रहा तो ऐसा महात्मा और उपकारी होगा कि हमारे सारे कुल को तारेगा औ इस की

अपनी कीर्ति भी देश, देशांतर तथा लोक, परलोक में तीव्र वेग से फैलेगी' ॥ ईश्वर की कुछ ऐसी ही इच्छा थी, या भारत वर्ष के कुछ भाग्य ही ऐसे थे कि राम की परम सुशीला माता तो एक, दो मास के भीतर ही भीतर परलोक सुधार गयीं और स्वयं राम अकेला रह गया। कुछ काल तक तो राम गाये के दूध (दुग्ध) से पला, और कुछ समय तक बुवा ने अपनी प्रेम भरी गोद में रख कर इस का पालण पोषण कीया ॥"

इस स्थान पर स्वामी जी का जन्म पत्र भी दिया जाता है, ताकि पाठकों को विदित होजाये कि स्वामी जी के पूर्व जन्म के संस्कार भी कैसे उत्तम और प्रबल थे कि जो बाल्यावस्था में ही अपना रंग दिखाने और जमाने लग पड़े ॥

विक्रमीय संवत् १९३०, शाके १७९५, कार्त्तिक शुक्ल १, प्रविष्टे ८, बुधवार २९। १९ स्वाति नक्षत्र मीन लग्न, तदनुसार सन १८७३ ईसवी, तारीख २२ अक्तूबर की शुभ घड़ी में गुसाईं राम लालजी के लड़के गुसांईं हीरानन्दजी के घर में बालक (तीर्थ राम)

का जन्म हुआ जिस का जन्म नाम स्वाति नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण ताराचंद रक्खा गया था ॥

मेष १ राहु	५ सिंह	९ धन्य मंगल
२ वृष	६ कन्या शुक, बृहस्पति	१० मकर शनि
३ मिथुन	७ तुला सूर्य, चन्द्रमा, बुध, केतु	११ कुम्भ
४ कर्क	८ वृश्चक	१२ मीन

(नोट) यह जन्म पत्र ज्योतिःशास्त्र के एक पूर्ण वेत्ता (पं० लाभ चन्द जी) को दिखलाया गया। उन्हों ने निम्न लिखित दश (१०) फल वर्णन कीये:—

(१) अति विद्वान हो।

(२) २१, या २२ वर्ष की आयु में परमार्थ का अधिक विचार हो।

(३) इष्ट अद्भूत हो, जैसे ओङ्कार।

(४) विलायत (देशान्तर) भी जावे।

(५) राज दरबार का चमत्कार होकर रहे नहीं।

(६) शरीर रोग ग्रस्त रहे या किसी अङ्ग में न्यूनता (नुक़्स) हो।

(७) पिछली अवस्थामें काम (विषय वृत्ति) नितान्त नष्ट हो, अर्थात काम रहित हो जावे।

(८) दो पुत्र अवश्य होने चाहियें।

(९) अल्प आयु हो, अर्थात २८ से ३५ वर्ष तक।

(१०) यदि ब्राह्मण हो तो मृत्यु जल में, और यदि क्षत्री हो तो मकान से गिर कर॥

मुराली वाले ग्राम में (जो स्वामी जी की जन्म भूमि है) एक प्राइमरी स्कूल बहुत दिनों से स्थापित था। तीर्थ राम जी बहुत ही छोटी अवस्थामें इस पाठशाला में प्रविष्ट हुए। शरीर के छोटे और पढ़ने तथा स्मरण शक्ति में अधिक चतुर देख कर पाठशाला (उस स्कूल) के बड़े अध्यापक (मौलवी महम्मददीन जी) इन पर बड़े प्रसन्न

रहते थे। स्कूल की पुस्तकों के अतिरिक्त तीर्थ राम जी ने प्राइमरी में ही गुलिस्तान् और बोस्तान् फारसी ज़ुबान् में कण्ठाग्र करलीं। प्राइमरी स्कूल की परिक्षा पास करने के पश्चात् तीर्थ राम जी आगे पढ़ने के लिये अपने पिता जी के साथ कुजरां वाले नगर में गये। यह नगर मुराली वाला ग्राम से लग भग दश (१०) मील की दूरी पर है ॥ यहां आकर तीर्थराम जी मिडल हाई स्कूल में प्रविष्ट हुए। इस समय इन की आयु लगभग दश वर्ष के थी ॥ इतनी छोटी अवस्था में बालक को विना किसी संरक्षक के अकेला छोड़ना पिता जी से उचित न समझा गया, इसलिये पिता जी अपने एक परिचित मित्र भगत धन्ना राम जी के निरीक्षण (निगहबानी) में, उन के समीप एक छोटे से मकान में उन्हें आगे पढ़ने के लिये छोड़ आये ॥

यह धन्ना भगत जी, उस नगर में बड़े सज्जन पुरुष और धर्मात्मा माने जाते थे। नित्य प्रति उन दिनों योग वासिष्ठ की कथा किया करते थे। कथा ऐसे उदार चित्त और प्रेम में रते हुए हृदय से होती था कि सब श्रोतागण समाधिस्थ हो जाया करते थे ॥

पढ़ने से कुछ समय निकाल कर तीर्थ राम जी भी उस कथा को दत्त चित्त हो सुना करते थे ॥ स्कूल की पढ़ाइ से आतिरिक्त जो भी समय मिलता, उसे तीर्थ राम जी उन्हीं महापुरुष के सत्संग में व्यतीत करदेते थे ॥ भगत जी की प्रेम भरी और सुरीली कथा, उन की नित्य संङ्गति और उपदेशों ने बालक तीर्थ राम जी के चित्त पर कुछ ऐसा प्रभाव डाला कि कुछ समय के लिये वह सारे के सारे भगत जी के हो लिये। और तन, मन, धन से उन की सेवा प्रेम पूर्वक करने लगे ॥ वह अपने हृदय में भगत जी की यहां तक प्रतिष्ठा करते थे कि कोइ भी अपना काम विना उन की आज्ञा के कदाचित न करते ॥ भगत जी भी तीर्थ राम जी की श्रद्धा भक्ति और सेवा से इतने प्रसन्न रहते थे कि वह उन्हें अपना ही अङ्ग तथा रूप मानते और उन से अत्यन्त स्नेह करते थे ॥

साथ इस धार्मिक उन्नति के तीर्थ राम जी अपनी पढ़ाई (अध्ययन) में भी बड़े चतुर और अद्वितीय रहते थे। स्कूल की सब श्रेणियो में सर्वदा प्रथम ही रहे। मिडिल और इन्स्ट्रैन्स की परीक्षा

में सारे पञ्जाब भर में प्रथम (अव्वल) रहे थे। इन्ट्रैन्स कक्षा (जमाअत) के पास करने के पीछे तीर्थ राम जी के पिता उन्हें आगे पढ़ाना नहीं चाहते थे, अतः प्रति दिन उन को किसी दफतर में नौकरी करने के लिये विवश (मजबूर) करने लगे॥ तीर्थ राम जी इस छोटी (१९ वर्ष की) आयु में इतनी जल्दी किसी दफतर की नौकरी करने में अपनी वास्तविक उन्नति न देखते थे, इसलिये इस विषय में अपने पिता जी की एक न मानी॥ इस पर पिताजी बड़े क्रोध को प्राप्त हुए, और १९ वर्ष के युवक तीर्थ राम जी को घर से बाहर निकाल दीया, और आगे पढ़ाने के लिये एक कौड़ी भी न देने का सङ्कल्प कर लिया॥ इस तरह से असहाय (बेमदद) तीर्थ राम जी, केवल ईश्वर पर निश्चय और आश्रय (भरोसा) रखते हुए, शान्त चित्त से घर से निकलकर, आगे पढ़ाई आरम्भ करने के अर्थ लाहौर नगर में आ गये॥

तमाम पञ्जाब में इन्ट्रैन्स की परीक्षा में तो प्रथम रहे ही थे इस लिये अपनी श्रेणी के सब विद्यार्थियों से अधिक छात्र वेतन

(वज़ीफा) इन के भाग में आया हुवा था, इस वृत्ति (वज़ीफे) की सहायतासे युवक तीर्थ राम जी लाहौर के 'फोरमैन क्रिश्चियन' (मिशन) कालज में भरती हो गये। और ऐफ, ए, कक्षा की पढ़ाई पढ़ने लगे ॥ शारीरक निर्वाहर्थ एक, दो प्राइवेट ट्यूशन (अध्यापक्ता का काम) भी कर लिये ताकि पढ़ने में कुछ विक्षेप न आ पड़े ॥

अपनी ऐसी दशा में भी तीर्थ राम जी ऐफ, ए की परीक्षा में प्रथम रहे, और अब पहिले से भी अधिक छात्र वृत्ति (वज़ीफा) पाने लगे ॥ इस वृत्ति की सहायता से फिर आगे बी, ए की कक्षा में पढ़ने लगे ॥ इस समय के लगभग तीर्थ राम जी के पिताजी क्रोध में आकर उन की अर्धङ्गी को भी उन के पास सौंप गये और उस के पालण पोषण का कुल ज़िम्मा तथा अधिकार उन के ऊपर ही छोड़ गये थे जिस से अब खर्च पहिले से भी विशेष बढ़ गया। अब केवल वृत्ति (वज़ीफे) से निर्वाह होना अति कठिन था, इस लीये राय बहादुर लाला मेला राम (लाहौर के रईस) के दोनो सुशील पुत्रों के पढाने की डियोटियां लेलीं। इन दिनों एसी अवस्था

के प्राप्त होने पर भी तीर्थ राम जी के चित्त की जो दशा तथा वृत्ति रहती थी वह उन के पत्रों से, जो उन्हों ने उन दिनों अपने पूजनीय भगत धन्ना राम जी के पास भेजे थे, स्पष्ट प्रकट हो रही है। दृष्टान्त के तौर पर एक या दो पत्रों का यहां उल्लेख कीया जाता है :—

९ फरवरी सन् १८९४ (११ बजे रात्रि)

भगवन्,

आप का एक कृपा पत्र इस समय और मिला ! निहायत खुशी हुई ! मैं आज कल पांच बजे सवेरे सो कर उठता हूं और सात बजे तक पढ़ता रहता हूं, फिर शौच आदि से निवृत्त होकर स्नान करता हूं, और व्यायाम (कसरत) करता हूं। उस के बाद पंडित जी की तर्फ जाता हूं ! रास्ते में पढ़ता रहता हूं। वहां एक घंटे के बाद रोटी खा कर उन के साथ गाड़ी में कालिज से डेरे आते समय रास्ते में दूध पीता हूं। डेरे पर कुछ मिनट ठैहर कर नदी की ओर जाता हूं। वहां जाकर नदी किनारे पर कोई आध घंटे के

लगभग टहलता रहता हूं, वहां से वापस आती बार सारे शहर के गिर्द बाग़ में फिरता हूं। वहां से डेरे आन कर कोठे पर टहलता रहता हूं! इतने में अन्धेरा होजाता है। (मगर यह याद रहे कि मैं चलते फिरते पढ़ता बराबर रहता हूं), अन्धेरा होते कसरत करता हूं और लैम्प जला कर सात बजे तक पढ़ता हूं। फिर रोटी खाने जाता हूं और प्रेम तर्फ भी जाता हूं। वहां से आन कर कोई १० या १२ मिनट अपने मकान में कसरत करता हूं। फिर कोई १०॥ (साढें दस) बजे तक पढ़ता हूं। मेरे तजरबे में यह आया है कि अगर हमारा मेदा ऐन सिहत की हालत में रहे तो हमें कमाल दर्जे का सरूर (आनन्द) फरहत (सुख) दिल का यकसू होना (चितकि एकाग्रता) परमेश्वर की याद और पाक बातनी (अन्तःकरण की पवित्रता) हासिल होती है। और बुद्धि: और धारणा शक्ति निहायत तेज़ होती है! अव्वल तो मैं खाता ही बहुत कम हूं, दोयम जो खाता हूं खूब पचा लेता हूं॥

राम

दूसरा पत्र,

९ जुलाई सन् १८९४।

महाराज जी। परमेश्वर बड़ा ही चंगा है। मुझे बड़ा ही प्यारा लगता है। आप उस के साथ सुलह (मेल) रक्खा करो। आप के साथ जो कभी २ ज़रा सख़्ती से पेश आता है यह उस के विलास हैं। वह आप के साथ हंसी मखौल करना चाहता है। हमें चाहिये कि हंसने वालों से खफा न हो जायें। किसी और खत (पत्र) में मैं आप की खिदमत में उस की कई बातें .अर्ज़ करूंगा। यह खत मैं मेज़ पर रख कर लिख रहा हूं। यहां सुबुह थोड़ी सी खांड गिर पड़ी थी। उस खांड के पास चार पांच कीड़ियां इकठी हो रही हैं और वह सब मेरी क़लम की तर्फ़ और हर्फ़ों की तर्फ़ तक रही हैं। और आपस में बड़ी बाते कर रही हैं॥ जितनी बात चीत मैं ने उन से सुनी है वह .अर्ज़ करता हूं। मगर पैहले मैं यह .अर्ज़ करना चाहता हूं कि गो मेरा खत (लिखना) बहुत ही खराब और नाक़िस है मगर उन कीड़ियों की निगाह में तो चीन के

नक़शो निगार से कम नहीं ॥ जो कीड़ी सब से पैहले बोली वह बड़ी अज्ञान थी। अभी वह नन्हीं (बहुत छोटी) ही थी। पेहिली कीड़ी कहती है :—देख बैहिन! इस क़लम की कारीगरी! कागज़ पर क्या गोल २ घेरे डाल रही है। इस डाली हुइ लकीरों यानी हरफों को सब लोग बड़ी प्रीति से अपनी आंखों के पास रखते हैं (यानी पढते हैं)। और जिस काग़ज़ पर क़लम निशानियां करे (यानी लिख दे है) उस काग़ज़ को लोग हाथों में लिये फिरते हैं। (यह क़लम) काग़ज़ पर गोया मोती डाल रही है। क्या रंगामेज़ियां हैं?। यानी बाज़े २ हरफ तो ख़ास हमारे बेटों (यानी कीड़ीयां) की तसवीरों की तरह मालूम होते हैं। क्या ही ख़ूबसूरत हैं।

क़लम गोयद कि मन शाहे जहानम्।
क़लमकश रा बदौलत मी रसानम ॥

(अर्थ :—क़लम कहती है कि मैं जहान की बादशाह हूं और क़लम के चलाने वाले को दौलत तक पहुंचा देती हूं ॥)

इस कलम में जान नहीं है, मगर हमारे जैसे जानदारों को चौसियों दफ़ा पैदा कर सक्ती है"। इतना कह कर पैहिली कीड़ी खामोश (चुप) होगयी॥ अब दूसरी बोली। यह कीड़ी पहिले से कुछ बड़ी थी और उस में ज़ियादह बसारत (दृष्टि) रखती थी, यानी उस की आंखें तेज़ थीं॥ दूसरी कीडी:—"मेरी भोली बैहिन! तू देखती नहीं है कि कलम तो बिलकुल मुर्दा: चीज़ है। वह तो बिलकुल कुछ काम नहीं कर सक्ती। दो उंगलियां उसे चला रही हैं। जितनी तारीफ़ तू ने की है यह सब उंगलियों पर आयद होनी चाहिये"॥ इस पर इन दोनों से बडी कीड़ी बोली:— "यह तुम दोनो अभी नहीं जानतीं कि उंगलियां तो पतली २ रस्सियों की तरह हैं। वह क्या कर सक्ती हैं। वह मोटी बांह इन सब से काम ले रही है"॥ अब इन कीड़ीयों की मां बोली:—यह सब कलम, उंगलियां, बांह, बाज़ू, वगैरा: इस बड़े मोटे धड के आश्रय से काम कर रहे हैं। यह सब तारीफ इस धड को मौजूं है"॥ इतना कह कर कीड़ीयां जब चुप हुई तो मैं ने इन से यह कहा:—

" ऐ मेरे दूसरे स्वरूपों ! यह धड़ भी जड़ रूप है। इस को भी एक और चीज़ का आश्रय है, यानी जान (प्राण) का। इस लिये तारीफ उस जान की शान में वाजिब है" ॥ मैं ने इतना कहा, तो मेरे दिल में आप की तर्फ से आवाज़ आई। वे आप के वचन भी मैं ने उन कीड़ियों को सुनाये ॥ उन का खुलासा दर्ज करता हूं। "आदमी की जान से परे भी एक वस्तु है, अर्थात परमात्मा। उस वस्तु के आश्रय सब भूत चेष्टा करते हैं, दुन्या में जो कुछ होता है उसी की मरज़ी से होता है। पुतलियां बग़ैर तार वाले के नहीं नाच सक्तीं। बांसुरी बग़ैर बजाने वाले के नहीं बज सक्ती। इसी तरह से दुन्या के लोग बग़ैर उस के हुक्म के कोई काम नहीं कर सक्ते ॥ जैसे तल्वार का काम गो मारना है मगर वह तल्वार बग़ैर चलाने वाले के नहीं चलसक्ती। इसी तरह से गो बाज़ लोगों के स्वभाव बहुत ही खराब क्यों न हों जब तक उन्हें परमेश्वर न उकसाये वह हमें तकलीफ़ नहीं पहुंचा सक्ते ॥ जैसे बादशाह के साथ सुलह करने से तमाम अमला हमारा दोस्त बन जाता है, इसी तरह से परमात्मा को राज़ी रखने से तमाम खल्क़

हमारी अपनी होजाती है" ॥ (फक्त)=राम

इन्हीं दिनों में युवक तीर्थरामजी बी. ए. में पढ़ते थे। अपनी श्रेणि (जमाऽत) में सर्वदा प्रथम रहते थे॥ सहपाठी (अपनी श्रेणि के लड़के) इन को गोस्वामी तीर्थ रामजी करके प्रतिष्ठा से पुकारा करते थे। थोड़े काल पश्चात् विशेष मेल मिलाप के कारण इन के मित्र इन्हें गोस्वामी तीर्थ राम के स्थान पर केवल गुसाईं जी करके पुकारने लगे॥ इस से इन का नाम गुसाईं जी ही पड़ गया॥ इस समय तक तीर्थ रामजी संस्कृत भाषा से नितान्त अपरिचित थे, केवल थोड़ी हिन्दी जानते थे। मगर फारसी ज़ुबान में अति निपुण थे, इसलिये कालेज के मौलवी साहिब इन पर सर्वदा अति प्रसन्न रहते और इन की स्तुति में घंटों व्यतीत कर देते थे॥ मौलवी जी (फारसी भाषा के प्रोफैसर जी) की यह नित्य स्तुति और तीर्थ राम जी की फारसी की योग्यता (जो कालेज में अति प्रसिद्ध अर्थात मशहूर हो रही थी) कालेज के कुछ लड़कों को जो कि संस्कृत भाषामें निपुण और संस्कृत की उन्नति के बड़े इच्छुक

(ख्वाहा) थे, बड़ा दुःख दिया करती थी ॥ उन में से कुछ एक प्यारों से तो, एक समय बिलकुल रहा न गया और वह तीर्थ राम जी के पास आकर यूं कटाक्षों और बोली तानों से बातें करने लगे:- "देखीये! आप हो तो ब्राह्मण और गोस्वामी (यानी श्री तुलसी दास जी के वंश से उत्पन्न हुए २) परन्तु कितने खेद की बात है कि आप अपनी कुल की असली भाषा (संस्कृत) से तो हीन और बेखबर हो और यवन भाषामें दिन रात यत्न करते और नाम पा रहे हो। क्या ब्राह्मण के वास्ते यह मरण तुल्य नहीं कि वह यवन भाषा में तो चतुर हो और अपनी असली मात्रि भाषा का कुछ ज्ञान न रखता हो?। अगर उत्तम कुल ब्राह्मणों में भी केवल यवन भाषा (फारसी) का प्रचार और संस्कृत भाषा का अभाव होने लग पड़ेगा, तो ब्राह्मण कुल का नाश जल्द होने लग जायगा। और अपने कुल नाशक आप जैसे ही ब्राह्मण होंगे, जो संस्कृत भाषा के सीखने में तो कुछ समय और चित्त न दें और सारी जिन्दगी और बल केवल यवन भाषा के ही सिखने में लगावें" ॥ इस प्रकार के सखत कटाक्षों और अपने मित्र प्यारों की बोली तानों ने तीर्थ

राम जी के दिल को अत्यन्त ज़खमी (घायल) कर दीया । और घायल हुआ दिल अपने ज़खमों को धोने और मिटाने की खातर तीर्थ राम जी से अपने मित्रों के साह्मने यूं प्रणय कराने लगा:—"कि: अच्छा मैं ब्राह्मण का पुत्र नहीं हूंगा यदि मैं फारसी भाषा को बी. ए. की परिक्षामें लूं, और यदि इसी श्रेणीमें कल से ही संस्कृत सीखने न लग पड़ूं ॥ पस कल से तीर्थराम संस्कृत भाषा का ही अध्ययन आरम्भ कर देगा और इस साल बी. ए. की परिक्षा में फारसी के स्थान पर संस्कृत ही दूसरी भाषा (Second Language) लेगा" ॥ यह प्रणय कीया जाना ही था कि दूसरे दिन गोस्वामी तीर्थ राम जी ने फारसी भाषा को छोड़ने की .अर्ज़ी और संस्कृत भाषा की श्रेणी (फरीक़) में दाखल होने की दरख्वास्त झट अपने कालेज के परिन्सिपल साहिब के पास भेज दी ॥ यह खबर सुनते ही कालेज में एक कुलाहल (बड़ा शोर) सा मच गया, और खासकर फारसी भाषा के प्रोफेसर साहिब (मौलवीजी) के चित्त पर बड़ी सखत चोट वज्रवत पड़ी । मौलवी साहिब ने तीर्थ राम जी को इस चेष्टा से मुड़ने के लिये बहुत समझाया बुझाया, परन्तु उन्हों ने मौलवी साहिब की

एक न सुनी। अपनी ज़िद पर स्थायी (क़ायम) रहे ॥ तीर्थ राम जी तो संस्कृत पढ़ने की ओर झुके, पर संस्कृत की श्रेणी में पंडित जी महाराज उन्हें प्रविष्ट करने को तय्यार न हुए ॥ पंडितजी ने तो उलटा परिन्सिपल साहिब के पास जाकर यह शकायत की:— "कि इस लड़के (तीर्थ राम) ने अभी तक अक्षर भी संस्कृत व्याकरण का नहीं पढ़ा है, और शुरु से आज तक फारसी भाषा ही पढ़ता आया है, भला ऐसे संस्कृत से बिलकुल न खबर रखने वाले विद्यार्थी को मैं अपने हाँ कैसे प्रवेश (दाखल) कर लूं, और न ऐसा संस्कृत भाषा से हीन विद्यार्थी बी. ए. की संस्कृत श्रेणीमें प्रविष्ट किया जाना चाहिये। इस से तो अन्त में मेरी बहुत अपकीर्ति (बदनामी) होगी" एसा सुनने पर परिन्सिपल साहिब ने अपनी कोई राये प्रकट न की और पंडित जी महाराजा के ऊपर ही इस मुआमले का फैसला छोड़ दीया ॥

पंडित जी के ऐसे तकरार और फैसलों से तीर्थ राम जी एक बड़े उलझन में फंस गये। इधर से तो पंडित जी अपनी संस्कृत श्रेणी (जमाऽत) में उन को प्रविष्ट होने न दें, और उधर अपने

प्रणय के कारण अपनी पैहली फारसी भाषा की श्रेणी में जाने को तीर्थ राम जी का दिल तय्यार न हो, और वहां जाते भी वह शरमावें ॥ इस प्रकार एक दो सप्ताहा तक तो तीर्थ राम जी न फारसी की श्रेणी में जा सके और न संस्कृत श्रेणी में ही प्रविष्ट हो सके। अपने उन्ही मित्रों से, कि जिन्हों ने संस्कृत पढ़ने के लिये उकसाया था, उनसे घर पर खूब मन चित्त से संस्कृत पढ़ने लगे॥ इस संस्कृत अध्ययन में तो कुछ दिन तक तीर्थरामजी अपना सारा समय खर्च करने लगे। और अपने मित्रों से संस्कृत का बी. ए. कोर्स (रघुवंश) और अन्य छोटी व्याकरण की पुस्तकें पढ़ कर दत्त चित्त से याद करने लगे ॥ थोड़े समय पश्चात जब तीर्थरामजी ने रघुवंश का कुछ भाग कण्ठस्थ कर लिया और संस्कृत के प्रोफैस्सर साहिब को जा कर अपने आप सुनाया, तो पंडित जी अति विस्मित और आश्चर्यमय होगये, और कहने लगे—"कि हमें नितान्त (बिलकुल) पता नहीं था कि तुम इस क़दर स्मरण शक्ति वाले (ज़हीन) हो, जो थोड़े ही दिनों में रघुवंश को उतना याद कर के ले आये कि जितना विद्यार्थियों ने अपनी बी. ए. की श्रेणी में आज तक कोई

मास के भीतर पढ़ा है। शाबाश !, आज ही मैं परिन्सिपल साहिब को आप की विद्वत्ता (काबलीयत) की स्तुति (तारीफ) करता हूं और अपनी भूल दर्शा कर आप को संस्कृत श्रेणि में प्रवेश करने की आज्ञा ले आता हूं" इस तरह से कुछ समय पीछे तीर्थ राम जी का नाम संस्कृत श्रेणिमें दर्ज होगया और वह बड़ी लग्न से संस्कृत को पढ़ने लगे। वरन अन्य भाषाओं की निस्बत अपना बहुत सा समय उन्हों ने केवल इसी (नवीन भाषा) के अध्ययन में अर्पण करना आरम्भ किया ॥

उस साल बी-ए-की परीक्षा बहुत ही कठिन हुई थी। विशेष करके अंग्रेज़ी का परचा इतना कठिन था कि सैंकड़ों उत्तम २ विद्यार्थी परीक्षा पास न कर सके ॥ तीर्थ राम जी को अपना प्रण निभाने के अर्थ बहुत सा समय केवल संस्कृत भाषा की तय्यारी में खर्च करना पड़ाथा जिस से अन्य भाषाओं (विषयों) में शायद पूरी २ तय्यारी न होसकी। इसलिये वह भी इस समय केवल चार नम्बरों की खातर शायद अङ्ग्रेज़ी में रह गये ॥

पंजाब विश्व विद्यालय (यूनिवर्सिटी) के कुछ मैम्बरों ने जब

तीर्थ राम जी के सब परचों के नम्बरों को जोड़ करके देखा, तो बड़े आश्चर्य होकर कहने लगे कि "अगर इस विद्यार्थी को अंग्रेजी के परचे में केवल चार नम्बर और मिल जाते तो यह फिर पंजाब भर में प्रथम रहता" ॥ परीक्षा पास न होने का दुःख तो तीर्थ राम जी को हो ही रहा था, परन्तु इस खबर के सुनते ही उन के दिल पर और सखत चोट लगी। जिस किसी अन्य ने भी यह सुना, वह भी अति दुःख को प्राप्त हुवा ॥

जब विश्व विद्यालय (यूनीवर्सटी) के चन्द पुरुषों के दिल पर तीर्थ राम जी जैसे चतुर और कुल परीक्षा के परचों में सब से अधिक नम्बर रखने वाले विद्यार्थी के फ़ेल होने से सखत चोट लगी तो उन सब ने अकट्ठे मिलकर भविष्यत काल के लिये यह नियम यूनीवर्स्टी से पास करा दीया कि "जिस किसी विद्यार्थी के किसी परचे में नियत नम्बरों से पांच नम्बर घट हों अथवा कुल परचों के नम्बरों के जोड़ (aggregate) में पांच नम्बर कम हों, तो वह विद्यार्थी झट फ़ेल न कीया जाये। बलकि: उसे दुबारा विचार के लिये (Under consideration अंडर कन्सिडरेशन) रक्खा जाये।"

ऐसा नियम पास होजाने से भविष्य काल के लिये तो विद्यार्थियों को कुछ सुगमता होगयी, परन्तु वर्तमान काल के लिये कोई नियम ऐसा मुकर्रर होने न पाया कि जिस से थोड़े नम्बरों से फ़ेल हुए २ विद्यार्थी अभी ही पास कीये जा सकें। इस तरह से तीर्थ राम जी को उसी श्रेणि (बी-ए) में रहना पड़ा और अपने छात्र वेतन (वज़ीफे) से भी रहित होना पड़ा ॥ उस समय में जो कुछ उन के दिल में गुज़रता होगा उस का अन्दाज़ा पाठक अपने दिल में खुद लगा सक्ते हैं या तीर्थ राम जी ही स्वयं पूर्ण रीति से बता सक्ते हैं। लेखक की लेखनी तो भला कैसे पूरा २ दर्शा सक्ती हैं॥ परन्तु जो कुछ इस विषय में स्वामीजीने अपने मुखार्विन्द से अपनी संन्यास अवस्था में लेखक को वर्णन कीया था वह पाठकों के लिये नीचे दर्ज कीया जाता है :—

"बी-ए फ़ेल होने की खबर जब राम को मिली तो दिल पर वज्र वत चोट लगी। मानो कि अभी दिल टूटा कि टूटा। आंसूवों का तार बन्ध गया (अश्रूपात तीव्र वेग से होनेलगे), मानो शोक का एक पहाड़ टूट पड़ा॥ पिता जी तो पहले ही से एक कौड़ी की

मदद नहीं देते थे। सहायता तो क्या, उलटा राम की अर्धङ्गी (बीबी) को राम के पास (छोटी अवस्था में ही) लाहौर सौंप गये थे, जिस से ऐफ-ए श्रेणि में ही गृहस्थ का बोझ राम पर डाल दीया गया था, सिर्फ मासिक छात्र वेतन से यह सब बोझ सहारा जा रहा था, पर जब बी-ए फेल होजाने से छात्र वेतन (वज़ीफा) सरकारि) भी बन्द होगया, किसी प्रकार की सहायता बाहर से आती दीख न पड़ी, तो उस समय चित्त भी धैर्य को छोड़ने लग पड़ा॥ ऐसी व्याकुल अवस्था में चित्त को अगर कोई ठौर शान्ति दायक मिलती थी तो वह निज स्वरूप का ध्यान तथा प्यारे कृष्ण का प्रेम भरा स्मरण था। उस समय अन्तः हृदय (हृदय की तैः) से वडे ज़ोर से अश्रुवों के साथ यह श्लोक लगातार निकलते रहतेथे :—

"त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्व्वं मम देव देव"

प्रति दिन ईश्वर से यह प्रणय राम लिख कर करता थाकि "वस

"प्रभो! अब राम तुम्हारा और तुम राम के होलिये। राम का काम तो नित्य आप का स्मरण और आप की मर्ज़ी पर राज़ी रहना होगा और आप का काम अब राम की सर्व प्रकार की सहायता करना होगा॥ राम का शरीर उस का अपना नहीं रहा, बलकि सारा का सारा आप का होगया, होगया, होगया!!! अब चाहे रक्खो और चाहे मारो।"

"कुंदन के हम डले हैं जब चाहे तू गला ले
बावर न होतो हम को ले आज आज़माले
जैसे तेरी खुशी हो सब नाच तू नचा ले
सब छान बीन करले हर तौर दिल जमाले
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा है।
यहां यूं भी वाह वा है और वूं भी वाह वा है॥
या दिल से अब खुश होकर कर हम को प्यार, प्यारे!
ख्वाह तेग़ खैंच, ज़ालम! टुकड़े उड़ा हमारे
जीता रक्खे तू हम को या तन से सिर उतारे
अब तो फक़ीर आशक़ कहते हैं यूं पुकारे

राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा है।
यहां यूं भी वाह वा है, और वूं भी वाह वा है॥"

इस प्रकार राम ईश्वर ध्यान में नित्य युक्त रहते, और उन कि चित्त वृत्ति एक दिन ऐसे युक्त हो ही रही थी कि झट एक पत्र उन के अपने मासड़, डाकटर रघुनाथ दास असिसटंट सर्जिन से निम्न लिखित शब्दों मे आया :—"ऐ बेटा तीर्थ राम! तुम घबराओ नहीं। धैर्य का आश्रय लो, अध्ययन को मत छोड़ो। कालेज में फिर दाखल होजाओ। २५) या २०) रूपये मासिक मैं खुद तुम्हारी सहायता के लिये भेजा करूंगा। एक या दो प्राईवेट डियोटियां भी ले लो, और आगे पढ़ने से हिम्मत व हौंसला मत छोड़ो॥" इस प्रकार अपने मौस व अन्य कई प्यारों की सहायता से तीर्थ राम जी ने पुनः बी–ए की तिय्यारी की, और इस समय सारे पंजाब भर में (परीक्षा में) प्रथम निकले, और आगे ऐम, ए, श्रेणि में पढ़ने के लिये बहुत बड़ी रकम का छात्र वेतन (वज़ीफ़ा) पाया॥

बी–ए, पास करने के पश्चात अपना नाम तो गुसाईं (तीर्थ

राम) जी ने गवर्नमेन्ट कालेज लाहौर में ऐम--ए पढ़ने के लिये दाखल करा लीया, और आप कुछ समय तक फोरमैन कालेज लाहौर में बी–ए श्रेणि को विना कुछ वेतन लिये गणित पढ़ाते रहे ॥ इस परोपकारं में युक्त होते हुए भी गुसांई जी ऐम–ए की गणित परीक्षा में प्रथम रहे । इस समय इन की आयुः २२ वर्ष के लगभग थी॥

ऐम–ए की परीक्षा में प्रथम निकलने के कुछ काल पीछे लाहौर नगर मे यह खबर उड़ी कि गुसाई तीर्थ राम जी पंजाब यूनिवर्स्टी की ओर से इस साल लंडन भेजे जायेंगे ॥ जब ऐसी खबर दूर २ तक फैल गयी, और लोगों ने गुसाईं जी से पूछा, कि आप बाहर देशों (विलायत) में जा कर क्या पठन पाठन करेंगे, तो उनहों ने हर एक को यही जवाब दीया कि (I shall either become teacher or preacher) " मैं वहां जाकर या तो उस्ताद (आचर्य) बनूंगा और या उपदेशक, मगर किसी तरह की अन्य नौकरी (सिविल सरविस इत्यादि) के लिये किञ्चित मात्र कोशश नहीं करूंगा " ॥ दैवयोग से गुसाईं जी को बाहर (विलायतों में) जाने का अवसर न मिला और उन का अपना हृदयस्थ ख्याल यहां

ही पूर्ण रीति से परिपूर्ण हो गया ॥ कुछ काल तक तो वह स्यालकोट में हाई स्कूल के हैडमास्टर रहे, तद पश्चात् गवरन्मैन्ट कालेज मे कुछ समय तक प्रोफैसर हुए। और अन्त में जब चित्त की धार्मिक अवस्था और उदारता इतनी बढ़ गयी कि छे घंटे तक बराबर व्यवहारिक काम में लगे रहना उन के लिये कुछ कठिन तथा दुभर हो गया, तो सिर्फ १ या दो घंटे तक गणित और वेदान्त पढ़ाने की खातर ओर्यन्टल कालेज की (नौकरी) प्रोफैसरी स्वीकार कर ली ॥ और जब दो घंटे तक भी व्यवहारिक कामों में दिल न लागने पाया, बल्कि चित्त कुल का कुल परमार्थ का हो लिया, तो जुलाई सन १९०० में यह प्रोफैसरी भी आखर को छोड़ दी गयी ॥

ऐम—ए पास करने के पश्चात् कुछ समय तक गुसांई तीर्थ राम जी कृष्ण भगवान के बड़े भक्त रहे ॥ यद्यपि वेदान्त शास्त्र में खूब प्रीति रखते थे, परन्तु दिल नित्य कृष्ण महाराज की अनन्य भक्ति में डूबा रहता था, इस लिये कृष्णगीता और कृष्ण लीला उन के दिल पर सब से अधिक चोट लगाया करती थीं ॥ जब कालिज में

तीन मास के लिये ग्रीष्म ऋतु में छुटियें (अनध्यायें) मिलतीं तो गुसाईं जी अपना सारा काल (रुखसतों का) मथुरा वृन्दाबन में रासलीला के देखने में काट देते। कृष्ण लीला तो विशेष करके उन के चित पर बहुत चुटिकियें भरा करती थी॥ इस तीव्र भक्ति का यह फल मिला, कि गुसाईं जी को समय २ पर कृष्ण महाराज के साक्षात दर्शन होते थे॥ गृहस्थाश्रम में एक समय गुसाईं जी ने लेखक को इस प्रकार वर्णन कीया कि "आज हमारे गोल्ड् यार अर्थात कृष्ण महाराज ने स्नान करते समय खूब दर्शन दीयें, और आपस में खूब मुटभीर हुई (अर्थात गलें लगा खूब घुट कर मिले), मगर मिलने के थोडे ही समय पीछे हाथ पर हाथ मार कर तिरोधान हो गये"॥ यह दशा गुसाईं जी पर बहुत वार आया करती थी। और वह भक्ति में ऐसे रते हुए थे कि अपना सर्वस्थ कृष्णार्पण कीया हुआ था। हर एक आशा और हर एक कार्य को कृष्ण महाराज की आज्ञा और इच्छा पर छोड़ रक्खा था॥

इस कृष्णभक्ति के ज़माने (काल) में गुसाईंजी लाहोर सनातन धर्म सभा के मन्त्री (सैक्रटरी) नियत हुए॥ उस समय सनातन

धर्म सभा के प्लैटफौर्म पर जब गुसाईं जी कृष्ण महाराज के विषय में व्याख्यान देते तो तीव्र वेगसे उन के अश्रूपात होजाते, कपड़े सब प्रेमांसुवों से भीग जाते, और अपनी भक्ति के जोर से सब श्रोतागणों के हृदयों में कूट २ कर कृष्ण भक्ति भर दीया करते थे ॥ यह लेखक का अपना अनुभव (तजरुबा) है कि अमृतसर नगरमें सनातन धर्म सभा के वार्षिक उत्सव पर जो असर श्रोतागण के चित्त पर गुसाईं तीर्थरामजी के भक्ति भरे उपदेशों ने डाला था वह अन्य वक्ता के उपदेशों से नहीं हुवा था। खासकर गुसाईंजी के कृष्ण-गीता और कृष्णलीला पर के व्याख्यानोसें जो असर विशेष कर के लेखक के हृदय पर पड़ा था वह तो अकथनीय है ॥ यद्यपि उन दिनों लेखक कृष्ण महाराज का आचरण प्रशंसनीय नहीं समझता था, और न उन की रासलीला से कुछ भी लग्न (रग़बत) रखता था, और न भगवद्गीतामें विशेष कर के श्रद्धा थी, तथापि गुसांईंजी के अति प्रेम भरे व्याख्यानों ने चित्त पर कुछ एसा जादूभरा असर डाला कि लेखक (नारायण) जैसा अश्रद्धालु भी कृष्ण गीता के पढ़ने और भगवान की कोई लीला के लक्ष्यार्थ समझनें में तत्पर हो गया ॥ इस तीव्र भक्ति के काल

में जो दशा गुसांई जी के चित्त की रहती थी वह उन के निम्न लिखित पत्र से जो उन्हों ने दीपमाला के दिन पिता जी को भेजा था स्पष्ट प्रकट हो रही है :—

लाहौर २८ अक्टूबर सन १८९७

महाराज जी,

चरण वन्दना ! नवाजिशनामा सामीशर्फ सिदूर लाया, अज़हद आनन्द हुवा। आप के लड़के तीर्थ राम का शरीर तो अब बिक गया, बिक गया। राम के आगे उस का अपना नहीं रहा। आज दिवाली को अपना शरीर हार दीया और महाराज (भगवान) को जीत लीया। आप को मुबारक (धन्यवाद)॥ अब जिस चीज़ की ज़रूरत हो मेरे मालिक से मांगो, वह फौरन खुद दे देंगे, या मुझ से भिजवा देंगे। मगर एक दफ़ा निश्चय के साथ आप उन से मांगो तो सही॥ उन्नीस बीस दिन के मेरे कुल काम बड़ी हुशियारी से अब वह खुद करने लग पड़े हैं। आप के क्यों न करेंगे ? घबराना ठीक नहीं। जैसी उन की आज्ञा होगी अमल होता जायेगा। महाराज (राम भगवान) ही हम गुसाइयों का धन हैं। अपने निज

के सच्चे धन को त्याग कर संसार की झूठी कौड़ियों के पीछे पड़ना हम को मुनासब नहीं। और उन कौड़ियों के न मिलने पर अफसोस करना तो बहुत ही बुरा है। अपने असली माल और दौलत का मजा एक दफ़ा ले तो देखो॥

इस आत्म समर्पण काल के लग भग द्वारका मठ के मठधारी अर्थात् द्वारकाधीश श्री १०८ स्वामी शंकराचार्य जी महाराज दैव योग से लाहौर में पधारे। आप ब्रह्म सूत्रों, उपनिषदों और वेदान्त के अन्य प्रकरण ग्रन्थों में अति निपुण थे। आप की विद्वत्ता और स्वरूप में निष्ठा अति प्रसिद्ध थीं। दिन के समय भी आप के संहासन के आगे दो ज्वाला (मिशालें) नित्य प्रति जला करती थीं॥ गुसाईं जी को उन दिनों सनातन धर्म सभा में मन्त्री होने के कारण सभा का बहुत सा काम स्वयं करना पड़ता था, इसलिये श्री १०८ स्वामी शङ्कराचार्य की भी सेवा का बहुत सा भाग स्वतः उन के हिस्से में आ गया। जिस को गुसाईं जी ने अति प्रसन्न चित से प्रेम पूर्वक निभाया॥ गुसाईं जी की अति प्रेम भरी सेवा से वह वृद्ध महात्मा (परम गुरु श्री शङ्करा चार्य जी महाराज) इतने प्रसन्न हुए

कि: गुसाईं जी को अपने साथ कुछ समय तक अपनी संगति में रखना उचित समझने लगे। बलकि: एक दिन हर्ष में आकर वह ऐसे कहने लगे " कि हम को इस सारे सफर (देशाटन) में गुसाईं तीर्थराम जी जैसा भक्त और ब्रह्म विद्या का जिज्ञासु अभी तक नहीं मिला। अगर यह कुछ काल हमारे साथ रहें तो हमें भी बड़ी खुशी हो और यह भी शायद शीघ्र अपने निजानन्द में रंगे जायें॥

यह खुशखबरी जब गुसाईं जी के कान तक पहुंची तो वह झट श्री १०८ स्वामी शङ्कराचार्य जी के साथ चलने को तय्यार होने लगे। कुछ छुट्टियां तो कालेज से पैहिले ही मिली हुई थीं कुछ और ले कर उन के साथ होलिये। और उन की कशमीर यात्रा में गुसाईं जी उन (परम गुरु) के मंत्री का काम करते रहे, और बड़े प्रेम भरे, प्रसन्न चित्त से सारे रास्ते भर उन की सेवा की इस सेवा और संगत का यह फल मिला कि गुसाईं जी ने परम गुरु शङ्कराचार्य से बड़ी उत्तमरीति से प्रेम पूर्वक ब्रह्म सूत्र और उपनिषदों के भाष्य पढ़े और सुने॥

यह पैहिले ही वर्णन होचुका है कि परम गुरु श्रीशङ्कराचार्य

जी ब्रह्म सूत्र, उपनिषदों और वेदान्त के अन्य ग्रन्थों में अति निपुण थे और सर्व शास्त्रों तथा संस्कृत भाषा के पूर्ण वेत्ता थे। बल्कि भारत वर्ष में यह प्रसिद्ध हो रहा था, कि: वह अपने काल के वेदान्त और संस्कृत में अद्वितीय महात्मा हैं। और यह भी दर्शाया जा चुका है कि गुसाईं तीर्थ राम जी प्रेम और श्रद्धा से भरे हुवे और धुले हुए चित्त वाले थे। इसलिये परम गुरु शङ्कराचार्य जी के मस्ती भरे उपदेशों, ब्रह्मसूत्र और उपनिषदों की कथाओं ने गुसाईं जी के शुद्ध: अन्तःकरण पर कुछ ऐसा असर डाला कि: वहां अब वेदान्त पूर्ण रीति से अपना परिग्रह (क़बज़ा) जमाने लग गया। और प्रेम की ज़रदी ज्ञान की लाली में बदलने लगपड़ी ॥ ज्ञान का मस्ती भरा रंग चढ़ते ही गुसाईं जी अपने चित्त से वशी भूत हुए परम गुरु शङ्कराचार्य जी के अर्पण होगये, और पूर्ण श्रद्धा व भक्ति से उन्हें परम गुरु मान कर उन की आज्ञानुसार चलने लगे ॥ ऐसी अवस्था में जब गुसांई जी परम गुरु जी से जुदा हो लाहौर आने लगे तो उन्हें उपदेश मिला कि: "देखो यह ज्ञान की लाली और मस्ती अब घटने न पाये, बल्कि: दिन प्रति दिन वृद्धि को प्राप्त होती रहे।

और इस लली का यहा तक गूढ़ा रंग चढ़े कि अन्दर बाहर फूटने लग पड़े (अर्थात संन्यासावस्था प्राप्त हो जाये)। जब तक यह अन्तिमावस्था पूरी २ प्राप्त न हो तब तक बस न की जाये ॥"

इस अन्तिम उपदेश को लेकर जब गुसाईंजी लाहौर वापस आये तो अहोरात्र (दिन रात) वेदान्त के श्रवण मनन में तन मन से युक्त होगये। अब तो हर घड़ी उपनिषदें और ब्रह्मसूत्र हाथ में रहने लगे, और बजाये मथुरा और वृन्दावन जाने के अब ऋषिकेश तथा हरिद्वार में एकान्त सेवनार्थ जाना आरम्भ होगया। चित्त प्रति दिन व्यवहारिक दशा (जिन्दगी) से उपराम होने लग पड़ा ॥ प्रति वर्ष ग्रीष्म ऋतु की छुट्टियों (अनध्यायों) में गुसांई जी ऋषीकेश तथा तपोवन के जंगलों में इस निश्चय से जाते कि वहां .जरूर आत्मानुभव अर्थात आत्म साक्षात्कार होजायेगा ॥ जब दो बार वहां जाकर एकान्त सेवन से आत्म साक्षात्कार न हुवा तो तीसरी बार इस पक्के निश्चय तथा प्रण से तपोवन गये कि:—"अब विना आत्मसाक्षात्कार किये लाहौर वापस आना कदाचिद् न होगा ॥ या तो वहीं मरना होगा या उपनिषदों का सार (ब्रह्मानन्द)

अनुभव कीया जायेगा "॥ इस निश्चय से युक्त होकर गुसाईंजी जब लाहौर से हरिद्वार पहुंचे तो वहां एक सप्ताहा के भीतर २ ही अपनी कुल (तीन मास की) तनख्वाह (वेतन) महात्माओं व ग़रीबों के भोजन में खर्च करदी, और बिलकुल पैसा रहित हुए, नंगे शिर, नंगे पाओं, उपनिषदें हाथ में लिये आत्मसाक्षात्कार करने के पक्के निश्चय से वह ऋषिकेश चले। एक दो दिन ऋषीकेश रह कर वहां से लगभग दस (१०) मील की दूरी पर तपोवन में ब्रह्मपुरि के मंदिर के निकट जा पहुंचे और गंगा के तट पर इस प्रण से आसन जमा दीये कि:—

"आसन जमाये बैठे हैं दर (द्वार) से न जायेंगे।
मजनूं बनेंगे हम तुम्हें* लैली बनायेंगे॥
कफन बान्धे हुए सिर पर किनारे तेरे आ बैठे
न उठेंगे सिवाय× तेरे उठा ले जिस का जी चाहे"

* तुम्हें से यहां मुराद ब्रह्म साक्षात्कार से है
× तेरे से मुराद भी ब्रह्म साक्षात्कार से ही है
अब ऐ ब्रह्मानन्द !

बैठे हैं तेरे दर (द्वार) पै तो कुछ करके उठेंगे।
या वसल ही होजायेगी या मर के उठेंगे ॥"

अपने इस पक्के प्रण को गुसाईं जी ने अपनी लेखनी से यूं वर्णन कीया है:—

"बस तखत या तखतः। बालूदैन! तुम्हारा लड़का अब (घर) वापस नहीं आयेगा। विद्यार्थी लोगो! तुम्हारा विद्यागुरु अब वापस नहीं आयेगा। ऐहले खानाः (घर के लोगो)! तुम्हारा रिशतः (संबन्ध) कब तक निभेगा। बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी? या तो सब तअल्लुक़ात (संबन्धों) से बरतर (रहित) होगा, या तुम्हारी सब उमेदों के सिर यक क़लम पानी फिर जायेगा। या तो राम की आनन्द घन तरंगों में कूनो मकान् (देश काल वस्तु) ग़रक़ाब होगा (तुर्यातीत), और या राम का जिस्म गंगा की लेहरों के हवाले होगा, तन बदन का खातः (होगा)॥ मर कर तो हर एक की हड्डियां गंगा में पड़ती हैं, (मगर) अगर जल्वः ए-[illegible]नी (अपरोऽक्ष) न हुवा और अगर जिस्मानियत (शारीरिक अध्यास) की बू बाक़ी रह गयी तो राम की हड्डियां और मांस जीते जी

मछलियों की भेंट होंगे ॥ अगर राम के चरणों में गंगा न बही (करे रथांगं शयने भुजंगं याने विहंगं चरणेम्बुगांगम्) तो राम का जिस्म (शरीर) गंगा पर ज़रूर बहेगा ॥" इस भीष्म प्रण के पश्चात् गुसाईंजी आगे अपनी अन्तरावस्था को अपनी लेखनी से ऐसे वर्णन करते हैः—

"आंखें जल बरसा रही है। ठंडे और लम्बे सांस (श्वास) गोया तेज़ हवा की तरह मेंह (वर्षा) का साथ दे रहे हैं। अन्दर झड़ी लग रही है, बाहर भी बरसात ज़ोर पर है। अरहाह्-ओ-ज़ारी (रुदन अरु पुकार) के साथ राम के तैः दिल (अन्तःहृदय) से यह नाला (पुकार) निकल रहा हैः—

गंगा! तथों सद् बलहारे जाऊं (टेक)

हाड चाम सब वार के फेंकूं, यही फूल पताशे लाऊं ॥ गंगा० १
मन तेरे बन्दरन को देदूं, बुद्धि धारा में बहाऊं ॥ गंगा० २
चित्त तेरी मछली चब जावें, अहङ्क गिर गुहा में दबाऊं ॥ गंगा० ३
पाप पुण्य सभी सुलगाकर, यह तेरी जोत जगाऊं ॥ गंगा० ४
तुझ में पड़ूं. तो तू बन जाऊं, एसी डुबकी लगाऊं ॥ गंगा० ५

पण्डे, जल थल, पवन दशोंदिक्, अपने रूप बनाऊं॥ गंगा० ६
रमन करूं सतत्रारा मांहि, नहीं तो नाम न राम धराऊं॥ गंगा० ७

आगे चल कर गुसाईं जी अपनी अन्तरावस्था को इस प्रकार लिखते हैं कि:—" शाम पड़ने को है। एक छोटी सी पहाड़ी पर राम बैठा है। अजब हालत है। न तो इसे उदासी नाम दे सक्ते हैं, न रंजो ग़म ही है, दुन्या दारों वाली ख़ुशी भी यह नहीं। उसे जागता नहीं कह सक्ते, सोया भी नहीं॥ क्या मालूम, मख़मूर हो! पर यह कोई दुन्या का नशाः नहीं। क्या रसभीनी अवस्था है"?

उन दिनों उस समय राम की तलाश करता २ एक खत वहां (पहाड़ों में) आमिला जिस में घर आने की तरग़ीब (प्रेरणा) थी। यह खत फ़ौरन परम धाम को रवाना कर दिया गया, अर्थात श्री गंगा जी में प्रवाह दिया गया॥ उस का जो जवाब उस समय लिखा गया, वह पाठकों की खातर नीचे दिया जाता है:—

(१)* रे=रंग नहीं मेरा कतने दा, जोरीं बन्न के भोरे न घत्त मायें
पीड़ां पीड़ के जान नपीड़ लीती, मासा मांस नाहिं रत्ती रत्त मायें

चर्खा वेख के रंग कुरंग होया, सय्यां विच त्राहां केहे वत्त मायें
मत्तीं .इशक़ हुसैन न मत्त मुझे, मत्तीं देंदियां दी मारी मत्त मायें

---

(२) लोगों के गिले उलाहनों का डर दिखाया था। सो भगवन्!
अब तो हम हैं और गंगा जी
कफ़न बांधे हुए सिर पर किनारे तेरे आ बैठे।
हज़ारो ताने अब हम पर लगा ले जिस का जी चाहे॥
तीरो जैसे अल्ज़ाम यहां कुछ नहीं असर कर सक्ते

* संक्षेप मतलब यह है:—कि मेरा हाल अब गृहस्थ करने का नहीं रहा है, इसलिये ज़बरदस्ती से मुझे गृहस्थाश्रम में युक्त मत कराओ॥ मेरा लहु मांस तो ईश्वरप्राप्ति के शोक में सूख गया है बलकि: गृहस्थाश्रम चलाने के बिलकुल अयोग्य (नाक़ाबिल) हो गया है, इसवास्ते मैं गृहस्थियों के बीच कैसे बैठूं? मेरे जैसे ईश्वर परायण पुरुष को जो लोग गृहस्थ करने की सिक्षा देते हैं उन की अपनी बुद्धिः खुद मारी होती है॥

---

*(क) गर नमानद दर दिलम पैकाँ गुनाहे तीर नेस्त।
आतशे सोज़ाने मन आहन गदाज़ उफ़तादह अस्त॥

(ख) ता नख्वाहद सोख़्त अज़ मा बर नख्वाहद दाश्त दस्त ।
.इशक़ बस मारा चो आतश दर क़फ़ा उफतादह अस्त ॥

........तुम्हारा राम तो अब पूरा हो गया पूरा, न घर का न घाट का (गो मालक मलकः लाट का)

(३) किसी खानगी मुआमले के अफसोस की बाबत पूछो तो सखत हैरत है कि तुम्हें अपने असली घर से ग़ाफ़ल रहने का कुछ अफसोस नहीं आता ॥

(४) आप ने सब लोगों के दुन्यवी काम काज में हमः तन मसरूफ होने का इशारह करके बुलाया चाहा है ॥ अच्छा, अगर लोगों की कसरत राये पर ही हक़ीक़त का फैसला करना

* अर्थः-(क) अगर मेरे दिल में नोक नहीं लगती, तो तीर का क़सूर नहीं है क्योंकिः मेरे (प्रेम तथा .इशक़रूपी) जलाने वाली आग का यह स्वभाव हैं कि वह लोहे को पिघला देती है ॥

(ख) जब तक (यह प्रेम या .इशक़) हम को जला नहीं लेता तब तक यह हम पर से हाथ नहीं हटाता (अर्थात हम को नहीं छोड़ता) क्योंकि हमारा .इशक़ (प्रेम) ही आग की तरह हमारे पीछे पड़ा हुवा है ॥

मंजूर हो, तो वताइये, आदम से लेकर ईदम तक कसरत (majority) उन लोगों की है जो मौजूदह जिन्दगी के कारोवार को .ज़ुवाने .अमाल से सच कहने वाले हैं, या उन की जो रूए .जमीन की खाक के तक़ीवन हर ज़र्रे में .ज़ुवाने हाल से वोल रहे हैं कि दुन्या मा़दूमी-अल-मा़लूम है ॥

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्त मध्यानि भारत ।
अव्यक्त निधनान्येव तत्र का परि देवना ॥ (गीता)

(९) भगवन्! आप ही की आज्ञा पालन हो रही है। यानी आप से वहुत जल्दी मिलने की कोशश हो रही है ॥ अज़ रूए जिस्म तो जुदाई हरगिज़ दूर नहीं हो सक्ती। ख्वाह कितने नज़दीक हो जायें। फिर भी जहां एक वदन (शरीर) है वहां दूसरा वदन नहीं आ सक्ता, वरनाः तदाखले अजसाम लाज़म आता ॥ फ़िल्वाक़्या जुदाई को दूर करने के राम रात दिन दरपै (पीछे लगा हुवा) है। ग़ैरीयत (द्वैत भावना) का नामो निशान् नहीं रहने देगा ॥ आप का अन्तरात्मा, आप के सीने में, आप की आंखों में, वलकिः सव के दिल जिगर में राम

अपना घर (क़ियाम) देखे विना चैन नहीं लेगा ॥ आओ, आप भी पांच नदियों (खून, बौल, पसीना, वीर्य, राल) के कीचड़ यानी जिस्म से अपने निज धाम (असल स्वरूप) की तरफ मुराजअत करो (लौटो) । इस पंजाब से उठ कर हक़ीक़ी धाम की पहाड़ियों पर कशां २ (शनैः शनैः) तशरीफ लाइयेगा ॥ मिलना अब मरकज़ (केन्द्र) ही पर मुनासब है । जहां पर मिले फिर जुदाई नहीं हो सक्ती । मुहीत (वृत्त) पर छिप्पन लुक्कन (hide and seek) खेलते २ कहां तक निभेगी ॥ राम ने तो अगर खुद गंगा को अपने चरणों से निकलती हुई न देखा तो लोग उस का जिस्म (शरीर) गंगा के ऊपर रवां (वैहता) ज़रूर देखेंगे ॥

* मैं कुश्तगाने .इशक़ में सरदार ही रहा ।
सिर भी जुदा कीया तो सरेदार ही रहा ॥

* मतलबः—प्रेम से घायल हुए पुरुषों में मैं ही प्रथम रहा । यद्यपि मेरा शिर भी जुदा कीया गया, तथापि मैं वास्तव में शूलि का सिरा अर्थात शूली के ऊपर उस की चोटी ही बना रहा ॥ यानी अपने को सर्वशा ईश्वरार्पण करने से यद्यपि ऊपर से

सीप से मोती निकला हुआ फिर सीप में वापस नहीं आता ॥

....

गंगा में पड़ी हुई हड्डियां वारसों (सबन्धीयों) को वापस कैसे मिल सक्ती हैं? अलबत्ता मिलने के ख्वाहश मंद अपनी हड्डियां भी हवाले गंगा कर दें तो शायद मेल होजाये ॥ कुछ मुशकल तो नहीं, नित्य प्राप्त की प्राप्ति है, नित्य तृप्त की तृप्ति ॥

....

नहीं कुछ गर्ज़ दुन्या की, न मतलब लाज से मेरा ।
जो चाहो सो कहो कोई, बसा अब तो वुही मन में ॥

इस तमाम पूर्व लिखित पत्र से स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि उस समय तपोवन में गुसाईं जी के चित्त की अवस्था कैसी उदारता और वैराग्य से भरी हुई थी, और इस अति उपरामावस्था में जिस समय और जिस स्थान पर गुसाईं जी को आत्म साक्षात्कार हुवा, वह कुल का कुल गुसाईं जी आगे चलकर अपनी लेखनी से यूं (इस प्रकार) वर्णन करते हैं :—

मृत्यु नज़र आती है परन्तु वास्तव में जी उठना और सब का मालक (ईश्वर) बन जाना होता है ॥

नोट (सन १८९८, मास सैप्तेम्बर के लगभग अर्थात संवत् १९५५ भाद्रपद की पूर्णिमा के एक या दो दिन पूर्व ऋषीकेश के तपोवन में ब्रह्मपुरि मंदर के समीप का यह वृत्तान्त है) (लेखक)

(अपरोक्ष) "घना जंगल, जल का किनारा, जंगली गुल्ज़ार शगुफतः (वन पुष्पों से खिड़ा हुवा), तखलिया (एकान्त स्थान में), चंद उपनिषदें खतम । ....
ऐ नुतक़ (वाणी) ! तुझ में है ताक़त (शक्ति) उस सरूर (आनन्द) को ब्रियान करने की ? । धन्य हूं मैं ! मुबारक हूं मैं ! जिस प्यारे का घुंघट में से कभी पैर, कभी हाथ कभी आंख, कभी कान मुशकल के साथ नज़र पड़ता था, आज दिल खोल कर उस दुलारे का वसाल (मिलाप) नसीब हुवा । हम नंगे, वह नङ्गा, छाती, छाती पर है ॥
ऐ हाड चाम के जिगर कलेजे ! तुम बीच में से उठ जाओ॥
तफावत (भेद दृष्टि) ! हट, फासले ! भाग, दूरी ! दूर, हम यार, यार हम ॥

यह शादी (खुशी) है, कि शादी मर्ग ? आंसू क्यों छमा छम

बरस रहे हैं? ....

क्या (यह) साहा (विवाह) के मौक़्या (समय) पर की झड़ी है कि मन के मरजाने का मातम है?। संस्कारों का आखरी संस्कार हो गया। ख्वाहशों पर मरी पड़ी। दुःख दारिद्र उजाला आते ही अन्धेरे की तरह उड़ गये। भले बुरे कर्मों का बेड़ा डूब गया॥

> बड़ा शोर सुनते थे पैहलु में दिल का।
> जो चीड़ा, तो इक क़तरहे खून न निकला॥
> शुकर है, आई खबर यार के आजाने की
> अब कोई राह नहीं है मेरे तरसाने की
> आप ही यार हूं मैं खत्तो किताबत कैसा
> मस्ती-ए-मुत्ल हूं मैं हाजत नहीं मैं खाने की

वह तुर्या जो .उन्क़ा [पक्षी] की तरह मा़दूम [गुम] थी, हम खुद ही निकले। जिस को सीग़ा ग़ायब (Third person, तृतीया) से याद करते थे, वह मुतकल्लम (प्रथमा, First person) ही निकला॥ सीग़ा ग़ायब अब ग़ायब [गुम]! ॐ हम, हम ओम्। हम न तुम, दफ़तर गुम॥ ॐ। ॐ!! ॐ!!! ....

आंसुवों की झड़ी है कि वसल (दर्शन) का मज़ा दिलाने वाली बरसात (वर्षा समय)! ऐ सिर! तेरा होना भी आज सफल है। आँखों! तुम भी मुबारक होगयीं॥ कानों! तुम्हारा पुरुषार्थ भी पूरा हुवा। यह शादी मुबारक हो! मुबारक हो!! मुबारक हो!!! मुबारक का लफ़्ज़ भी आज मुबारक (कृतार्थ) होगया.... ....

अहङ्कार का गुड्डा और बुद्धि गुडिया जल गये। अरे आँखों! तुम्हारा यह काला बादल बरसाना मुबारक हो! यह मस्ती भरे नैनों का सावन स.ईद (मुबारक) है॥"

इस आत्मानुभव के पश्चात गुसाईं तीर्थ राम जी जब लाहौर वापस आये, तो उन के मुख पर अलौकिक (.अजब तरह की) हंसी परोई रहती दिखाई देने लगी। उन के दर्शन मात्र से वाञ्छें खिड़ने लगीं, मुर्दह दिल भी उन को देख कर ज़िन्दः और मस्त होने लगा। उन के स्थान पर अब बहुत लोग प्रति दिन दर्शनार्थ एकत्र होने लगे। गुसाँई जी की मस्ती भरी दृष्टि ने कई पुरुषों के हृदयों को घायल कर दीया। भक्तों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी। व्यवहारिक जीवन की ओर रुचि कम होने लगी॥ धन, दौलत से

गुसाईं जी की वृत्ति ऐसे उदार और उपराम हो पड़ी कि जब मासिक दक्षिणा (वेतन) आति तो उसी दिन या दूसरे दिन तक नितान्त (बिलकुल) खर्च की जाती। तीसरे दिन एक कौड़ी भी पास रखने न पाती ॥

इस उदार और मस्तावस्था में गुसाईं जी ग्रीष्म ऋतु की छुटियों (अवकाश) में सन १८९९ में अमर नाथ की यात्रा के लिये कशमीर गये। श्रीनगर से अमर नाथ तक का सारा रस्ता केवल एक धोतीसे चले। अमर नाथ मंदिर की गुहा में कई घंटे नग्न व्यतीत कीये ॥ जब इस यात्रा से वापस लाहौर आये तो निजानन्द तथा शान्तिमें इतने भरपूर तथा पूर्ण पाये गये कि लिखने में नहीं आ सक्ता ॥

इन्हीं दिनों में उत्तम भाग्य से लेखक को भी रात दिन संन्तुष्ट चित्तसे (दिल भर कर) गुसाईंजी की संगत करने का अवसर मिल गया। लेखक यद्यपि उन दिनों किसी सभा अथवा समाज का मैम्बर नहीं था, और न वेदान्त की ओर ज़रा सी भी रुचि रखता था। तथापि गुसाईं जी के पूर्व काल के उपदेशों से गीता का

अध्ययन कुछ जरूर करा करता था और अन्य पुस्तकों के लक्ष्यार्थ समझने की लग्न भी अधिक रखता था, जिन को ठीक न समझने से हृदय में हज़ारों शङ्कायें भरी पड़ी थीं ॥ जिस किसी पंडित के पास शंङ्का निवारणार्थ जाता, या तो कुछ कहीं ज़रा सी तसल्ली मिलती, और या नितान्त (बिलकुल) खाली हाथ वापस आता। शान्ति ठीक एक के पास चल कर भी न मिलती, और न पूरी तरह से संशय मिटते ॥ परन्तु यह मस्ती भरे गुसांई तीरथ राम जी की ही प्रेम भरी संगति थी कि जिस ने दो दिन के भीतर लेखक की कुल शंङ्कायें निवारण कर दीं। सब संशय मिट गये। और अन्य कई एक भ्रम मलिया मेट होगये ॥ तदपश्चात कुछ उपानिषदों और वेदान्त के प्रकरण ग्रन्थों का अध्ययन गुसांई जी की सहायता से आरम्भ कीया गया॥ जब हृदय के सर्व संशय निर्वृत्त होगये, और गुसांई जी महाराज की प्रेम भरी संगति से चित्त निश्चयात्मक और गद् गद् होगया, तो वहीं ग्रहस्थ आश्रम में ही लेखक ने अपने आप को गुसांई जी के अर्पण कर दीया और सर्वदा के लिये लेखक उन (गुसांई जी) का ही हो लिया ॥

गुसाईं जी की वृत्ति ऐसे उदार और उपराम हो पड़ी कि जब मासिक दक्षिणा (वेतन) आति तो उसी दिन या दूसरे दिन तक नितान्त (बिलकुल) खर्च की जाती । तीसरे दिन एक कौड़ी भी पास रखने न पाती ॥

इस उदार और मस्तावस्था में गुसाईंजी ग्रीष्म ऋतु की छुटियों (अवकाश) में सन १८९९ में अमर नाथ की यात्रा के लिये कशमीर गये । श्रीनगर से अमर नाथ तक का सारा रस्ता केवल एक धोतीसे चले । अमर नाथ मंदिर की गुहा में कई घंटे नग्न व्यतीत कीये ॥ जब इस यात्रा से वापस लाहौर आये तो निजानन्द तथा शान्तिमें इतने भरपूर तथा पूर्ण पाये गये कि लिखने में नहीं आ सक्ता ॥

इन्हीं दिनों में उत्तम भाग्य से लेखक को भी रात दिन संन्तुष्ट चित्तसे (दिल भर कर) गुसाईंजी की संगत करने का अवसर मिल गया । लेखक यद्यपि उन दिनों किसी सभा अथवा समाज का मैम्बर नहीं था, और न वेदान्त की ओर ज़रा सी भी रूचि रखता था । तथापि गुसाईं जी के पूर्व काल के उपदेशों से गीता का

अध्ययन कुछ जरूर करा करता था और अन्य पुस्तकों के लक्ष्यार्थ समझने की लग्न भी अधिक रखता था, जिन को ठीक न समझने से हृदय में हजारों शङ्कायें भरी पड़ी थीं ॥ जिस किसी पंडित के पास शंङ्का निवारणार्थ जाता, या तो कुछ कहीं जरा सी तसल्ली मिलती, और या नितान्त (बिलकुल) खाली हाथ वापस आता । शान्ति ठीक एक के पास चल कर भी न मिलती, और न पूरी तरह से संशय मिटते ॥ परन्तु यह मस्ती भरे गुसाईं तीरथ राम जी की ही प्रेम भरी संगति थी कि जिस ने दो दिन के भीतर लेखक की कुल शंङ्कायें निवारण कर दीं । सब संशय मिट गये । और अन्य कई एक भ्रम मलिया मेट होगये ॥ तदपश्चात कुछ उपनिषदों और वेदान्त के प्रकरण ग्रन्थों का अध्ययन गुसाईं जी की सहायता से आरम्भ कीया गया॥ जब हृदय के सर्व संशय निर्वृत्त होगये, और गुसाईं जी महाराज की प्रेम भरी संगति से चित्त निश्चयात्मक और गद गद होगया, तो वहीं ग्रहस्थ आश्रम में ही लेखक ने अपने आप को गुसाईं जी के अर्पण कर दीया और सर्वदा के लिये लेखक उन (गुसाईं जी) का ही हो लिया ॥

इस काल के थोडेही पीछे गुसाईंजी वहुत बीमार हो गये, और उदर की दर्द से इतने शिथिल और दुःखित हुए कि शरीर पर एक दो वार अति भयानक मूर्छा भी तारी (आछादित) हुई। इस कठोर बीमारी के समय लेखक को दिन रात सेवा करनेका अधिक अवसर मिला था॥ रात के दो २ बजे तक पीड़ा के कारण गुसाईं जी को नींद नहीं आती थी। एक दिन अर्ध रात्रि के समय जब कुछ आरोग्यता प्राप्त हुई तो गुसाईं जी उठ कर फरमाने लगे कि:—" देखो, नारायण ! भारतवर्ष के शायद उत्तम भाग्य कुछ फलीभूत होने वाले हैं जो राम का शरीर आरोग्यता को प्राप्त होने लग पड़ा है॥" जब पूर्ण आरोग्यवस्था (सिहित) पा ली तो गुसाईंजी को उर्दू भाषा में एक अलफ़ नाम का मासीक रिसाला: (पत्र) जारी करने की तरंग उठी॥ उन की आज्ञा पर सरकारी नौकरी छोड़ लेखक उस रिसाले का प्रबन्धकर्त्ता बना। इस तमाम कार्य में धन से सहायता देने वाले गुसाईं जी के एक प्रेमी भक्त लाला हर लाल साहिब कायस्थ लाहोर निवासी थे॥ केवल इस रिसाले की खातर गुसाईंजी ने एक लिथो यन्त्रालयभी हम लोगों से खुलवाया, उसका प्रबन्ध

भी लेखक के हाथही दीया गया ॥ इस तरहसे शुरु जन्वरी सन् १९०० अर्थात सम्वत १९५७ के अन्त में यह रिसाला : प्रकाशित हुवा। इसमें कुल लेख गुसाईंजी की अपनी लेखनी (क़लम) से होते थे। जो जो विषय गुसाईंजी के अनान्द स्रोवरसे वैह कर इस रिसालेमें छपे उनका असर जैसा पाठकों के हृदय पर हुवा उसका अन्दाज़ : नारायण की लेखनी नहीं वर्णन कर सक्ती। पर इतना कहा जा सक्ता है कि इन लेखों से गुसाईं जी के अपने चित्त पर कुछ ऐसी चोट लगी, कि अभी तीन नम्बर (प्रति) भी रिसाले के निकलने न पाये थे कि गुसाईंजी झट नौकरी छोड़ परिवार समेत जंगलों की ओर पधारे॥ लेखक तो उन की आज्ञासे रिसाले के प्रबन्ध करने के अर्थ कई मास पैहिले से ही नौकरी छोड़े बैठा था, और रात दिन गुसाईं जी के मस्ती भरे लेख रिसाले में छपाने को साफ नक़ल करा करता था। पर जब गुसाईं जी अपनी अर्धाङ्गी और दो पुत्रों समेत बिलकुल लाहौर को छोड़ने लगे तो लेखक भी उन की आज्ञा से रिसाले के लिये लेख (मज़मून) साफ नक़ल करने के अर्थ, उन के परिवार की सेवार्थ, और विशेष करके उनकी मस्ती भरी संगत से लाभ

उठाने की खातर उन के साथ होलीया ॥ मास जुलाई सन १९०० में हम सब लाहौर से चले । लेखक तो सिर्फ सेवा करने की खातर और आत्मक लाभ उठाने के अर्थ साथ हुवा था, पर गुसांई जी और उन की अर्धङ्गी फिर वापस गृहस्थ में न आने के विचार (ख्याल) से जंगलों को पधारे थे ॥ उस दिन रेल्वे स्टेशन के प्लैट फौर्म पर जो समा बंधा था, और घर से स्टेशन तक रास्ते में भजन मंडलियों के हृदय वेधक भजनों से जो श्रोतागण के दिलों पर असर पड़ा था वह सब अकथनीय है ॥ नंगे शिर और नंगे पाओं, केवल आधी धोती नीचे और आधी कान्धे पर, दीवानः वार (मस्त पुरुषों की तरह) राम बाजारों में गुजर रहे हैं और हर एक भजन मंडली वैराग्य और त्याग के भजन ज़ोर शोर से आगे आगे गाती चली जा रही है । अश्रूपात तीव्र वेग से सब के हो रहे हैं । पुष्पों के हारों से कण्ठ तो पैहले भरा पड़ा था, मगर फिर भी रास्ते में जगह २ पर पुष्पों की वर्षा हो रही है । प्लैट फौरम पर पहुंचते २ अनगणित पुरुष एकत्र होगये । आध घंटे तक प्लैट फौर्म पर भी बड़े प्रेम और वैराग्य भरे चित्त से भजन कीर्तन होता

रहा। गाड़ी में स्वार होते समय सब के प्रेमाश्रू थामे नहीं जाते थे। गाडी के चलने पर निम्न लिखित भजन लेखक से राम की ओर (तरफ) से पंचम सुर में गाया गया:—

अल्वदा मेरी रयाज़ी ! अल्वदा
अल्वदा ऐ प्यारी रावी ! अल्वदा
अल्वदा ऐ एहलेखानः ! अल्वदा
अल्वदा मासूमे नादां ! अल्वदा
अल्वदा ऐ दोस्तो दुशमन ! अल्वदा
अल्वदा ऐ शीत ऊष्ण ! अल्वदा
अल्वदा ऐ कुतबो तदरीस ! अल्वदा
अल्वदा ऐ खुबसो तक़दीस ! अल्वदा
अल्वदा ऐ दिल !, खुदा ! ले अल्वदा
अल्वदा राम ! अल्वदा, ऐ अल्वदा !

राम महाराज, उन की अर्धङ्गी, बालकों और लेखक के अतिरिक्त

(१) रुखसत हो (२) घर के लोगो (३) नादान (भोले भाले) बच्चे (४) पुस्तकें और पाठशाला (५) शुद्धः और मलीन या अच्छा बुरा

अन्य कई महाशय भी साथ होलिये थे, किन्तु हरिद्वार से आगे चलकर रास्ते में शनैः २ सब झड़ते गये। अन्त में वे परवाह राम जी सहित अर्धङ्गी, बच्चों, लेखक और एक अन्य महाशय (गुरु दास) के रयासत टिहरी गढ़वाल में पहुंचे॥ खास टिहरी नगर से दो मील के फासले पर एक सुन्दर बागीचा: सेठ मुरलीधर का गंगा तट पर है उस में राम एक वर्ष के लगभग लगातार ऐकान्त सेवन करते रहे॥ राम जी की अर्धङ्गी कुछ काल के पश्चात बीमार हो गयीं और देर तक कष्ट न उठा सकीं, इसलिये तीन मास के पीछे उन्हें घर वापस आना पड़ा। अन्तमें लेखक और तुलाराम जी सारा काल पर्वतों में राम जी के साथ रहे॥ यद्यपि एक, दो बार रसाला अलफ के अन्तिम (आखरी) दो बड़े नम्बरों (१. गंगा तरंग, सुल्ह कि जंग २. जल्व-ए-कोहसार) के छपाने को कुछ काल के लिये लेखक को नीचे देश में आना पड़ा, तथापि अन्त समय तक स्वामी जी के साथ रहना उत्तम भाग्य से केवल लेखक को ही नसीब हुवा॥

द्वारका मठ के परम गुरु श्री शङ्कराचार्य जी महाराज से यह

उपदेश तो गुसाईं जी को गृहस्थाश्रम में ही मिल चुका था कि "चित्त की पूर्ण निरासक्तावस्था के प्राप्त होने पर विद्वत संन्यास शीघ्र (फौरन) धारण कीया जाये" ॥ अब जंगलों में लगातार एकान्त सेवन से राम जी का चित्त संसारिक पदार्थों से नितान्त (बिलकुल) निरासक्त और अपने निजानन्द में अति मग्न होने लग पड़ा, इस समय गुरु जी की पूर्व वर्णित आज्ञानुसार राम महाराज से मास मार्गशिरस (मंगसर) संवत १९५७ अर्थात सन १९०१ के लगभग वहीं टिहरी नगर के समीप सेठ मुरलीधर वाले बागीचे में गंगा तट पर विद्वत् संन्यास धारण कीया गया ॥ यह परम गुरु द्वारकाधीश शङ्कराचार्य जी तीर्थ संन्यासी थे इसलिये राम का संन्यास नाम भी राम तीर्थ प्रसिद्ध हुवा ॥ और वैसे पूर्व (गृहस्थाश्रम के) नाम का उलट भी यह नाम था जिस समय यह संन्यासाश्रम लिया गया उस समय लेखक और एक अन्य भक्त समीपावस्थित थे। उत्तम भाग्य से कपड़े रंगने की सेवा उस समय लेखक को ही मिली थी ॥ संन्यासाश्रम धारन कीये जाने के पीछे षण मास तक स्वामी जी उसी स्थान पर एकान्त सेवन करते रहे। तदपश्चात

जुलई सन् १९०१ में उन्हों ने उत्राखंड की यात्रा आरम्भ की। पहले यमनोत्री पहुंचे। (वह समय भादो संवत १९५८ का था) वहां एक मास तक रहने के पीछे यमनोत्री मंदिर से १५ या १६ मील ऊपर जा कर बन्दर पूंछ नामी समेरू पर्वत की यात्रा की। वहां से नीचे उतर कर ग्रामसरू तथा छायां के रास्ते से गंगोत्री मंदिर की ओर चले। एक या दो दिन के अन्दर वहां पहुंच गये *। वहां पहुंच कर पूरा एक मास आश्विन (असोज) का काट कर बूढ़े केदार और त्रिजुगी नारायण के रास्ते से बड़े केदारनाथ और फिर बदरीनारायण तक यात्रा (रटन) की। फिर दसम्बर १९०१ में अल्मोरा नगर के रास्ते स्वामी जी नीचे देश में उतरे॥ उस समय मथुरा में धर्म महोत्सव पर स्वामी जी वहां प्रधान चुने गये थे इसलिये मथुरा गये॥

स्वामी जी ने यद्यपि भारत खंड में जन्म लीया था पर वह सब

* इस रास्ते की यात्रा का कुल हाल अंग्रेजी भाषा में स्वामीजीने अपनी लेखनी से विस्तार पूर्वक वर्णन कीया है। पाठकों को देखने की इच्छा उपजे तो राम (Rama) नाम का एक छोटा सारिसाला पढ़ लें॥

देशों, सब जातियों, सब धर्मों के मनुष्यों, हर जीव जन्तु वरन (बल्कि:) कुल सृष्टि मात्र को प्यार करते थे। उन के शरीर से सब को सुख और लाभ मिलता था॥ वह आनन्द और शान्ति की मूर्ति थे। बड़े से बड़े दुःखी और उदासी भरे दिल को पल के पल में शान्त और प्रसन्न कर देते थे। उन से मिलने वाले का दिल अपने छिपे हुए रहस्यों और पापों को भी प्रकट कर देता था, मृतक चित (मुर्दा दिल) भी उन के दर्शन से जीवत (जिन्द:) होजाया करता था। उपदेश करते २ वह प्रेम में ऐसे मग्न और आनन्द स्वरूप होजाते थे कि सुनने वाले का जी (चित्त) न उठने को करता और न सुनते २ किञ्चित मात्र उकताता था॥ जिस किसी को स्वामी जी की भोली भाली, मस्त और तेजोमयी मूर्त्ति के दर्शन और उन के मुखारविन्द से कुछ सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुवा है वह ही स्वयं इस असर को ठीक जान सक्ते हैं। अन्य को पूरा २ दर्शाना कुछ कठिन सा ही है॥ मथुरा में महोत्सव के समय जब लोग दिन भर बहुत से लैक्चरों तथा उपदेशों को सुनते २ थक भी गये थे, तो भी स्वामी जी के उपदेश की बाट

ताकते थे ॥ स्वामी जी के उपदेश का जब समय आया तो खड़े होकर उन्हों ने यह कह सुनाया कि राम अब इस तम्बू के नीचे कुछ नहीं बोलेगा, क्योंकि उत्सव का समय अब व्यतीत होचुका है, अलबत्ता जिसकिसीने रामको सुनना हो, वह इस तम्बू के बाहर यमुना नदी के तट पर कुदरतके (ऐश्वर्य) शामियाना (आकाश) के तले बैठ कर सुनलें ॥ यह कह कर स्वामी जी उधर (यमुना तट की ओर) चल दीये और तमाम लोग उसी समय कुर्सियां छोड़ कर उनके पीछे हो लिये। मैदान में पहुंच कर थोड़ी देर के लिये राम यमुनाजी की तरफ से उलट चलने लगे, तो तमाम लोग भी विना सोचे समझे (कि राम कहांजा रहे हैं, व्याख्यान तो कहा था यमुना किनारे होगा, पर जा रहे हैं जङ्गल की तर्फ) उन्हीं के पीछे चलदिये ॥ जब राम ने देखा कि यह प्रेमवश, पागल तथा बेखुद होकर पीछे आरहे हैं तो ठैहर कर कहा "प्यारो! राम लघुशङ्का करने जा रहा है। फिर यमुना किनारे आता है, आप चलिये, व्याख्यान वहीं होगा"। यह सुन कर सब के सब जैसे थे वैसे ही खड़े रहे और फिर जब राम लौटे तो उन के पीछे २ चले ॥ जिस तरह कहा

जाता है कि कृष्ण के साथ रहने को हर एक गोपी इच्छा करती थी वही हाल वहां दिखाई दीया। राम के साथ चलने को लोग व्याकुल थे। कोई २ झाड़ियों में उलझ २ गिरते थे। साथियों का साथ छूटा जाता था पर उन्हे कुछ परवाह नहीं॥ जब राम यमुना किनारे पहुंचे, रात्रिका समय हो चला था और पौष मास की शरद ऋतु के दिन थे, तट पर का रेतला फर्श नर्म और शीतलपड़ गया था। महोत्सव केवल दिन भर रहना था, इसलिये लोग बहुत कम गर्म वस्त्र साथ लाये थे, तो भी श्रोतागण अपने आप में न रहे॥ जिस समय राम ने कहा कि 'आप बैठ जाइये,' लोग झट अपने बड़े २ कीमती दुशाले शीतल रेतले आसन (फर्श) पर बिछा कर बैठ गये। और प्रेम के साथ रात के ८ बजे तक राम के मनोहर वचन सुनते रहे। किसी ने शीत की परवाह तक न की॥ महोत्सव में और भी बहुत से साधु महात्मा उपस्थित थे, परन्तु राम जी के तेज और कान्ति के आगे ऐसे दिखाई देते थे जैसे चन्द्रमा के साम्हने तारे॥ उस समय की दशा देखकर यही याद आता था कि जैसे श्रीकृष्ण चन्द्र जीके मनोहर वचन, मनोहर बंसुरी और मनोहर तथा

सुंदर स्वरूप से गोपियों और गवालों ने सुधबुध खोदी थी, वही हाल आज प्रत्यक्ष वहां हो रहा है ॥

इस महोत्सव के पीछे अर्थात सन् १९०२ के प्रारम्भ में कुछ काल तक स्वामी जी आगरा, लखनौ इत्यादि नगरों में उपदेशार्थ भ्रमण करते रहे। उन्हीं दिनों लेखक को स्वामी जी ने संन्यास धारण करने की आज्ञा दी, जिस आज्ञा को पाते ही ततक्षण (फौरन) सन्यासाश्रम लीया गया ॥ लेखक को संन्यास धारण करा कर आप तो पर्वतों को वापस चल दीये, और उसे सिन्ध देश की ओर उपदेशार्थ भेज दीया ॥ चार मास पश्चात जब बुलाया गया, तो फिर पर्वतों में स्वामी जी महाराज के दर्शनार्थ आया। ऐसे टिहरी में स्वामी जी की सेवा और संगत में रहने का लेखक को फिर अवसर मिल गया ॥ उन्हीं दिनों स्वामी जी महाराज की महाराजा साहिब टिहरी से भेंट हुई ॥

जुलाई, सन् १९०२ में यह खबर अनेक पत्रों में छपी, कि जापान देश में एक अद्वितीय धर्म महोत्सव होगा। जिस को पढ़ कर महाराजा साहिब बहादुर टिहरी ने चाहा कि स्वामी राम तीर्थ जी

जैसे रंगे हुवे महात्मा वहां अवश्य उपस्थित हों। महाराजा साहिब की ऐसी इच्छा को सुन कर स्वामी जी झट चलने को उद्यत हो गये। और उत्तम प्रारब्ध से लेखक भी आज्ञा पा कर साथ चला॥ अगस्त १९०२ में कलकत्ते से (हम लोग कुमुसैन नामी जहाज़ में बैठे;, और मास अक्तूबर के आरम्भ में जापान पहुंचे। टोकियो नगर में पहुंचते ही पता लगा कि धर्म महोत्सव की सूचना बिलकुल झूठी और ग़लत है॥ इस लिये थोड़े दिवस जापान में रहकर स्वामी जी तो काल्जों में एक, दो उपदेश देने के पश्चात् फिर अमरीका देश को चलदिये। और लेखक को अन्य प्रान्त (योरप और अफरीका देशों) में घूमने की आज्ञा दी, और साथ ही यह भी ताकीद करदी कि "जबतक राम भारत वर्ष को वापस न लौटे तब तक नारायण (लेखक) भी बाहर प्रान्त में ही घूमता वेदान्त परिचार करता रहे।" इस आज्ञानुसार लेखक भी यूरप, अफरीका, लङ्का, ब्रह्मा और चीन इत्यादि देशों में भ्रमण करता रहा॥ और स्वामी जी महाराज उतने काल तक अमरीका देश के प्रसिद्ध नगरों में ज़ोर शोर से वेदान्त का परिचार करते रहे॥ उन के मस्ती भरे

उपदेशों से वेदान्त सिद्धान्त की कई सुसाइटियां (सभायें) वहां स्थापन होगयीं ॥ अमेरिका में भारत वर्ष के अद्वैत सिधान्त का खूब डंका बजा कर स्वामीजी सन १९०४ के अन्त में भारत वर्ष वापस आगये ॥ लेखक चूंकि लंडन में अत्यन्त शीत के कारण वहां अति बीमार होगया था, इसलिये स्वामी जी ने लेखक को भारत वर्ष में शीघ्र जाने के लिये पत्र पर पत्र भेजे, जिस से स्वामीजी के पहुंचने से कुछ मास पहले लेखक को भारत वर्ष में आना पड़ा ॥

अमेरिका से आने के पीछे स्वामीजीने चंद मास भारतवर्ष में खूब भ्रमण कीया, फिर नवम्बर सन १९०५ अर्थात संवत् १९६२ की दीपमाला के लगभग एकान्त निवासार्थ उत्ताखंड को पधारने लगे और लेखक को सेवार्थ साथ रहने की आज्ञा दी। जिस पर लेखक भी जंगलों की ओर फिर चला॥ तपोवन से कुछ १९ या २० मीलकी दूरी पर व्यासाश्रम में हम लोग कैई मास तक रहे। आजकल यह स्थान "वी" के जंगल से प्रसिद्ध है॥ यह बदरी नारायण के मार्ग पर व्यास गुहा तथा व्यास चट्टी के ठीक साम्हने है॥ भिक्षाका प्रबन्ध काली कमली वाले राम नाथजीने अपने

ऊपर लिया हुवा था जो उन्होंनें अति उत्तम रीति से निभाया। किसी प्रकार का शारीरक खेद उन के उत्तम प्रबन्ध (बन्दोबस्त) से किसी को होने न पाया॥ पांच मास के लग भग हम लोग उस घने वन में रहे। इतने थोड़े काल के अन्दर स्वामी जी ने पातञ्जल भाष्य और निरुक्त की पुनरावृत्ति अति उत्तम रीति से कर लीं और साम वेद का पाठ (अध्ययन) भी संम्पूर्ण कर लीया। इस प्रकार सारा शीत काला व्यासाश्रम में काटने के पश्चात स्वामी जी के अन्दर (तरंग) लैहर उठी कि अब इस वन को छोड़ कर वासिष्ठाश्रम के वन में एकान्त सेवन कीया जाये और आने वाली ग्रीष्म ऋतु सब उसी ऊंचे स्थान में व्यतीत की जाये॥ यह वन टिहरी नगर से कोइ ५० मील की दूरी पर है और कोई १२००० अथवा १३००० फुट की उंचाई पर स्थित हुआ नाना प्रकार के दिव्य वृक्षों और लता से संशोभित हो रहा है। इस का ठीक और सीधा मार्ग टीहरी नगर से आरम्भ होता है, जब फरवरी सन १९०६ में स्वामी जी व्यासाश्रम से

वासिष्ठाश्रम की ओर चले तो प्रथम टिहरी नगर पहुंचे और वहां स्वामी जी अपने भक्त जनों से टिहरी नरेश के बागीचे (सिमलास,) में उतारे गये ॥ शारीरक सेवा सर्व प्रकार की महाराजा साहिब की ओर से होने लगी। बलकि टिहरी नगर से आगे चलने का प्रबन्ध और वासिष्ठाश्रम में रहने का कुल प्रबन्ध महाराजा साहिब ने ही अपने ऊपर प्रेम पूर्वक ले लीया, इसलिये काली कम्बली वाले बावा रामनाथ जी को अपना उत्तम प्रबन्ध छोड़ना पड़ा, किन्तु उन की ओर से एक सेवक (रसोया) स्वामी जी के साथ ज़रूर रहा ॥

टिहरी से वसिष्ठाश्रम को चलने के कुछ दिन पहले स्वामी जी को धर्म के उत्सवों पर उपदेश करने के लिये एक दो निमन्त्रण की तारें आई ॥ पर एकान्त सेवन ने स्वामी जी की चित्त वृत्ति को कुछ ऐसा आकर्षित कीया हुवा था, और दुन्या से कुछ ऐसा उपराम कर रक्खा था कि उन का चित्त नीचे देश में जाने को उद्यत न हुवा। इस लिये लेखक को ही अपने स्थान पर (जहां २ से बुलावे आये थे) वहां भेज दिया, और आप एक नौकर साथ लिये वासिष्ठाश्रम को चलदिये ॥

भारत वर्ष के मन्द भाग्य से स्वामी जी की भिक्षा का वहां वासिष्ठाश्रम में कुछ ऐसा बुरा प्रबन्ध हुवा कि वहां पहुंचने के थोड़े ही काल पीछे स्वामी जी दारुण (सखत) बीमार होगये, और ग़रीब नौकर भी बिस्तरे पर लिट गया ॥ लेखक को देश में आये अभी दो मास भी न हुए थे, कि पत्र आया "स्वामी जी दारुण (सखत) बीमार हैं और भोजन (भिक्षा) का प्रबन्ध अति बुरा तथा निन्दनीय है"। इस पत्र के पाने के पीछें स्वामी जी के विषय में कुछ और अफ़वाहें (अन्य चर्चा) भी उड़ती सुनाई दीं जिस से लेखक को झट वापस पर्वतों में जाना पड़ा ॥ वासिष्ठाश्रम पंहुंचते ही स्वामी जी को कुछ थोड़ा अरोग (तन्दुरुस्त) बैठे तो पाया, परन्तु शरीर से बहुत शिथिल, कृश और दुर्बल देखा ॥ भिक्षा में कुछ इस प्रकार का अन्न आता था कि जो खाता कुछ दिन पश्चात् शय्या (बिस्तरे) पर ज़रूर लिट जाता ॥ उस अन्न के खाने से लेखक भी पहुंचने के दो दिन पीछे वहां चित् लिट गया॥ जब होश आई, तो यह समझ कर, "कि शायद कहीं यहां की वायू जल (आबो हवा) ही खराब हों और भिक्षा में कोई खराबी

न हों " हम सब ने वह स्थान छोड़दिया, और छे या सात मील की दूरी पर जाकर आपस में एक दूसरे से कुछ फासले पर भिन्न २ स्थानों में रहने लगे ॥ जो अन्न प्रबन्ध कर्त्ता की ओर से स्वामी जी को आता था उस में नित्य खराबी देखकर लेखक ने तो उसे खाना छोड़ रक्खाथा, और अपनी कुटिया से दो या तीन मील की दूरी पर के ग्रामों से ताज़ी भिक्षा (अन्न तथा मधुकरी) ला कर खाता था जिस से शरीर बिलकुल अरोग रहने लगा। मगर स्वामी जी ग्राम और लेखक की कुटिया से बहुत दूर होने के कारण वुही सर्व प्रकार से अपच्य अन्न को खाते रहे जिस से शरीर ठीक अरोग (तन्दुरुस्त) होने न पाया। बलकि वैसा का वैसा ही रहा ॥ जब शरीर पैहिले से भी अधिक बीमार और दुर्बल होने लगा तो उस अन्न को खाना स्वामी जी ने भी बन्द करदिया, और केवल दुग्धाहार पर निर्वाह करना आरम्भ कीया अगर कभी अन्न खानें की ओर रुचि भी होती तो इस ख्याल से कि " वह अन्न फिर बीमार न डाल दे " स्वामी जी उसे न खाते और रुचि तथा क्षुदा को ऐसे ही मार दिया करते थे, जिस से शरीर तो बेशक बीमार होने न पाया,

परन्तु दुर्बल और शिथिल वैसे का वैसा ही रहा ॥

जब प्रेम मूर्ति प्यारे पूर्ण सिंह जी, सुशील पंडित जगत राम जी, और पं० हरि शर्मा जी वासिष्ठाश्रम में स्वामी जी के पास दर्शनार्थ आये, उन दिनों स्वामी जी ने अन्न खाना छोड़ रक्खा था। मगर इन प्यारों को इस का कारण ठीक विदित न था। इसलिये इन से यह हठ हो गया कि:–"पैहिले राम कुछ अन्न भिक्षा पालें फिर हम कुछ भोजन करेंगे," जिस पर थोड़ा सा अन्न स्वामी जी ने फिर खाना आरम्भ कीया। इस प्रकार सच्चे प्रेम के वशीभूत हुए २ स्वामी जी फिर प्रति दिन थोड़ा २ अन्न खाने लग पड़े, जिस से थोड़े काल पीछे फिर शारीरक बदहज़मी (रोग) होने लगी ॥ जब ऐसे अन्नाहार से स्वामी जी का शरीर बीमार पड़ने लगा तो उन प्यारों को स्वामी जी के अन्न छोड़ने का कारण प्रतक्ष मालूम हो गया, फिर उन्हों ने स्वामी जी को अन्न खाने के लिये विवश (मजबूर) न कीया ॥

लेखक स्वामी जी की कुटिया से कोई छे या सात मील की दूरी (फासले) पर रहता था और उन की आज्ञानुसार प्रति

आदितवार उन के पास प्रायः आया करता था, मगर जब पूर्ण जी वहां आये, तो अपना दूत भेजकर स्वामी जी ने तत काल बुलवा-लिया, और आज्ञा दी कि "जब तक पूर्ण जी यहां रहें तब तक नारायण भी यहां उन के पास ठैहरे।" स्वामी जी की इस आज्ञा पर नारायण (लेखक) को कुछ काल के लिये फिर स्वामी जी के समीप डेरा जमाना पड़ा ॥

पं० हरि शर्मा जी अपने मन्द भाग्य से प्रथम तो रास्ते में ही तीन वार घर लौटने को उद्यत हुए। जूं २ रास्ते में ज़रा दुःख देखते, फौरन वापस लौटने पर कमर वान्ध लेते थे, और प्यारे पूर्ण जी की ज़बरदस्ती व मदद और उन के घड़ी २ शरमिन्दह करने से वह बड़ी मशकुल से (नितान्त काठिन्ता से) वासिष्ठाश्रम तक पहुंचे थे, और वह भी पूर्ण जी के पहुंचने के एक दिन पीछे। परन्तु स्वामी जी के पास आये उन्हें अभी एक दिन ही व्यतीत हुवा था कि वह झट उदास होने लग पड़े और अपने घर के धंधे सब के आगे फोलने लगे॥ हम सब को घड़ी २ यही कह सुनाते कि "मेरी स्त्री ११ मास के लग भग से गर्भवति है, मुझे उस

का अत्यन्त शोक (फिकर) लगा हुवा है, मेरे से अब यहां अधिक नहीं ठैहरा जाता ! मैं तो कभी का रास्ते से ही मुड़ जाता मगर पूर्ण जी की ज़बरदस्ती से यहां (वसिष्ठाश्रम) तक आया हूं इत्यादि "॥ प्यारे पूर्ण जी ने और लेखक ने पंडित जी को बहुधा समझाया और बुझाया और अनेक वार उन्हें यूं भी कहा " कि देखो ! आप को यद्यपि पूर्ण जी की ज़बरदस्ती और मदद से ही यहां तक आना नसीब हुआ है, परन्तु जब आप अपने उत्तम भाग्य से यहां पहुंच गये हैं तो यहां स्वामी जी की संगति में कुछ दिन तो काटिये और उन के मस्ती भरे उपदेशों को सुन कर कुछ लाभ उठाइये, जिस से आप का आना सफल हो और इतना कष्ट उठाना भी आप को लाभकारी हो ॥ " बहुत कहा पर उन्हों ने एक न सुनी ॥ पंडित जी का चित्त शायद जंगलों को देख कर कुछ ऐसा घबराया नज़र आता था कि वहां एक पल ठैहरना भी उन को पर्वत तुल्य भारी हो गया था । अथवा अपनी गर्भवति स्त्री का फिक़र उन के दिल को कुछ ऐसे घेरे रखता था कि बात २ में वह उसी का ज़िकर छेड़ते रहते ॥ जब चित्त उनके वश में न रहा तो उन्हों ने सीधा स्वामी जी के पास जाकर भी

यही अपनी स्त्री का रोना रोया, जिस पर स्वामी जी ने उन को शीघ्र स्त्री के पास जाने की रलाह दी ॥ इस प्रकार से पं० हरि शर्मा जी शायद दूसरे या तीसरे दिन ही वासिष्ठाश्रम से वापस घर को लौट गये ॥ प्यारे पूर्ण जी और उनके दूसरे साथी बड़े सुशील पंडित जगत राम जी पूरे एक मास के लग भग वहां (वासिष्ठाश्रम में) रहे, और स्वामी जी की आज्ञानुसार एक मास तक लेखक भी वहां ही उन के पास रहा ॥ इतना थोड़ा सा काल तो पं० हरि शर्मा जी स्वामी जी के पास ठेहरे (और वह काल भी उन्हों ने वहां बड़ी बेचैनी और घर के फिक्र अर्थात शोक में काटा), तिस पर आश्चर्य यह, कि स्वामी जी के शरीर छोड़ने के थोड़े ही काल पीछे पंडित जी ने झट लोगों में अपने आप को स्वामी जी का शिष्य अपने ही मुख से प्रसिद्ध करना आरम्भ कर दीया, और इस तरीके से अन्य बहुत से अनुचित और निन्दनीय काम भी कीये जो किसी धार्मिक पुरुष से होने की आशा नहीं दिलाते ॥ और न कोई सच्चा भक्त राम का ऐसे बुरे काम कर सक्ता है ॥

कुछ काल तक वासिष्ठाश्रम में रहने के पश्चात् जब हम सब

भी उस विचित्र अन्न से घड़ी घड़ी बीमार होने लगे और स्वामी जी की अपनी दुर्बलता और शिथिलता दूर न होने पाई तो हम सब नें स्वामी जी के आगे यह प्रार्थना की " कि या तो इस अपथ्य भिक्षा के प्रबन्ध को रोक दीया जाये, और हमें नीचे दूर ग्रामों से लाने की आज्ञा दी जायें, और या आप नीचे टिहरी नगर अथवा किसी और नगर में चलें, जहां हम अपनी और आप की भिक्षा का उत्तम रीति से प्रबन्ध कर सकें, जिस से सब के शरीर अरोग होजावें ॥ " सब के कहने पर स्वामी जी ने टिहरी नगर तक उतरने को स्वीकार कर लीया, और अपने अस्बाब (पुस्तकों के सदूकों) को नीचे ले जाने का प्रबन्ध (बन्दोबस्त) करने के लिये हम सब को पहले टिहरी में भेज दीया ॥ पूर्ण जी की छुटियां खतम होने वाली थीं, इस लिये वह और उन के साथी एक मास के लगभग वासिष्ठाश्रम में रह कर अब लाहौर वापस जाने को टिहरी चले परन्तु लेखक (नारायण) सर्व प्रकार के बन्दोबस्त कर ने के लिये उन के साथ टिहरी आया ॥ जब पूर्ण जी वासिष्ठाश्रम को छोड टिहरी चलने लगे तो स्वामी जी मील

के लगभग तक उन्हें छोड़ने आये। रास्ते में (मन्दम) आहिस्तः से स्वामी जी ने कहा कि " राम शायद अब शीघ्र गुंगा (तूष्णी) हो जाये, अब आप लोग ही राम बनें। शायद राम का आप लोगों से पत्र विहार करना तथा बोलना या मिलना इत्यादि भी अब नितान्त (बिलकूल) बन्द पड़ जाये ॥" इतना सुनना था कि पूर्ण जी की आंखों से प्रेमाश्रु तीव्र वेग से बहने लग पड़े। प्रेम आंसुवों का टपकना था कि स्वामी जी ततक्षण (फौरन) भाग कर तिरोधान होगये। तिस पर पूर्ण जी का रुदन और अधिक बढ़ गया और बहुत काल तक आसुंवों का तीव्र वेग उन से थामा ना गया, पूर्ण जी घण्टो तक ऐसे घायल चित्त से मार्ग चलते रहे। और बड़ी देर पश्चात धैर्यता को प्राप्त हुए ॥

जब हम सब टिहरी पहुंचे, पूर्ण जी ने एक व्याख्यान टिहरी स्कूल में दीया, और दूसरे दिन वह मसूरी को चल दिये ॥ लेखक स्वामी जी के असबाब (पुस्तकों के सन्दूक) उठाने का कुल प्रबन्ध करके वापस वासिष्ठाश्रम चला आया ॥ स्वामी जी महाराज एक सप्ताहा के भीतर २ टिहरी नगर आगये और लेखक कुल

पुस्तकों के सन्दूक इत्यादि भेज कर चार या पांच दिन पीछे टिहरी आया और दो सप्ताहा तक स्वामी जी की सेवा में उन के पास सिमलासू बाग में ही रहा ॥ तदपश्चात स्वामी जी के शुद्ध: चित्त में तरंग उठी कि 'अब फिर (हम) दोनों कुछ काल तक लगातार इस टिहरी नगर के समीप ज़रा एक दूसरे से दूर भागीर्थी गंगा के तट पर जुदा २ कुटिया में एकान्त निवास करें' ॥ टिहरी नगर से क़रीब ९ मील की दूरी पर मालिदेवल ग्राम के समीप एक बडे खुले मैदान में गंगा तट पर स्वामी जी ने अपने निवास के लिये स्थान चुना* और उस स्थान पर उन के लिये एक पक्की कुटिया बनवाई जाने लगपड़ी ॥ उसी स्थान से कुछ आगे तीन मील चल कर ठीक गंगा तट पर एक विशाल दैविक गुहा बमरोगी नाम से प्रसिद्ध है उस एकान्त स्थान को लेखक ने चुन लीया । और उस

---

* नोट:—यह ऐसा उत्तम स्थान है कि पूर्व भी एक बड़े प्रसिद्ध संन्यासी महात्मा "केशो आश्रम" जी ने (६०) साठ वर्ष के लगभग यहां एकान्त निवास कीया और एक सौ वर्ष से अधिक आयू पाकर उन्हों ने यहां शरीर छोड़ा था.

की सफाई और दरुस्ती इत्यादि भी की जाने लग पड़ी ॥ वह विशाल कुद्रती (दैविक) गुहा पत्थरीली होने के कारण शीघ्र साफ और निवास योग्य हो गयी, परन्तु कुटिया नवीन बनाई जाने के कारण उतनी जल्दी तय्यार न होसकी ॥ जब गुहा की दरुस्ती और सफाई की सूचना स्वामी जी के कान तक पहुंची तो लेखक को बुला कर कहा कि "देखो, नारायण! जब गुहा तय्यार तथा निवास योग्य हो गयी है, तो आप अभी ही वहां जाकर एकान्त सेवन करिये, राम भी कुटिया के बन जाने पर झट आप के समीप मालिदेवल आ जायेगा और एकान्त सेवन करेगा" ॥ ऐसी अनुत्त व अनिवर्तक आज्ञा (नादर हुक्म) सुनते ही लेखक ने चलने के लिये अपने बिस्तर बान्ध लीये, अर्थात कूल पुस्तकें इत्यादि संदूकों में बन्द करके चलने को उद्यत हो गया ॥ जब गुहा की ओर नारायण (लेखक) चलने लगा तो स्वामी जी नङ्गे शिर नंगे पाओं अपना सैर करने का मनशा (संकल्प) प्रकट करके साथ हो लिये । और एक मील से अधिक तक साथ गये ॥ रास्ते में इस प्रकार उपदेश करने लगे कि:—"देखो, बेटा! राम अब शायद

शीघ्र गूंगा (तूष्णी) हो जाये। शरीर तो तुम देखते हो शिथिल' कृश और दुर्बल होगया है, और प्रति दिन अधिक (कमज़ोर) होता जारहा है, और चित्त वृत्ति भी अब दुन्या से इतनी उपराम होती जाती है कि: किसी काम को भी हाथ लगाने का चित्त नहीं करता, ऐसा प्रतीत (भान) होरहा है कि शायद थोड़े ही दिनों में राम की लेखनी नितान्त बन्द हो जाये, और रामका शरीर शायद शीघ्र जड मूक आलसी हो जाये (अर्थात लिखना, पढ़ना और बोलना राम से बिलकुल छूट जाये) ॥ राम का शरीर अब कदाचित नीचे (देशों में) नहीं जासकेगा। अब राम को प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है कि गंगा (भागीर्थी) तट कभी नहीं छूटेगा, जहां कहीं सें राम को बुलावा (निमन्त्रण) आवेगा वहां सब जगह तुम्हें ही जाना पड़ेगा क्योंकि पूर्व वत तुम्हें ही फिर सब स्थानों पर भेजा जायेगा ॥ इसलिये ऐ प्यारे! जाओ, गुहा में खूब एकान्त सेवन करो, प्रति दिन असल राम (निज स्वरूप) में रह कर ऐन राम बनो, और वेदान्त की सच्ची मूर्त्ति (पक्की तस्वीर) बन कर निकलो, किसी प्रकार का शोक

तथा भय मत करो, नित्यशः अपने में और अपने साथ राम स्थित समझो, नित्यशः उसी का तन मन धन अपने को जानो...." यह हृदय वेधक उपदेश सुनते ही लेखक के नेत्रों से अश्रुपात होने लग पड़े। और अलग होने को नारायण (लेखक) स्वामी जी के चरणों पर गिरा हि था कि स्वामी जी के अपने अश्रू जारी हो गये। लेखक को ऊपर उठा कर घुट कर बगलगीर हुए (अर्थात प्रेम से घुट कर अपने अङ्ग लगाया) और कहा:—"बैटा! घबराना नहीं, गुहा में एकान्त रह कर खूब अध्ययन करना, नित्य आत्मचिन्तन में लगे रहना, और स्वरूप में खूब स्थिति रखना। जो लेख अभी लिखा जा रहा है जब संपूर्ण खतम होगा, राम तुम्हें ततक्षण बुला लेगा। और जब कुटिया के बन जाने पर राम मालिदेवल में आजावेगा, तो तुम बेशक आठ २ दिन के पीछे राम के पास वहां आते रहना। राम की शारीरक जुदाई का ख्याल अधिक मत करना, और न राम की शारीरिक सेवा का अधिक शोक करना॥ राम का शरीर तो अब बे हिस्सो हर्कत (जड वत) जल्द होने वाला है, तुम अब केवल अपनी वास्तव उन्नति का

ख़्याल रक्खो, किसी का सहारा (आश्रय) मत लो, अपने पाओं पर आप खड़े होना सीखो। सर्व प्रकार से पूर्ण वेदान्त की मूर्त्ति बनो, (अर्थात वेदान्त मुजस्सम हो जाओ) ॥ "

लेखक को वमरोगी गुहा में आये अभी केवल पांच दिन ही हुए थे कि स्वामी जी से एक दूत यह संदेश ले कर आया कि :—

> " जो लेख (अर्थात खुद मस्ती व तमस्सके .अरूज नाम का मज़मून) लिखा जा रहा था वह शीघ्र खतम होने वाला है, इसलिये आदितवार के दिन आप आवश्य आजाना और उसे साफ़ नक़ल कर देना, ताकि उस की साफ़ नक़ल रिसाला ज़माना या किसी अन्य उत्तम पत्र में छपाने को भेजी जावे ॥ "

इस संदेश के पाने पर लेखक ने आदित वार को स्वामी जी के पास स्वयं आना ही था कि उस से एक दिन पैहले अर्थात शनिवार की शाम को महाराजा साहिब के चपरासी ने आ कर यह सूचना दी कि " स्वामी जी का शरीर गंगा में बैह गया है,

और सब लोगों ने खबर देने के लिये मुझे आप के पास भेजा है॥"
इतना सुनना था कि लेखक अपने सब कार्य बन्द करके उसी दम टिहरी की ओर दौड़ा, और रात के आठ बजे से पहिले २ टिहरी नगर पहुंचा। सब लोग रुदन व शोक कर रहे थे। स्वामी जी के रसोया (भोला दत्त) को मिलने से निम्न लिखित हाल विदित हुआ:—

स्वामी जी और मैं (रसोया) दोनों अकट्ठे गंगा स्नान करने गये थे। मैं (रसोया) तो झट स्नान करके गंगा तट पर बैठ गया, और स्वामी जी व्यायाम (वरज़श) करके फिर गंगा में स्नानार्थ घुसे॥ बड़े तीव्र वेग वाले स्थान पर जा कर स्नान करने लगे। जल स्वामी जी की गर्दन से कुछ नीचे था, पहिले एक डुबकी लगाई, तद पश्चात बहुत काल तक उसी तीव्र वेग में खड़े रहे और बदन (देह) मलते रहे। जब दूसरी टुब्बी (डुबकी) लगाने लगे, तो पाओं के नीचे से एक बड़ा पत्थर फिसल गया, और स्वामी जी बड़े गैहरे (गम्भीर) जल में जा धसे। जब उस गम्भीर जल में खड़े न होसके, तो जल का तीव्र वेग उन को बहा ले गया, और आगे बहे जाकर स्वामी जी जल के एक भारी घूम (भंवर,

whirlpool) में फंस गये। वह (रसोया) बेचारह आदमियों की मदद के लिये इधर उधर भाग कर बलपूर्वक पुकारा, मगर मंदभाग्य से उस समय कोई पुरुष बाग़ में न पाया ॥ उस समय टिहरी के महाराजा साहिब गंगोत्री की तर्फ से वापस अपनी राजधानी को आ रहे थे, और बाग़ के सब लोग महाराजा साहिब को स्वागत (इस्तक़्बाल) करने के लिये बाग़ छोड़ कर टिहरी नगर से भी बाहर गये हुए थे, इसलिये देर तक चिल्लाने पर भी रसोया को कोई पुरुष मदद के लिये न मिल सका ॥ जब वह (रसोया) घबरा कर इधर उधर दौड़ कर बड़े ज़ोर से चिल्लाने लगा, तो स्वामी जी ने घूम के बीच में से ही उसे यह अवाज़ दी कि :—“ प्यारे ! घबराओ नहीं, हम आने का यत्न कर रहे हैं, अभी तेरे पास आये कि आये ” ॥ स्वामी जी ने (१०) दश या १५ (पंद्रह) मिनट तक बाहर तट पर पहुंचने की कोशश की, मगर घूम से बाहार निकलने न पाये ॥ जब बाहार निकलने के बहुत से यत्न ठीक न बैठे तो फिर स्वामी जी ने उसी घूम के अन्दर बड़े ज़ोर की डुबकी लगाई, जिसकी सहायता से वह घूम

से वीस क़दम (३० फुट) के फासले पर बाहर हो धारा के ठीक मध्य में जा निकले ॥ चूंकि जल में देर से यत्न कर रहे थे, भंवर (घूम) के ज़ोर ने उन का बल बहुत सा खर्च कर दीया था और शरीर भी पैहिले से शिथिल और दुर्बल था, इस लिये घूम से निकलते ही वहीं धारा के मध्य में उन का दम टूट गया। मुख में पानी भरने लग पड़ा। ना वरले किनारे और ना परले किनारे लग सके, बलकि तीव्र वेग के वश में आ कर धारा में बहे जाने लगे॥ जब शरीर परवश होगया तो स्वामी जी से एक दो वार ज़ोर से ॐ (ओम्) उच्चारण हुवा और बैह गये, और साथ २ हाथ पाओं को समेटते गये, अन्त में कोई (२००) दो सो गज़ की दूरी पर एक पर्वत की गुहा में जल ने दवा दीये। इधर से स्वामी जी का शरीर जल के तले बैठा ही था कि उधर से झट तोपें दगती सुनाई दीं ॥ यह तोपें वैसे तो महाराजा साहिब टिहरी की सलामी (स्वागत) में दगी थीं, परन्तु ठीक स्वामी जी के तिरोधान होने के समय पर दगने से द्विगुण (दो चंद) मतलब सिद्ध कर गयीं ॥ इसतरह से स्वामी जी का शरीर जल में समा गया अर्थात्

तिरोधान होगया ॥

रसोया के मुख से ऐसा शोचनीय (दर्द नाक) वृतान्त सुन कर चित्त पर अति ठेस (चोट) लगी। यह सब वृत्तान्त नारायण की अनुपस्थाति काल (ग़ैर हाज़री) में हुवा था, इसलिये कुछ तो इस कारण से दिल को पछतावा होता था और कुछ जलका राम के शरीर को विवश करके बहा लेजाना चित्त को दुःख देता था॥ नाना प्रकार के ख्याल उमंड २ कर चित्त को घेरने लगे॥ कभी अपने मनसे एसे पूछता, "कि राम तो अपनी इच्छा विना शरीर त्याग नहीं सक्ते थे अब पानी भला कैसे विना इच्छा (मर्ज़ी) राम के उन के शरीर को बहा ले गया? आया, राम की इच्छा तथा आज्ञा अनर्व, प्रबल तथा अनटल है या मुर्दाः जल का वेग?। राम तो सर्वदा यह कहा करते थे कि 'मौत को मौत न आजायगी, यदि राम का संकल्प (क़सद) कर के आयेगी'। परन्तु अब यह सब उस के उलट ही दिखाई दीया"॥ इधर तो अनेक प्रकार के ख्याल और वैह्म अपना रंग दिखाते थे और उधर लेखक जब स्वामी जी के निवास स्थान में जाता तो स्वामी जी की पुस्तकों के संदूकों पर नज़र

पढ़ते ही आंसुवों से भीग जाता, और दिल रो रो कर यूं (ऐसे) पुकारता कि "हाये ! इन (अनन्त) नोटों, अत्यन्त लाभदायक असंशोधित लेखों, उपदेशों और उत्तम २ पुस्तकों का संशोधन तथा उनकी उत्कृष्ट तरतीब और तशरीह (भाष्य) राम जैसी अब कौन करेगा ?" ॥ चित्त न तो स्वामी जी के निवास स्थान को जाने देता और न उन की किसी पुस्तक को देखने तथा पढ़ने को उद्यत होता ॥ नगर में जाता तो लोग शोक चर्चा ले बैठते जिस से ख्वाह मख्वाह चित्त शोकातुर होजाता । इस लिये कई दिन तक पागलों की तरह नारायण (लेखक) स्वामी जी के निवासाश्रम के बाहर गंगातट पर और जंगल में घूमता रहा ॥ लेखक को स्वामी जी के तिरोधान होने से इतना दुःख और पछतावा नहीं होता था जितना कि स्वामी जी की वाणियों तथा वाक्यों के ग़लत प्रतीत होने से हो रहा था। क्योंकि संन्यासावस्था प्राप्त होन के पश्चात् स्वामी जी सारी ज़िन्दगी (जीवन) भर लेखक को ऐसे ही कहते रहे और पत्रों द्वारा लिखते रहे कि:—"जब तक राम स्वयं नहीं चाहेगा शरीर को मौत (मृत्यु) कदाचित

नहीं आयगी इत्यादि।"

जब ऐसे पागल, उपराम और शोकातुर हुवा २ लेखक सर्व कामों को छोड़ बेकार घूमता २ टिहरी नगर में आनिकला तो प्यारे पूर्ण जी उधर प्रकट हुए॥ यह प्यारे लेखक से भी अधिक इस शोक में डूबे हुए थे और कहने लगे कि "राम का इसतरह जल के वश में आकर शरीर छोड़ना राम के कई वाक्यों और लेखों को झूठा और ग़लत साबत कर रहा है, इसलिये राम की अन्य वाणियों पर भी चित्त अब निश्चय करने में उद्यत नहीं होता। वरन (बलकि) रहा सहा निश्चय भी मलिया मेट हुए जा रहा है।" इस तरह परस्पर बात चीत होते २ जब पूर्ण जी को यह विदित हुवा कि नारायण (लेखक) मारे उपरामता के अभी तक राम की पुस्तकों और काग़जों को भी नहीं छूआ, और ना ही वह उस लेख (मज़मून) को कि जिस की नक़ल करने के लिये राम महाराज ने बुला भेजा था: नज़र भर कर देख सका, तो उन्हों ने लेखक को राम के निवास स्थान पर जाने के लिये उक्साया। जिस से उसी रात्रि को हम दोनों राम जी के आश्रम पर गये और रात्रि भर वहां आराम

कीया। दिन चढ़ते ही संन्दूकों और बाहर खुले कागजों को दत्त चित्त हो देखना प्रारम्भ कीया। एक दो खुले पत्रों (कागज़ों) को देखने के पश्चात् वह लेख* (मज़मून खुद मस्ती–व–तमस्सके .अरूज) जिस की खातर नारायण बुल्वाया गया था हम दोनों के हाथ पड़ गया। आदि से पढ़ा जाने लगा। अभी तक किसी पत्रे पर पृष्ठे का नम्बर नहीं दिया हुवा था। इस लिये उसका जो भी पन्ना (पत्रा) हाथ में पड़ा उसी को देखना आरम्भ कीया। इस प्रकार केवल एक दो वर्क़े (पत्रे) ही देखे थे कि एक वर्क़ाः (पत्रः) ऐसा हाथ में आया, जिस के एक तर्फ बहुत साफ निम्न लिखित लेख (मज़मून) लिखा हुवा था।

" **ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, गंगा, भारत !**

ऐ मौत (मृत्यु)! बेशक उड़ा दे इस एक जिस्म (शरीर)

---

* यह कुल लेख राम की क़लम (लेखनी) से लिखा हुवा नारायण ने राम मठमें सम्भाल कर रक्खा हुवा है ताकि जो राम भक्त इस असल को देखकर, या पढ़ कर आनन्द लेना चाहें वह सुगमता से ले सकें॥

को, मेरे और अजसाम (अनेक शरीर) ही मुझे कुछ कम नहीं। सिर्फ चांद की किरणें, चान्दी की तारें पैहन कर चैन से काट सक्ता हूं। पहाड़ी नदी नालों के भेस (वेश) में गीत गाता फिरूंगा। बहरे मव्वाज (लैहरें मारता हुवा समुद्र) के लिबास (पोशाक वस्त्र) में मैं ही लैहराता फिरूंगा। मैं ही बादे खुश खराम, नसीमे मस्ताना गाम हूं (अर्थात मैं ही आनन्द मय मंद स्पन्द तथा शीतल और सुगन्ध भरी वायु हूं) मेरी यह सूरते सैलानी (सैर करने वाली अथवा जलमय मूर्ति) हर वक्त रवानी (अस्थिर या चलायमान) में रहेती है। इस रूप में पहाड़ों से उतरा, मुरझाते पौदों को ताज़ाः कीया। गुलों (पुष्पों) को हंसाया, बुलबुल को रूलाया, दरवाज़ों (द्वार) को खट खटाया, सोतों को जगाया, किसी का आंसू पोंछा, किसी का घुंघट उड़ाया। इस को छेड, उस को छेड़, तुझ को छेड़। वह गया, वह गया। न कुछ साथ रक्खा न किसी के हाथ आया॥"

आखरी पङ्कति के नीचे एक लम्बी और मोटी रेखा (लकीर) खिची हुई थी

इस कुल लेख को पढ़ते ही हम दोनों के कुल वैहम, शक, गम और फिकर सब काफूर (दूर) हो गये और सब हृदयस्थ दुःख मलिया मेट हो गये । चित ठिकाने पर आ गया, बलकिः राम के शरीर छोड़ने का वृत (वाक्या) भी भूल गया ॥ फिर तो सब सन्दूक खोले । प्रत्येक कागज़ और पुस्तक संदूकोंसे नकाल कर दतचित से पढ़े गये । जितने नवीन उपदेश और लेख अंग्रेज़ी भाषा में लिखे हुए पाये वह सब के सब एक स्थान पर एकत्र कीये गये । और फिर शनैः २ विषयानुसार सात भागों में बांटे गये ॥ जो तीन जिल्दों में छापे गये हैं और लाला अमीर चंद प्रेम धाम बड़ा दरीबा देहिली के पते से मिलते हैं ॥

यह उर्दू भाषा का लेख जिस में स्वामी जी ने अपनी लेखनी से (काल भगवान) मृत्यु को बुलाया था, वह सारा का सारा खुले पत्रों में स्वामी जी की मेज़ पर पाया गया था । जब उन के रसोया से पूछा गया कि यह लेख कब और किस से मेज़ पर रखा गया था तो उस ने यह जवाब दीया:

" स्नान करने से कइ घंटे पेहिले स्वामी जी इन कागज़ों पर

कुछ लिख रहे थे । जिस समय यह कागज़ स्वामी जी के हाथ में थे, मुख उन का लाल, मस्त और जगमगाता था । आंखों से मोतियों के सदृश अश्रू (आंसू) टपकते थे । शरीर इस लेख के लिखने में ऐसा युक्त था कि हिलता भी नहीं था । उस काल स्वामी जी अपने ध्यान में ऐसे मैह्व (युक्त चित्त) थे कि दुन्या से बिलकुल बेखबर प्रतीत होते थे । मैं कितनी देर पास खड़ा रहा मगर मेरी ओर दृष्टि तक न की ॥ ग्यारह बजने लगे थे, मैं खबर देने आया कि भिक्षा त्यार है । आप उस काल भी बिलकुल समाधिस्थ थे । लेखनी और कागज़ हाथ से छूटे पड़े थे । दबे लबों से (मन्द आवाज़ से) मैं ने कहा " कि भगवन ! भिक्षा तय्यार है, " मगर कुछ न जवाब मिला । थोड़े काल पीछे फिर बोला, " कि महाराज ! भिक्षा आप की बाट ताक रही है " ॥ इस बार ज़रा ज़ोर से बोला था, स्वामी जी ने मेरी आवाज़ सुनकर आंखें खोलीं और पूछा ' बेटा ! क्या कहता है ? ' मैं ने प्रार्थना की कि ' महाराज ! भिक्षा त्यार हो-गयी है आप आज्ञा करिये, आप के स्नान की खातर जल ऊपर

लाऊं या आप गंगा तट पर जाकर स्नान करेंगे ' ॥ हंस कर बोले कि ' तुम ने खाना अभी तक कुछ खाया है या नहीं ' । मैं ने उत्त्र दीया कि ' महाराज ! मैं ने अभी तक कुछ नहीं खाया, मैं भी आज गंगा स्नान करके खाऊंगा ' ॥ मेरे इस उत्त्र पर स्वामी जी बहुत हँसे और मुझे आश्चर्यवत (हैरान* होकर) पूछा, ' कि आज, प्यारे ! तुम्हारे स्नान का क्या कारण है, तुम क्यों आज गंगा स्नान करके भोजन पाओगे ! ' मैं ने उत्तर दीया कि ' महाराज ! आज भारी पर्व का दिन है :—प्रथम तो दीपमाला है, द्वितीय संक्रान्त, और तीसरे अमावस्या है । इस लिये मैं भी आज गंगा स्नान करके ही भोजन पाउंगा ' ॥ स्वामी जी के पाओं पर व्यायाम करते समय किञ्चित् चोट लग गयी थी, दो चार दिन से वह ऊपर गंगा जल मंगवार कर स्नान करा करते थे, मेरे इस

---

* टिहरी पर्वत में द्विज लोग प्राति दिन गंगा स्नान नहीं करते । खास कर शीत काला में तो कई दिनों तथा मास के पीछे किसी खास पर्व के दिन गंगा स्नान करते हैं । इस लिये रसोया के गंगा स्नान की खबर ने स्वामी जी को आश्चर्य मय कर दीया ॥

उत्तर के सुनने पर उन्हों ने भी अपनी कुटी में स्नान करना उचित न समझा, और कहा कि अच्छा, प्यारे ! आज राम भी नीचे गंगा तट पर जाकर स्नान करेगा। चलो हम दोनों अकट्ठे ही चलें" ॥ इस प्रकार से स्वामी जी और मैं दोनों अकट्ठे गंगा स्नान करने चले गये ॥ स्वामी जी तो तट पर पहुंच कर व्यायाम करने लग पड़े। और मैं कपड़े उतार कर स्नान करने लग पड़ा। मैं स्नान करके तट पर बैठ गया, और स्वामी जी फिर स्नान करने गंगा में प्रविष्ट (दाखल) हुए, जिस के उपरान्त उन के बेह जाने का वृत्त (वाक्या) हुवा " ॥

रसोया के कुल कथन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि लेख को लिखते समय स्वामी जी का चित्त या तो शरीर के अति दुर्बल, शिथिल, रोगी और बिलकुल बेकार होने के कारण शारीरक जीवन (ज़िन्दगी) से अति उपराम हुवा २ था जिस से कि उन्हों ने मृत्यु को बुलाया और उसे शरीर के लेजाने की आज्ञा दी। या उन का चित्त अपने आनन्द स्वरूप में इतना अति मग्न, तृप्त, मस्त और डूब गया था कि उस अत्यन्तानन्द को पा कर फिर शरीर

को उठाये फिरना या उस की रक्षा में ज़रा सी वृत्ति देना उन्हें विषम (बोझल) और हानिकारक महसूस हुआ था जिस से कि मृत्यु को बुला कर इस को उड़ाना चाहा। और या जैसे श्री स्वामी शंकराचार्य जी ने उचित समझ कर अपने शरीर को जान बूझ कर हिमालय में जाकर वर्फों में गिला दीया था इसीतरह स्वामी जी ने भी शरीर को शिथिल, दुर्बल और बेकार समझ कर उचित अवसर पा, उसे जान बूझ कर गंगा में बहा दीया। परन्तु जल में शरीर के बचाने की खातर उन का देर तक लगातार यत्न करना इस अन्तम नतीजे को ठीक सिद्ध नहीं करता॥ खैर, पाठक ख्वाह कुछ ही नतीजा निकालें, राम महाराज का यह उपकारक शरीर ठीक दीपमाला (दिवाली) के दिन अर्थात् १७ अक्टूबर सन १९०६ तदनुसार संवत १९६३ कार्तिक की अमावस्या को दुपैहर के समय महाराजा साहिब टिहरी के बागीचे (सिमलासू) के नीचे भृगु गंगा में बैह गया और नित्य के लिये सब को अपनी जुदाई दे गया॥

एक सप्ताह के पीछे स्वामी जी का शरीर फूल कर जल से

बाहर निकल आया । फूला हुवा शरीर जब किनारे पर लगा, तो उस समय भी समाधि अवस्था में स्थित पाया गया । दोनों हाथ और बाज़ू (बाहें) अपनी छाती पर एक दूसरे के उपर रक्खे पालती लगाये नज़र आते थे । आखें बन्ध थीं मानो अभी भी समाधिस्थ हैं । गर्दन सीधी खड़ी हुई । मुंह ॐ कहते २ खुला हुवा, ऐसे स्पष्ट खुला हुवा था मानों अभी ॐ उच्चारण हो रहा है । आठ दिन तक जल के जीवों से शरीर जल में बचा रहा । बाहर आने पर एक सन्दूक में बन्ध रख कर संन्यासविध्यानुसार भागीर्थी गंगा में परवाहा दीया गया, और श्री गंगा जी ने अपने प्यारे को नित्य के लिये अपने में मला लिया ॥

महाराज साहिब टिहरी जिन को कि स्वामी जी से अति प्रेम था और जिन्हों ने स्वामी जी के बहे जाने का समाचार सुनते ही कैई घंटों तक अपने महल में उस रात्रि दीपमाला बन्द कर रक्खी थी जब स्वामी जी का शरीर बाहर निकल आया और अर्थी में रख कर गंगा ओर लेजाया जाने लगा तो उन्हों ने अपने सब दफतर बन्ध कर दीये ॥ इसी प्रकार जहां कहीं यह शोक समाचार

पहुंचा वहां शोक प्रकट करने अर्थ सभायें की गयीं ॥

स्वामी जी के शरीर का यह अति संक्षेप जीवन चरित सरल हिन्दी में दीया गया है, विस्तार पूर्वक चरित अंग्रेज़ी भाषा में प्यारे पूर्ण जी से लिखा जा रहा है जिस का अभी कुछ पता नहीं कि कब तिय्यार हो ॥ अपने विषय में जो कुछ स्वामी जी ने आप स्वतः लिखा हुवा था या जो उन से लेखक ने स्वयं सुना था या जो समय २ पर लेखक ने खुद देखा था या जो थोड़ा सा स्वामी जी के देह के संबन्धियों से सुना था वह कुल का कुल इस संक्षिप्त जीवन चरित में बहुत सरल भाषा में दीया गया है, इस से अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं ॥ इस जीवन चरित के छप जाने के पीछे स्वामी जी की लेखनी से लिखे हुए ११,०० ग्यारह सौ पत्र लेखक के हाथ लगे हैं। यह सर्व पत्र (खत) स्वामी जी ने कालिज के दिनों में अपने गृहस्थाश्रम के गुरु (भक्त धन्ना राम) जी को लिखे थे। पत्र व्यवहार स्वामी जी ने अपने गुरु जी के साथ ऐसे समय आरम्भ करा था जब उन की आयु लग भग १५ (पंद्रह) वर्ष के थी, और कालज में अभी नहीं गये थे ॥ इस लिये इन

पत्रों द्वारा स्वामी जी की बाल्यावस्था का हाल भी उन की अपनी लेखनी से पूरा २ प्रकट हो रहा है ॥ इन पत्रों के पढ़ने से मालूम हुआ कि जो वृत्तान्त स्वामी जी के विषय में उन के संबन्धियों इत्यादि से सुन कर (पृष्ठ १०, ११ व १८ से लेकर ३० तक और पृष्ठ ३४ से लेकर ३७ तक लेखक ने) दिया है वह वृत्तान्त यादि मतलब (तात्पर्य) रूप से तो कुछ ठीक उतरता है परन्तु एक २ शब्द करके बिलकुल पूरा नहीं बैठता। इस लिये यद्यपि विरुद्ध तथा ग़लत शब्दों को शुद्धिः पत्र में संशोधन करके दे दिया है तथापि प्रत्येक शब्द से वह वृत्तान्त मानने योग्य नहीं ॥ अब यह हिन्दी राम वर्षा अपनी असली भाषा (उर्दू) में छपने लगी है, आशा है कि उस उर्दू राम वर्षा के प्रस्ताव में यह वृत्तान्त ठीक रीति से दिया जायगा ॥

पृष्ठ ३८ से लेकर अन्तिम तक कुल वृत्तान्त लेखक का अपना देखा हुआ है या स्वामी जी से सुना हुआ है इस लिये वह सम्पूर्ण रीति से मानने योग्य है ॥

स्वामी जी के संक्षिप्त पत्र भी उर्दू भाषा में छप रहे हैं, आशा

है कि दो या तीन मास के अन्दर २ एक पुस्तकाकार में वह निकलेंगे। और लाला अमीर चन्द प्रेम धाम बड़ा दरीबा देहिली के पते से मिलेंगे, अन्य भाषा में स्वामी जी की पुस्तकें भी उन ही से मिलेंगी ॥

नारायण स्वामी

शिष्य श्रीमान मुक्त पुरुष स्वामी राम तीर्थ जी

महाराज

विषय सूचि.

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ

वेदान्त.

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ

माया और उस की हक़ीक़त.

तीन शरीर और वर्ण.

नम्बर | विषय वार भजन | पृष्ठ

नम्बर विषय वार भजन पृष्ट

भारत वर्ष.

राम वर्षा

दूसरा भाग.

राम की विविध लीला.

वेदान्त.

आज़ादी.

(१) सोहनी ताल दीपचंदी

वल वे आज़ादी खुशी की रूह उम्मीदों की जां ।
बुलबुलासां दम से तेरे पेच खाता है जहां ॥
मुल्क दुन्या के तेरे बस इक[1] कृशमा पर लड़े ।
खून के दर्या बहाये नाम पर तेरे मरे ॥
हाय मुक्ति, रस्तगारी[2], हाय आज़ादी नजात[3] ।

१ नाज़, नगह २ छुटकारा ३ मुक्ति

मक़्सदे[4] जुमला[5] मज़हब[6] है फक़त तेरी ही ज़ात॥
उंगलयों पर बच्चे गिन्ते रहते हैं हफ़तः के रोज़।
कितने दिन को आयेगा यकशंबः[7] आज़ादी[8] फरोज़॥
रम ब्रांडी के मुकैयद[9] सच्ची आज़ादी से दूर।
हो गये नशे पै लट्टू, बैहरे आज़ादी[10] सरूर॥
साहबो! यह नींद भी मीठी न लगती इस क़दर।
क़ैदे तन से दो घड़ी देती न आज़ादी अगर॥
क़ैदे में फंस कर तड़पता मुर्ग है हैरान हो।
काश[11]! आज़ादी मिले तन को नहीं तो जान को॥
लम्हा[12] जो लज्ज़त मज़े का था वह आज़ादी का था।
सच कहें, लज्ज़त मज़ा जो था वह आज़ादी ही था॥
क्या है आज़ादी? जहां जब जैसा जी चाहें करें।
खाना पीना ऐश[13] गुलछर्रों में सब दिन काट दें?॥

४ नतीजा (असली गज़) ५ सब ६ मज़हब, धर्म ७ आदित्त वार ८ आज़ादी देने वाला ९ क़ैदी १० आज़ादी के आनन्द की खातर ११ ईश्वर करे १२ एक पल १३ विषय भोग

राग शादी नाच .ईशरत[14] जलसे रंगा रंग के ।
बंगले बाग़ात आली....योरोपीयन[15] ढंग के? ॥
क़ता[16] टोपी की नयी फैशन नराला बूटका ।
दिलकशो[17] बेदाग़ खुलना बदन पर वह सूट का? ॥
दिलको रंगत जिस की भाये शादी[18] बेखटके करें ।
धर्म की आयीन[19] चुपके ताक पर तै कर धरें? ॥
खच्चरें फिटन के आगे कोचवान् का पोश पोश ।
अबलक़ों[20] का वह निकलना, हिनहिना जोश जोश? ॥
कोट पैहनाता है नोकर, जूता पैहनाये .ग़ुलाम ।
नाक चढ़ाता है आक़ा, जल्द बेनुतफा हराम! ॥
मुंह में घट घट सोडावाटर और सिगारों का धूंवा ।
ज़ोफ़[21] की दिल में शकायत, राम की अब जाः कहां? ॥
क्या यह आज़ादी है? हाय! यह तो आज़ादी नहीं ।

१४ विषयानन्द १५ अंग्रेज़ों की तर्ज़ के मकान १६ वज़ा तर्ज़ १७ दिल को खैंचने वाला १८ खुशी १९ क़ानून (आज्ञा) २० घोड़े २१ कमज़ोरी

गोये[२२] चौगां की प्रेशानी है-आज़दी नहीं ॥
अस्प[२३] हो आज़ाद सरपट, कैद होता है स्वार।
अस्प हो मुतलक़[२४] .इनां[२५], हैरान रोता है स्वार ॥
इंद्रियों के घोड़े छूटे वाग डोरी तोड़ कर।
वह मरा वह गिर पड़ा, स्वार सिर मुंह फोड़ कर ॥
ताज़ी[२६] तौसन तुंदख़ो[२७] पर दस्तो पा[२८] जकड़े कड़े।
ले उड़ा घोड़ा मिज़प्पा[२९] जान के लाले पड़े ॥
जाने मन[३०] आज़ाद करना चाहते हो आप को।
कर रहे आज़ाद क्यो हो आस्तीं[३१] के सांप को ? ॥
हां वह है आज़ाद जो क़ादिर[३२] है दिल पर जिस्म पर।
जिसका मन काबू में है, .कुदरत[३३] है शकलो इस्म पर ॥

२२ खेलने वाले गैंद २३ घोड़ा २४ बिलकुल २५ लगाम डोरी मे काबू कीया हुवा २६ .अर्बी घोड़ा २७ बदमज़ाज़ तेज़ २८ हाथ पांवों जकड़े हूवे २९ .अर्बी घोड़ेका नाम है ३० ऐ मेरी जान (प्यारे) ३१ बगल, कखारियाली ३२ बलवान ३३ ताकत, बल

ज्ञान से मिलती है आज़ादी यह राहत[34] सर बसर[35]।
वार के फैंकूं मैं इसपर दो जहां का मालो ज़र[36] ॥

३४ आराम ३५ लगातार ३६ धन, दौलत

---

२ वेदान्त आलमगीर

(१) गर कमिशनर हो लाट साहब हो।
या कोई और ग़ैर साहब हो॥
हर कोइ उस तलक नहीं जाता।
अधिकारी ही है दखल पाता॥
लैक[1] जब अपने घरमें आना हो।
कौन है उस वक़्त जो मानेः[2] हो॥
जब कोई अपने घर को आता है।
हैफ उस पर है, रोकता जो है॥
हो जो वेदान्त ग़ैर से यारी।

१ लेकन २ मना करने वाला

तब तो कहना बजा था अधिकारी ॥
यह तो जी! अपने घरकी विद्या है।
पाना इस को फर्ज सब का है ॥
"मैं हूं खुद ब्रह्म" यह करो अभ्यास।
मैं नहीं जिस्मो[3] इस्मो नौकर दास ॥
"मैं हूं बेलौस[4] पाक आला ज़ात"।
जैहल की हो कभी न जिस में रात ॥
मैं हूं खुर्शेदे[5] तेज़ अनवर[6] आप।
मैं था ब्रह्मा का बाप सब का बाप ॥
वेद है मेरा एक खर्राटा।
भेद दुन्या का मेरा खर्राटा ॥
राम कहता नहीं है सैकंडहैंड[7]।
वह तो खुद है श्रुति, न सैकण्डहैंड ॥
वह जो कमज़ोर आप होते हैं।

३ शरीर और नाम ४ बग़ैर कलंक, बेदाग़ ५ सूरज ६ प्रकाशों का प्रकाश ७ दूसरे से सुनी सुनाई

लुक़्माये तीन ताप होते हैं ॥
हों न पढ़ाने के जो अधिकारी ।
उन को मिलता नहीं है अधिकारी ॥

(२) एक दफा देव ऋपि नारद ने ।
रैहम कर खूंक से कहा उस ने ॥
"चल तुझे लेचलेंगे हम वैकुंठ ।
लीला अद्भुत वचित्र है वैकुंठ" ॥
खूक बोला ग़ज़ब से तब नादां ।
"क्या मुझे मिल सकेगा कीचड़ वां?" ॥
जब ऋषी ने कहा "नहीं यह तो" ।
खूक बोला "मैं जाऊं काहे को?" ॥
यह न समझा वहां जो जाऊंगा ।
जिस्म भी तो नया ही पाऊंगा ॥
हवसे दुंन्या के प्यारे शहतीरां ! ।

८ ग्रास ९ लायक़ १० वराह, सूवर ११ वहां से मुराद है १२ दुन्या के लालची

ऐ सतूनहाये दुन्या या वोहतान[13]! ॥
तुम न जी में ज़रा भी घबराओ ।
खटका मुतलक़ न दिलमें तुम लाओ ॥
"हाये! वेदान्त क्या ही कर देगा ।
ज़ेर[14] कर देगा, ज़बर[15] कर देगा ॥
तुम रखो अपने जी में इतमीनान[16] ।
शक नहीं इस में इक रत्ती भर जानू ॥
गर अत्रारज़[17] तेरे बदल देगा ।
साथ तुम को भी और कर देगा ॥
लोटना छोड़ियेगा कीचड़ में ।
ज़ालसाज़ी में झूठ की जड़ में ॥
खाक दुन्या की मत उड़ायेगा ।
असल अपना न भूल जायेगा ॥

१३ झूटे १४ नीचा १५ ऊंचा १६ हौंसला, तसल्ली
१७ इर्दगिर्द, दुःख

"मैं हूं यह जिस्म", फोहश बोली है।
स्वांग छोड़ो, सितम यह होली है ॥

(३) मिसर की खोद लें जो मीनारें।
हाये मुर्दों भरी वह मीनारें ॥
मम्मी मुर्दे उन्हों में रखे थे।
ऐसी तरकीबो अक़्लमन्दी से ॥
गो हज़ारों बरस भी हों बीते।
मुर्दे आते नज़र हैं जूं जीते ॥
प्यारे भारत के हिन्दू बाशन्दो!।
गुस्सा मत करना, ज़ाहदो रिन्दो[11]!॥
जी रहे हो कि मर गये हो तुम?।
मम्मी मीनार बन गये हो तुम? ॥
जीते तुम थे ऋषी मुनी थे जब।
मम्मी क्यों हो हज़ार साल के अब!॥

१८ गज़ब की होली १९ कर्मकाण्डी २० मस्त

क्यों हो ज़िन्दा* वदस्ते मुर्दा आप ।
नाम रौशन डवोया उन का आप ॥
वह तो जीते थे तुम भी जी उट्ठो ।
मुर्दा वच्चे न उन के हो वैठो ॥
नाम तो ले रहे हो व्यास का तुम ।
काम करते हो अदना दास का तुम ॥
वेटा वही सपूत होता है ।
वाप से वढ़ के जो पूत होता है ॥
छोड़ दो नाम लेना ऋषीयों का ।
खुद ऋषी हो अगर न अव वनना ।
जव यह कहता है एक नालायक़ ॥
"भृगू मेरा वज़र्ग था लायक़"
भृगू मनंसूव[21] उस से होता है ।
शर्म से [1]अर्क़ [2] रोता है ॥

२१ नसल से निसवत रखना * जीते जी मौत के हाथ होना 1 पसीना २ रोना

दुःख मत दो उन्हें सताओ मत ।
शर्म से सर नगूं[22] बनाओ मत ॥
नाम *लेवे, .अजब मिले ऐसे ।
धब्बे यह नाम को लगे कैसे? ॥
मूछ दाढ़ी लगा के बुड्ढे की ।
बच्चा बूढा नहीं कभी होगा ॥
उस को वाजब है तरबीयत पाये ।
वक़्त पर यूं बज़ुर्ग ही होगा ॥
उन की डाढ़ी लगाया चाहते हो ।
तरबीयत[23] से गुरेज़[24] करते हो ॥
है मुनासब बज़ुर्ग की ताज़ीम ।
खंदः[25] और न, चाहे तकरीम[26] ॥
बूढा खाता है खिचड़ी पतली रोज़ ।

२२ नीचे सिर २३ पालन पोसन, तालीम पाना २४ भागना २५ हंसी २६ .इज्ज़त * नाम लेने वाले

नक़ल से कब जवां हो पीरोज़[27] ॥
प्यारे! वनियेगा आप ज़िन्दाः पीर।
उन वज़ुर्गों की मत बनो तस्वीर ॥
नक़्श जब है उतारता नक़्क़ाश ।
तकता रहता है असल को नक़्क़ाश ॥
नक़्श यह गरचिः वादशाह का हो ।
फिर भी मुर्दा है, ख्वाह किसी का हो ॥
फ़ेल अतवार[28] ऋषीयों मुनीयों के ।
ऋषी तुम को नहीं बना सकते ॥
.अमल ज़ाहर जो उन को ज़ेवा थे ।
वक़्त था और,-और ही दिन थे ॥
जिस्म उन के थे जो, उन्हीं के थे ।
वह तुम्हारे नहीं कभी होंगे ॥
करके तक़लीद[29] तुम बना ही लो ।

२७ बुड्ढा २८ तरीके, कर्म २९ उपर की देखा देखी, वग़ैर दर्याफ़त के किसी की पैरवी करना, या नक़ल करना

सूरते शेर, नाँरह[30] क्योंकर हो ॥
आओ तजवीज़ एक बतलायें ।
ऋषी बनने की बात जतलायें ॥
देह सूक्ष्म को और कारण को ।
चीर कर चढ़िये मिहरे[31] रौशन को ॥
चढ़िये ऊपर को असल अपने को ।
ज़िंदगी तुम में भी ऋषी की हो ॥
मिहरे रौशन जो आत्मा है तेरा ।
यह ही वासिष्ट कृष्ण राम का था ॥
उस में निष्ठा नशस्त कर मुखतार ।
छोड़िये ज़िकरो फिकर सब बेकार ॥
नक़ल मत कीजीये फेले बेरूनी[32] ।
आत्मा एक ही है अन्दरूनी ॥

३० गर्ज ३१ प्रकाश स्वरूप सूरज (आत्मा) ३२ बाहर के कर्मों की

ब्राह्मणो! आप सीख लो विद्या।
फिर यह घर घर फिरो पढ़ाते जा॥
और क़ौमें तुम्हारे बच्चे हैं।
गर शक़ायत करें, वह सच्चे हैं॥
जबर से, क़ैहर[33] से, महब्बत से।
ज्ञान दीजे उन्हें मुरव्वत[34] से॥
वक़्त उपदेश को अगर दोगे।
तो ही क़ायम स्वरूप में होगे॥
गंगा हर वक़्त वैहती रहती है।
साफ निर्मल जभी तो रहती है॥
कांटे बोता है, झूट हो जिस में।
याद रखना, है मौत ही उस में॥

३३ गुस्से ३४ मरदानगी से

(३) ज्ञान के बिना शुद्धि नामुमकन

पिदरे[1] मजनू ने पिदरे[2] लैली से।
गिरया[3] ज़ारी से आ कहा उसने॥
मेरी सारी रियास्तें लीजे।
.उमर भर तक .गुलाम कर लीजे॥
मेरे लड़के को लैली जादू चशम।
दीजे छोड़ दीजे आखर खशम[4]॥
पिदरे लैली ने फिर महब्बत से।
यूं कहा प्यार ही का दम भर के॥
मैं तो हाज़र हूं लैली देने को।
.उज़र कोई भी है नहीं मुझ को॥
पर वह आखर जिगर का टुकड़ा है।
न वह पत्थर शजर[5] का टुकड़ा है॥

१ मजनू (एक आशक़ हूवा है) का पिता २ लैली (माशुक़ाः) का पिता ३ रोते रोते ४ .गुस्सा, खफगी ५ वृक्ष, दरखत

वह भी इन्सान शिकम से आयी है।
आस्मां से तो गिर न आयी है॥
क़ैस[6] तुम को अज़ीज़ बेशक है।
पर वह *मजनू है, इस में क्या शक है॥
ऐसी हालत में लड़की क्योंकर दूं।
इक जनूनी के मैं गले मढ़ दूं ?॥
मर्ज़ मजनू का पैहले दूर करो।
सिर से सौदा[7] अगर काफूर करो॥
शौक़ से लीजे, तब तुम्हारी है।
लैली दौलत यह सब तुम्हारी है॥
हाय ज़ालम सितमगर बे रेहम!।
वाये नादां ग़रूर सूरते ज़ेहम[8]!॥
देता लैली को वाये आज नहीं।
और मजनू का तो अलाज नहीं॥

६ मजनू ७ पागल पन ८ दुःखरूप (तकलीफ देने की सूरत वाला) * पागल

और तो सब इलाज कर हारा ।
बचता मजनू नहीं वह बेचारा ॥
मारा मजनू बग़ैर लैली के ।
था न *चारा बग़ैर लैली के ॥
हिन्दू पंडित महात्मा साधो ! ।
जी कड़ा क्यों है? रैह्म को राह दो ॥
जीव मजनू बना है दीवाना ।
दशते ग़म छान्ता है वीराना ॥
दशते दुन्या में वैहशी आवारह ।
लैली "आनन्द" के लीये पांरा ॥
लैली समझे गुलों को चुनता है ।
फिर पड़ा सिर को अपने घुनता है ॥
सर्रु को जान कर यह लैली है ।
वैहम से जान अपनी खो दी है ॥

*इलाज ९ दुन्या के जंगल १० बेक़रार ११ एक वृक्ष का नाम है

चशमे आँहू[12] को चशमे लैली मान।
पीछे भटका फिरे है हो हैरान॥
असली आनन्दे .जात से महरूम[13]।
खारो खस[14] में मचा रहा है धूम॥
गाह[15] आनन्द ज़र को माने है।
बौल[16] में गाह खाक छाने है॥
लोग कहते न हों बुरा मुझ को।
नंग रह जावे, नाक हाथी को॥
राये लोगों की, अहो मुतग़य्यर[17]।
इस के पीछे फिरे है मुतहय्यर[18]॥
सारी वहशत[19], यह वादियां[20] गर्दी।
लैली खातर है, जुमला[21] सिरदर्दी॥

१२ मृग की आंख १३ बेखबर १४ खाक मट्टी में १५ कभी १६ मूत, पेशाब (पेशाब की जगह) १७ बदलने वाली १८ हैरान हुए २ १९ हैवान पना, पशुपन २० जंगलों में घूमना २१ सब, कुल

लैली मिलते जुनूं[22] जायेगा ।
ब्रह्म विद्या बेदूं[23] न जायेगा ॥
शम दम आयेंगे ब्रह्म विद्या से ।
फ़िकर जायेंगे ब्रह्म विद्या से ॥
शम हो पैहले, ज्ञान पीछे हो ।
सेर[24] होलें, तुआम[25] पीछे हो ॥
हाये! पंडित ग़ज़ब यह ढाते हो ।
उलटी गंगा पड़े वहाते हो ॥
यह इसी पाप का नतीजा है ।
डूबे दुःखों में आज जाते हो ॥
वेद दानो! यह मौत मत रखना ।
[26]धीः को, बुद्धि को घरमें मत रखना ॥
लड़की घर में न ज़ेब* देती है ।

२२ पगलापन २३ विना, बग़ैर २४ पेट भर कर रज जाना, २५ भोजन, खाना २६ बेटी—लड़की रूपी बुद्धि * अच्छी लगना

धन पराया फरेब देती है ॥
ब्रह्म विद्या का दान अब कर दो ।
वरना .इज़्ज़त से हाथ धो बैठो ॥
वक़्त देखो, समय को संभालो ।
ज़ात क़ायम हो, काँया[27] पलटा लो ॥
नंगो नामूस अब इसी में है ।
बचना ज़िल्लत से बस इसी में है ॥
डूबा तारा तुम्हारा पूरब को ।
ब्रह्म विद्या चली है यूरप को ॥
हिंद मजनूं बना है दीवाना[28] ।
तलमलाता है मिसले[29] परवाना ॥
मुयदहे[30] वसल अब सुना देना ।
खुशो खुर्रम[31] अदा से गा देना ॥

२७ शरीर २८ पागल २९ पतंग की तरह ३० मुलाक़ात (आत्म साक्षात्कार) की खुशखबरी ३१ प्रसन्न मुखड़े

वेद का फर्ज़ यह चुका देना ।
फर्ज़ अपना यह कर अदा देना ॥

---

(४) गुनाह.

पाप क्या है? गुनाह कितने है? ।
दाखले[1] जैहल सारे फितने हैं ॥
आत्मा जिस्म ही को ठेहराना ।
बूटा पापों का यह है लगवाना ॥
आत्मा पाक[2], हस्त[3], बरतर है ।
.इल्म वाहिद[4], सरूरो अकबर[5] है ॥
जिस्म को शाने आत्मा देना ।
रात को आफताब कह देना ॥
किज़्बो[6] बुतलां[7] यही है पाप की जड़ ।

१ अज्ञान में दाखल २ शुद्धि ३ सत्ता मात्र, वास्तव वस्तु ४ अकेला ५ धनानन्द ६ झूठ ७ बेअसल

एक ही जैहल तीन ताप क़ी जड़ ॥
क्या तर्कब्बर[8] है ? किब्रियाई[9]-ए-ज़ात (को) ।
वेच देना द्रोग़[10] जिस्म के हात ॥
क्रोध क्या है ? जलाले[11] वाहदे .जात (को) ।
वेच देना द्रोग़ जिस्म के हात[12] ॥
क्या है शहवत[13] ? सरूरे[14] पाके .जात ।
वेच देना हक़ीर जिस्म के हात ॥
क्या .अदावत[15] है ? पाक वहदते ज़ात ।
वेच देना हक़ीर[16] जिस्म के हात ॥
*हिर्स क्या ? सब पै कब्ज़ा-ए-कुल्ली[17]-ए-ज़ात ।
वेच देना हक़ीर जिस्म के हात ॥
मोह क्या है ? .क्यामे यक्सां[18] ज़ात ।

८ अहंकार ९ स्वरूप की वड़ाई १० झूठा ११ एक्ता (स्वरूप) की रौणक़ १२ हाथ, कर १३ विषयानन्द १४ शुद्ध स्वरूप का आनन्द १५ दुशमनी १६ नाचीज़ १७ सर्व व्यापक की मल्कीयत (सर्वव्यापकता) १८ एक रस स्वरूप की स्थिरता * लालच

बेचदेना हक़ीर जिस्म के हात ॥
बस गुनाह क्या है? आत्मा का हक़ ।
जेहल को छीन देना हक़-नाहक़ ॥
हस्ते[19] मुतलक़ का जैहल में संसर्ग[20] ।
तोशा[21] है पाप का, गुनाह का वर्ग[22] ॥

१९ सतस्वरूप २० दाखल २१ भार, असबाब, ज़खीरा
२२ पत्ता, फल

---

(९) कलियुग.

सच्चे दिल से विचार कर देखो ।
तुम ने पैदा कीया है कलियुग को ॥
"मैं नहीं हूं खुदा" यह कलियुग है ।
"जिस्म ही हूं" यकीन यह कलियुग है ॥
"जिस्म है आत्मा" यह कलियुग है ।
चार वाकों का मत, यह कलियुग है ॥
खाऊं पीवूं मज़े उड़ाउंगा ।

हां विरोचन[1] का मत, यह कलियुग है ॥

बंदा:-ए-जिस्म ही बने रहना ।

सब गुनाहों का घर, यह कलियुग है ॥

जिस्म से कर नशिस्त[3] अपनी दूर ।

*हू जीये आत्मा में खुद मसरूर[4] ॥

जिस्म में गर निवास रक्खोगे ।

ज्ञान से गर हॅरास रक्खोगे ॥

पाप हरगज़ न छोड़ेंगे हरगज़ ।

ताप हरगज़ न छोड़ेंगे हरगज़ ॥

दूर कलियुग अभी से कीजेगा ।

दान दीजेगा, दान दीजेगा ॥

ठीक कर जुग है, यह नहीं कलियुग ।

दान कर दूर, कीजीये कलियुग ॥

१ उसका नाम है, जो केवल शरीर को आत्मा करके मानता और पूजता था २ शरीर के .गुलाम बने रहना ३ बैठक स्थिति ४ आनन्द ५ भय *हो जाइये, या हो बैठीये

हिंद पर गैहन[६] लग गया काला ।
दान देने से वोल हो बाला ॥

६ ग्रहण

---

(६) दान

दान होता है तीन क़िस्मों का ।
अन्न का, .इल्म का, व .इर्फ़ान[१] का ॥
अन्न का दान एक दिन के लीये ।
जिस्म बेरूं[२] को तक़वीयत[३] देवे ॥
.इल्म का दान, .उमर भर के लीये ।
जिस्म *दायम को कर धनी[४] देवे ॥
दान .इर्फ़ां का तो अबद[५] दायम ।
कर सरूरे[६] अज़ल में दे क़ायम ॥

१ आत्म ज्ञान (ब्रह्मविद्या) २ बाह्य (स्थूल शरीर) ३ पुष्टि ४ धनवान ५ नित्य, हमेशा के लीये ६ अनादि निजानन्द *यहां मुराद सूक्ष्म शरीर से है ॥

सब से बढ़ कर तो तीसरा है दान।
दान इर्फ़ां का, ज्ञान ही का दान॥
पंडितो! ज्ञान दान दीजेगा।
हिंद में आम दान दीजेगा॥
गिर्यां कलियुग का, गहन है बाक़ी।
कमर है ज्ञानदान देने की॥
लो बला टल गयी है, वाह वाह वा।
हिंद रौशन हुवा है, आहाहा हा॥
जाओ कलियुग, यहां से जाओ तुम।
भागो भारत से, फिर न आओ तुम॥
हुक्म नातक़ है राम का तुम पर।
बंधिये बिस्तर को, अब उठाओ तुम॥
हिंद ही रह गया है, क्या तुम को।
आग में, जलमें, सिर छुपाओ तुम॥

७ रोना ८ ग्रहण ९ सख़्त हुक्म—न टूटने वाला

(७) नै

ख़ाली बिलकुल है बांस की यह नै[1] ।
चन्द सूराखदार बेशक है ॥
बोसा[2] देता है उस को जब नाँई[3] ।
निकस उस नै से सात सुर आई ॥
रागनी राग सब हूये ज़ाहर ।
मुख्तलिफ़ भाग सब हूये बाहर ॥
एक ही दम ने यह सितम ढाया ।
कलेजा अब बल्लीयों[4] उछल आया ॥
सब सुरों में जो मौज मारे है ।
दम वह तेरा ही कृष्ण प्यारे है ॥
दम तो फूंके था एक मुरलीधर ।
मुख्तलिफ़ ज़मज़मे[5] बने क्योंकर? ॥

१ बांसरी २ चुमी, चूमना ३ बांसरी बजानेवाला ४ कलेजा आनन्द से इसक़दर अजहद लैहराने लगा कि खुशी अन्दर न समा सकी ५ राग, गीत, सुरें

साम[६]यः बाँसरा[७]:, ख्यालो अक़ल ।
सब में वासिल[८] हूवा, करे है नक़ल ॥
मर्द, औरत, गदा[९] में, शाहों में ।
क़हक़हों चैहचहों में आहों में ॥
क़ुतब[१०] तारे में, मिहर[११] में, माह[१२] में ।
झोंपड़े में, महलसरा, राह में ॥
एक ही दम का यह पसारा है ।
सब में वासल है, सब से न्यारा है ॥
दारे[१३] दुन्या की इक तहीने[१४] में ।
प्राण तेरे ने राग फूंके हैं ॥
तू ही नाई है, कृष्ण प्यारा है ।
सारी दुन्या तेरा पसारा है ॥

६ सुनने की शक्ति ७ देखने की शक्ति ८ मिला हुवा ९ साधू, फक़ीर १० ध्रुव ११ सूरज १२ चांद १३ दुन्या का घर (धाम) १४ खाली (खोखली) बांसरी

(८) शीश मन्दर.

शीश मंदर में इक दफा बुल[1] डाग।
आ फंसा तो हुवा बगोला आग॥
जौक़[2] दर जौक़ पलटनें सगँ[3] थे।
ठँट[4] के ठट लग रहे थे कुत्तों के॥
सख्त झुंजलाया यह, वह झुंजलाये।
चार जानब से तैश[5] में आये॥
बिगड़ा मुंह उस का, वह भी सब बिगड़े।
जब यह उछला, वह सब के सब कूदे॥
जब यह भौंका, सदाये गुम्बज़[6] से।
क्या ही औसाँ[7] खता हूये इस के॥
"मैं मरा, मैं मरा" समझ कर वाये!।
मर गया डाग, सिर को धुन कर वाये!॥

१ एक कुत्ते का नाम है २ गरोह के गरोह ३ कुत्ते ४ झुंड ५ गुस्सा ६ गुम्बज़ की आवाज़ ७ आश्चर्यमय, घबराहट युक्त चित्त

शीश मंदर में आ के दुन्या के ।
जाहिले ग़ैर दान मरा भौंके ॥
वहम में क्यों भरमता जाता है ।
अपने आपे में क्यों न आता है ॥

(९) दार्ष्टान्त

गौड मालक मकान का आया ।
मर्दे दाना ने जल्वा फरमाया ॥
रूये .जेबा को हर तरफ पाया ।
फुर्ते शादी से सीना भर आया ॥
फर्शे अतलस नफीस झालरदार ।
.अतरो .अंबर लतीफ खुशबूदार ॥
तख़्ते *.जरीं पै रेशमी तकिये हैं ।
गद्दे मख़मल के .जेब देते हैं ॥

८ द्वैत देखने वाला बेवकूफ ९ ईश्वर १० सजा हुवा मुंह ११ आनन्द की अधिकता *सुनैहरी तख़्त.

बैठा ठस्से से जीनते[12] खाना।
गुद गुदी दिल में, झूमता शाना[13]॥
जब नज़र चार[14] सू उठा देखा।
कुछ न अपने से मासवा देखा॥
अगरचि वाँहद[15] था, पर हज़ारों जाँ[16]।
जल्वा[17] अफगन रूये सफा देखा॥
गाह[18] मूछों को ताओ दे दे के।
सूरते वीर रस में आ देखा॥
करके शृंगार कंघी पट्टी का।
पान होंटों तले दबा देखा॥
तेग़[19] मिसरी की देखने के लीये।
प्यारी प्यारी भंवें चढ़ा देखा॥
खंदाः[20]-ए-गुल की दीद[21] की खातर।

१२ घर को रौनक देने वाला १३ कंधे १४ तरफ १५ अद्वैत १६ स्थान १७ प्रकाशमान १८ कभी १९ तलवार २० खिला हुवा पुष्प (फूल) २१ निगाह, नज़र, दृष्टि

क्या तैः दिले[22] से खिलखिला देखा ॥

अब्रे[23] नेसां का लुतफ लेने को ।

तार आंसू का भी लगा देखा ॥

और देखे है जैसे इस तन को ।

इस तरह इस से हो जुदा देखा ॥

अक्स[24] इक छोड़ असल को आये ।

सब वजूदों[25] में फिर सभा देखा ॥

गोलीयां पीली काली सुर्ख और सबज़ ।

मुंह से अपने नकाल बाज़ीगर ॥

आप ही देखता है अपने रंग ।

आप ही हो रहा है मुतहय्यर[26] ॥

बैठ हर तरह शीश मंदर में ।

ठाटी पट्ठे ने वन बना देखा ॥

२२ दिल भर कर २३ वर्षा ऋतु का बादल २४ प्रतिबिम्ब
२५ वजूदों (शरीरों) में २६ आश्चर्य, हैरान्

(शुशुपति) मस्त कारण शरीर बन बैठा ।
चार कूटों में लेटता देखा ॥ (व्यष्टि)

(स्वप्न में) खुद जो जिस्मे ख्याल को धारा ।
जुमला[27] .आलम ख्याल का देखा ॥ (समष्टि)

(जाग्रत में) जागी सूरत क़बूल की जब खुद ।
सब को फिर जागता हुवा देखा ॥

तुझ से बढ़ कर हूं, तेरा अपना आप ।
मुझ को अपने से क्यों जुदा देखा ? ॥

एक ही एक .जाते वाहिद[28] राम[29] ।
जुमला सूरत में जा बजा देखा ॥

गद्दी तकिये से मैं नहीं हिलता ।
हिलता किस ने सुना है या देखा ॥

क्यों खुशामद की बात करते हो ।
शीशे मसनद[30] मकान ही कब था ॥

२७ कुल समस्त २८ अद्वैत तत्त्व २९ कवि का नाम और ईश्वर से भी मुराद है ३० गद्दी, तखत

यह तो सब इक ख्याली लीला थी।
मौज में अपनी आप ज़ाहर था॥
मौज भी आप, लीला वीलॅा[31] आप।
लाल नुत़्क़ो[32] ज़ुबां, यां पर था॥
नुत़्क़ में और शब्द में मौजूद।
एक वाहद सफोट रौशन था॥

३१ खेल इत्यादि ३२ अक़्ल, समझ, हैरान् था

---

(१०) कोहे[1] नूर का खोना

ज़ेरे नादर[2] हुवा महम्मद शाह।
देहली उजड़ी ज़लील अबतरे[3] आह॥
गरचि नादर ने खूब ही ढूंडा।
न मिला कोहे नूर का हीरा॥
कह दीया इक हरीसॅ[4] लौंडी ने।

१ हीरे का नाम २ नादर बादशाह के नीचे तले ३ बहुत बुरा ४ लालची

है छुपाया कहां मुहम्मद ने ॥
"उस को पगड़ी में सी के रखता था ।
जुदा उस को कभी न करता था" ॥
फिर तो बेहद तपाक से आकर ।
बोला नर्मी से, प्यार से नादर ॥
"ऐ शाहे मिहर्बान् महम्मद शाह ! ।
यार भाई है तेरा नादर शाह ॥
पगड़ियां आज तो बदल लेंगे ।
दिल महब्बत से खूब भर लेंगे ॥
रसमे उलफत अदा करो हम से ।
यह महब्बत वफा करो हमसे" ॥
छुट गयीं गो हवाइयां मुंह पर ।
ज़ाहिर खंदाः से बोला "हां हां" कर ॥
"शौक़ से पगड़ी बदलियेगा शाह" ! ।
मारा बेबस रंगीला देहली शाह ॥

५ प्रेम की रसम ऊपर से हंस कर

थी मुहम्मद को .जाहरी .इज़्जत ।
यह तवद्दुल[६] था असल में ज़िल्लत[७] ॥
क़ीमते ममलकत[८] से बढ़ कर था ।
हीरा पगड़ी में उस को खो बैठा ॥
ऐ .अज़ीज़ों! यह .इज़्ज़तो दौलत ।
नफ़स नादर है, वर सरे उलफत ॥
दामे तज़वीर[९] में न आजाना ।
जाँ! न भेंरें में फंस फंसाजाना ॥
खिलअ़ते फ़ाखिरह[१०] से हो खुर्सन्द[११] ।
खो के हीरा बने हो दौलतमंद ॥
चैन पड़ने को है नहीं हरगिज़ ।
अमन हीरे विना नहीं हरगिज़ ॥

६ बदलना ७ खुवारी ८ कुल राज्य की क़ीमत ९ दग़ा फ़रेब का जाल १० फखर करने वाला लबास, पुशाक का .इनाम ११ खुश

ज़ाती[12] जौहर से ज़ाती इज़्ज़त है।
बाक़ी मा-व[13]-मनी की इल्लत[14] है॥
जब तू फ़खरे खताब लेता है।
आत्मा को अताब[15] देता है॥
तू क़ीमे जहां[16] है, दाता है।
छोटा अपने को क्यों मनाता है॥
सब को रौनक़ है तेरे जल्वे[17] से।
तुझ को इज़्ज़त भला मिले किस से॥
सनद सर्टीफ़िकिट डिगरी की।
आर्ज़ू में है क़ैदे ग़म तन की॥
तू तो मअ़बूद[18] है ज़माने का।
क़ैद मत हो किसी बहाने का॥

१२ असली रत्न १३ अहंकार और धन इत्यादि १४ सबब, कारण १५ खफगी, गुस्सा, क्रोध १६ जहां का सखी (बखशने वाला) १७ प्रकाश १८ पूजने योग्य, पूजनीय

(११) खताब नपोलीयन को

वाह रे नपोलीयन! नडर शह मर्द।
टिड्डी दल फौज तेरे आगे गर्द॥
"हाल्ट!" कह कर स्पाहे दुशमन को।
लर्ज़ां कर दे अकेला लशकर को॥
जां बाज़ी में शेर मर्दी में।
खुश खुशां दशते ग़मनर्वदी में॥
*रोब से और ग़ज़ब की सौलत से।
तू बराबर था हिन्दू औरत के॥
राजपूतों की औतों का दिल।
न हिले, गरचि कोह जाये हिल॥
उन की जानब से शेर को चैलंज।
लैक शोहरत के नाम से है रंज॥

१ नपोलीयन बादशाह का नाम है उस के नाम यह खतबा २ खड़े हो जावो ३ कम्पा देना ४ ग़म दूर करने के जंगलमें ५ दबदबा, डर ६ पर्वत ७ बुलावा मुकाबल करने वास्ते *.गुस्सा.

पुशते कुश्तों के कर दीये हर सूं[8] ।
खूं के जूंएं[9] भर दीये हर सू ॥
मुल्क पर मुल्क तू ने मारलीया ।
पर कहो, उस से क्या संवार लीया? ॥
देनी चाहता था राज को वुसअ़त[11] ।
पर मिली हिर्सो आज़[12] को वुसअ़त ॥
दिल तो वैसा ही रह गया पियासा ।
जैसा जंगो जदल[13] से पैहले था ॥

८ मरे हुवों के ढेर ९ हरतरफ १० नदीयें, नैहरें ११ विस्तार विशालता १२ लालच, तमा १३ लड़ाई

---

(१२) सीज़र[1]

ऐ शहनशाहे जूलयस सीज़र! ।
सारी दुन्या का तू बना अफसर ॥
इतना क़िस्से को तूल क्यों खैंचा ।

१ रूम के बादशाह का नाम

दिल ज़मीं में फज़ूल क्यों खैंचा ॥
सैह्ल दिल में रहा तअ़ज्जब[2] खेज़ ।
ख़दशा[3]: पैहलू में, मौजे दर्द अंगेज़[4] ॥
आ! तेरी मंज़लत[5] को बढ़ायें ।
हिन्दू-ए-कैवान[6] से भी परे जायें ॥
क्यों न इतना भी तुम को सूझ पड़ा ।
जिस में शै[7] आये वह है शै से बड़ा ॥
जुज़[8] कुल से हमेशा छोटा है ।
छोटा कमरे से बक्स-ब-लोटा है ॥
जबकि तुझ में जहान आता है ।
आंख में बैहंगो बर समाता है ॥
कोहो[9] दरया-ओ-शैहरो स्वहरा[10] बाग़ ।
बादशाहो गदा-ओ-बुलबुलो ज़ाग़[11] ॥

२ अश्चर्य बढ़ाने वाला ३ डर ४ दर्द देने वाली लहर ५ मरतबा ६ शनी तारे के सिरे से भी दूर ७ वस्तू ८ टुकड़ा (हिस्सा) ९ पृथ्वि और समुद्र १० जंगल ११ कौवा

इल्म में और शऊर[12] में तेरे।
ज़र्रे से चमकते हैं बहुतेरे ॥
खुद को महदूद[13] क्यों बनाते हो।
मंज़ल अपनी पड़े घटाते हो ? ॥
तुझ में छोटे बड़े समाये हैं।
तू बड़ा है, यह जिस में आये हैं ॥
मुल्के सर्सब्ज़ और ज़मीन शादाब[14]।
हैं शु-ओं[15] में तेरी सुराब[16] ओ-आब ॥
शमस मर्कज़[17] नज़ामें शमसी[18] का।
है नहीं, तू है आश्रा सब का ॥
नूर तेरे ही से ज़ियां[19] लेकर।
मिहर[20] आता है, रोज़ चढ़ बढ़ कर ॥
अपनी किर्णों के आब में खुद ही।

१२ समझ, ज्ञान १३ परिछिन्न १४ खुश, आनन्ददायक पृथिव १५ किरण १६ मृग तृष्णा का जल १७ केन्द्र १८ आकाश के तारे आदि का इन्तज़ाम १९ प्रकाश २० सूरज

डूब मत मर, सुराब में खुद ही ॥
जान अपने को गर लीया होता।
क़बज़ा आलम पै झट कीया होता ॥
सल्तनत में मुती[21] चरिन्द व परिन्द।
राजे माहराजे होते ज़ाहिदे[22]-व-रिंद ॥
ज़ात में हल[23] दिल क्या होता।
हल *उक़दाः को यूं कीया होता ॥
हाथ में खड्ग हो कि खंडा हो।
क़लम हो या बलन्द झंडा हो ॥
जुदा अपने को इन से जानते हैं।
इन के टूटे रंज न मानते हैं ॥
आप को शूर वीर इस तन से।
जुदा माने हैं जैसे आहन[24] से ॥
गर बला से यह जिस्म छूट गया।

२१ सेवक, ताबियादार २२ परहेज़गार (कर्म कांडी) २३ मैहव एकाग्र, लीन * गुह्य भेद २४ लोहा

क्या हुवा गर क़लम यह टूट गया ॥

तू है आज़ाद, है सदा आज़ाद।

रंजो ग़म कैसा? असल को कर याद ॥

ऐ ज़मां[25]? क्या यह तुम में ताक़त है।

ऐ मकां[26]! तुझ ही में लयाक़त है?॥

कर सको क़ैद मुझ को, मुझ को क़ैद,।

चलक सै तुम हो कलअदम[27] नापैद[28] ॥

फ़िक़र के पाप के उडें धूयें।

गर कभी हम से आन कर उलझें ॥

पुर्ज़े पुर्ज़े अलग हुवे डर के।

धज्जीयां जैहल[29] की उड़ीं डर से ॥

२५ काल २६ देश २७ नाश २८ झूठा २९ अज्ञान

(१३) शाहे ज़मान[1] को वरदान.

कैसरे हिन्द! बादशाह दावर[2]।

१ ज़माने के बादशाहों को वर्दान २ मुनसफ हाकम

जागता है सदा शाहे खावँर ॥

राज पर तेरे मग़रबो मशरक़ ।

चमकता है सदा शाहे मशर्‌क ॥

शाहे मशरक़ की ब्रह्म विद्या है ।

रानी विद्याओं की यह विद्या है ॥

जाह ज़ाँती रहे क़रीब तुम्हें ।

शाह इल्मों का हो नसीब तुम्हें ॥

नूर[६] का *कोह दमाग़ में दमके ।

हिंद का नूर ताज पर चमके ॥

तेरे फ़िक्रो खियाल के पीछे ।

शीरीं [७]चशमा अजीब बैहता है ॥

यह ही चशमा था व्यास के अन्दर ।

ईसा अहमद इसी में रहता है ॥

इस ही चशमे से वेद निकले हैं ।

३ पूरब का बादशाह अर्थात सूरज ४ सूरज ५ स्वस्वरूपकी विभूति ६ प्रकाश ७ मीठा * पर्वत यहां कोहनूर है (ज्ञान के डोरे से मुराद है)

इस ही चशमे से कृष्ण कहता है ॥
चलिये आबे हयात[8] वा[9] पीजे।
दुःख काहे को यार सैहता है ? ॥
पिछले ऋषीयों ने इसी चशमे से।
घड़े भर भर के आब के रक्खे ॥
दुन्या पलटे, ज़माना बदलेगा।
पर यह चशमा सदा हरा होगा ॥
मिहर डूबेगा, .कुतब[10] टूटेगा।
पर यह चशमा सदा हरा होगा ॥
रस्मो[11] मिल्लत तो होंगे मलिया मेट।
पर यह चशमा सदा हरा होगा ॥
ऐसे चशमे से भागते फिरना।
बासी पानी को ताकते फिरना ॥
तिशना[12] रखेगा बैहरे खातरे आब।

८ अमृत ९ पानी, यहां अमृत से मुराद है १० ध्रुव तारा
११ रस्म रिवाज १२ प्यासा

जा बजा आग तापते फिरना ॥
राम को मानना नहीं काफी ।
जानना उस का है फकृत शाँफी[13] ॥
(बर्कले कैण्ट मिल्ल हैमिल्टान्[14]) ।
जुस्तजू[15] में तिरी हैं सरगर्दान्[16] ॥
बाईबल, वेद, शास्त्र, क़ुरान् ।
भाट तेरे हैं, ऐ शाहे रैहमाँन[17] ! ॥
अपनी अपनी लियाक़तें ले कर ।
तर ज़बान्[18] गा रहे हैं तेरी शान् ॥
मदाह[19] ख्वां शायरों को दो इनआम् ।
वक्ते दरबारे खासो जलसा-ए-आम ॥

१३ आराम देने वाला, शफा देने वाला १४ यह तमाम यूरप के फलासफरों के नाम हैं १५ तालाश १६ भटकते फिरते १७ कृपालु महाराजा १८ मीठी बोली से १९ तारीफ करने वाले

---

(१४) आनन्द अन्दर है.

संग[1] ने हड्डी कहीं से इक पाई।
शेरे नर देख फिकर यह आई॥
कि कहीं मुझ से शेर छीन न ले.
हड्डी इक उस से शेर छीन न ले॥
लेके मुंह में उसे छुपा कर वह।
भागा खाँई[2] को दुम दबा कर वह॥
अज़ीम[3] चुभती थीं मुंह में जब रग को।
खूं लगता लज़ीज़ था सग को॥
मज़ा अपने लहू का आता था।
पर वह समझा मज़ा है हड्डी का॥
शेरे नर, बादशाहे तन्हा रौ[4]।
हड्डी मुर्दे हों हर तरफ सौ सौ॥
वह तो न आंख भरके तकता है।

१ कुत्ता २ खंदक ३ हड्डी ४ अकेला चलने वाला राजा

सगे नादान का दिल धड़कता है ॥
स्वर्ग की नेमतें हों दुन्या की ।
हैं तो यह हड्डीयां ही मुर्दों की ॥
इन में लज्ज़त जो तुम को आती है ।
दर असल एक आत्मा की है ॥
ऐ शहनशाहे मुल्क ! ऐ इन्दर ! ।
छीनता यह नहीं यह ज़रो गौहर ॥
राज दुन्या का और स्वर्गो बहिश्त ।
बागो गुलज़ारो संगे मर मरे खिश्त ॥
नेमतें यह तुम्हें मुबारक हों ।
बारे ग़म, यह तुम्हें मुबारक हों ॥
देखना यह तुम्हारे मक़बूज़ात ।
क़ब्ज़ करते हैं क्या तुम्हारी ज़ात ॥
जाने मन ! नूरे ज़ात ही का नाथ ।

५ सोना (धन) और मोती ६ मरमर की ईंटें ७ ग़म का बोझ ८ मालिक

फौज रखता नहीं है सूरज साथ॥
जो ग़नी[9] ज़ात में हैं हीरो[10] वीर।
जल्वागर दर वजूदे बर ना पीर॥
सब दहानों[11] से वह ही खाता है।
स्वाद खाने भी बन के आता है॥
"यह हूं मैं", "यह हो तुम", यह अमनीयत[12]।
मोजज़ा[13] है तिरा, न असलीयत॥
सुवरो अशकालें[14] सब करामत है।
मेरी .कुद्रत की यह .अलामत है॥

९ अमीर १० बहादुर योधा ११ मूंहों १२ द्वैत १३ करामात
१४ शकलें, सूरतें

---

(१८) सकन्दर को अवधूत के दर्शन.

क्या सकन्दर ने भी कमाल कीया।
.गुलग़ुला शोरो[1] शर का डाल दीया॥

१ शोर इत्यादि

बर लबे आब सिन्ध जब आया ।
डट गया फौज लेके । झिल्लाया ॥
उन दिनों एक सालको मालक ।
से मुलाक़ी हूवा, रहा हक़ दक़ ॥
क्या .अजब था फ़क़ीर आलमगीर ।
क़लब साफी मिसाल गङ्गा नीर ॥
उस की सूरत जमाले सुर्यानी ।
गुफ़्तगू में जलाल .उर्यानी ॥
उस स्वामी ने कुछ न गिरदाना ।
ज़ोरो ज़ारी-ओ-ज़र से फुसलाना ॥
शीशा आयीनाः गर को दखलाया ।
दंग जूं आयीनाः वह हो आया ॥

२ दरया सिन्ध के किनारे ३ ईश्वर भक्त, आज़ादफ़क़ीर, मस्त पुरुष ४ मिला ५ शुद्ध अन्तःकरण ६ मानन्द गंगा जल के ७ अत्यन्त सुन्दरता ८ जलाल ज़ाहर प्रकाशमान ९ समझा १० ज़बरदस्ती और रोना और धन का लालच ११ सकन्दर का खताब है

रह के शशदर वह बादशाहे जहां।
बोला साधू से सूरते हैरान॥
हिंद में *क़दर न परखते हैं।
हीरे को लीथड़ों में रखते हैं॥
चलियेगा साथ मेरे यूनान[1] को।
क़दम रंजा करो मेरे हां को॥

१२ देश का नाम * तशरीफ ले चलिये

---

(१६) अवधूत का जवाब.

क्या ही मीठी .ज़ुबान से बोला।
रास्ती[1] पर कलाम को तोला॥
कोई मुझ से नहीं है खाला *जाः।
पूर पूरण, ज़रा नहीं हिलता॥
जाऊं आऊं कहां किधर को मैं?।
हर मकां[2] मुझ में, हर मकां में मैं॥

१ सचाई २ देश * जगह, स्थान

यह जो लाहूत[3] से निदा[4] आई।
यवन[5] बेचारे को नहीं भाई॥
फिर लगा सिर झुका के युं कहने।
इस के समझा नहीं हूं मैं मैने॥
"मुशको काफूर, .अतरो .अम्बर बू।
अस्पो गुलज़ार[6], नाज़नीं[7] खुशरू॥
सीमो ज़र[8], खिलअतो[9] समा[10]-ओ-स्रोद।
मेवे हर नौ[11] के, आबशारो रवेंद[12]॥
यह मैं सब दूंगा आप को दौलत।
हर तरह होगी आप की खिदमत॥
चलियेगा साथ मेरे यूनान को।
चल मुबारक करो मेरे हां को"

३ ब्रह्म धाम, सत स्वरूप ४ आवाज़ ५ सकन्दर से मुराद है ६ घोड़े और बाग़ ७ सुन्दर स्त्री, प्रिया ८ चांदी सोना ९ उत्तम लिबास १० राग रंग ११ क़िस्म १२ बैहती हुई नदी

मस्तै[13] मौला से तब यह नूर झड़ा।
आस्मान् से सतारह टूट पड़ा॥
"झूठ झूठों ही को मुबारक हो।
जैहॅल[14] नीचे दबे जो तारक[15] हो॥
मैं तो गुलशन हूं, आप खुद गुलरेज़[16]।
खुद ही काफ़ूर, खुद ही अम्बर[17] रेज़॥
सोने चांदी की आबो ताब हूं मैं।
गुल की बू मस्ती-ए-शराब हूं मैं॥
राग की मीठी मीठी सुर मैं हूं।
दमक हीरे की, आबे दुर[18] मैं हूं॥
खुश मज़ा सब तुआम[19] हैं मुझ से।
अस्प की खुश खिराम[20] है मुझ से॥

१३ मस्त फकीर फिर यूं बोला १४ अज्ञान, अविद्या १५ अन्धकार अथवा अन्धा १६ फुल झड़ी, पुष्पों के गिराने वाला १७ अंबर झाड़ने वाला अर्थात खुशबू वाला १८ मोती की चमक १९ खुराक, भोजन २० उत्तम चाल

रक़्स[21] है आबशार[22] का मेरा ।
नाज़ो ईश्वा[23] है यार का मेरा ॥
ज़र्क़ वर्क़ सुनैहरी ताज तेरा ।
मेरा मोहताज है, मोहताज मेरा ॥
चान्दनी मुस्तार[24] है मुझ से ।
सोना सूरज उधार ले मुझ से ॥
कोई भी शै[25] जो तेरे मन भाई ।
मैं ने लज़्ज़त अ़ता[26] है फ़रमाई ॥
दे दीया जब फिर उस का लेना क्या ।
शाहे शाहां को यह नहीं ज़ेबा[27] ॥
करके बख़शश मैं बाज़[28] क्यों लूंगा ।
फैंक कर थूक चाट क्यों लूंगा ॥
प्रकृति को तो *ईद मुझ से है ।

२१ नृत्य २२ पानी का झरना २३ नाज़ नख़रे २४ मांगी हुई २५ वस्तु २६ बख़शी २७ फबता, लायक़ २८ फिर वापस
*आनन्द मंगल

मांगू अब मैं, बईद[29] मुझ से है ॥
खुद खुदा हूं, सँरूरे[30] पाक हूं मैं ।
खुद खुदा हूं, ग़रूरे पाक[31] हूं मैं ॥"
ऐसा वैसा जवाब यह सुन कर ।
भड़क उट्ठा ग़ज़ब से असकन्दर ॥
चेहरा .गुस्से से तम तमा आया ।
खूने रग जोश मारता आया ॥
खैञ्च तलवार तान ली झट पट ।
"जान्ता है मुझे तू ऐ नट खट !" ॥
(शाहे[32] जी जाहे मुल्के दारा जम ।)
मैं हूं शाहसिकन्दरे आज़म[33] ॥
मुझ से गुस्ताखी गुफतगू करना ।
भूल बैठा है क्यों अभि मरना ॥

२९ दूर (नावाजब) ३० शुद्ध आनन्द ३१ शुद्ध अहंकार ३२ जमशेद और दारा बादशाह के मुल्कोंका बड़े भारी मरतबह वाला बादशाह ३३ सबसें बड़ा

काट डालूंगा सिर तेरा तन से ।
जरव समशेर से अभी दम से
देख कर हाल यह सकन्दर का ।
साहदू आज़ाद खिलखला के हंसा ॥
" किज़्ब[34] ऐसा तू ऐ शहनशाह ! ।
.उमर भर में कभी न बोला था ॥
मुझ को काटे ! कहां है वह तल्वार ? ।
दाग़ दे मुझ को ! है कहां वह नॉर[35] ॥
हां गलायेगा मुझे ! कहां पानी ?
बॉद[36] सुखा ही ले । मरे नानी ॥
मौत को मौत आ न जायेगी ।
क़सॅद[37] मेरा जो करके आयेगी ॥
बैठ वालू में बच्चे गंगा तीर ।
घर बनाते हैं शाद या दिलगीर ॥

३४ झूठ ३५ अग्नि ३६ वायू ३७ इरादा

फ़र्ज़ करते हैं रेत में खुद घर।
यह रहा गुम्बज़-व-इधर है दर[38]॥
खुद तसव्वर[39] को फिर मटाते हैं।
*खाना: आपना वह आप ढाते हैं॥
वैहम का घर बना था वैहम मिटा।
बालू था बाद[40] में जो पैहिले था॥
रेग सुथरा था, नै खराब हुवा।
फ़र्ज़ पैदा हुवा था खुद बिगड़ा॥
रास्त तू उस ज़बान से सुनता है।
पर पड़ा आप जाल बुनता है॥
तू जो समझा यह जिस्म मेरा है।
फ़र्ज़ तेरा है, फ़र्ज़ तेरा है॥
सिर यह तन से अगर उड़ादेगा।
फ़र्ज़ अपने ही को गिरादेगा॥

३८ दरवाज़ा ३९ कल्पित ४० पीछे * घर

रेत का कुछ न तो बुरा होगा।
ख़ाना[41] तेरा ख़राब ही होगा॥
मेरी वुसअ़त[42] को कौन पाता है।
मुझ में अर्ज़ों समा[43] समाता है॥
ताज जूते के दरम्यान् वाक़या।
मैं नहीं हूं, न तू है जां! वाक़या॥
इतना थोड़ा नहीं हदूद अर्बा़ः।
पगड़ी जोड़ा नहीं हदूदे[44] अर्बा़ः॥
अपनी हत्तक यह क्यों करी तुमने।
बात मानी मेरी बुरी तू ने॥
क्यों तिनक[45] कर दीया है आत्म को।
एक जौहर बनाया कुलज़म[46] को॥
ख़ुद तो मग़लूब[47] तुम ग़ज़ब के हो।

४१ घर ४२ विशालता (फैलाओ) सीमा ४३ पृथ्वि आकाश ४४ सीमा ४५ छोटा, नाचीज़ ४६ समुद्र ४७ वशमें आये हुये, क़ाबू हुवे २

शाहे जज़्[48]बात से भी अड़ते हो ॥
.ग़ुस्सा मेरा .ग़ुलाम तुम उस के ।
बन्दाः-ए[49]-बन्दगां रहो बचके ॥"
गिर पड़ी शाह के हाथ से शमशेर ।
निगाः आरफ़ से हो गया वह ज़ेर[50] ॥
क्या .अजब ! यह तो ज़ेर आ[51]खता: तेग़ ।
गर्जता था मसाले बारां मेघ ॥
शाह के ग़ैज़ो ग़ज़[52]ब को जूं मादर ।
नाज़ तिफ़[53]लक का जानता था गर ॥
और वह शाह सकन्दरे रूमी ।
बात छोटी से होगया ज़ख्मी ॥
पास उस वक़्त अपनी .इज़्ज़त का ।
हर दो जानब को एक जैसा था ॥

४८ काम क्रोधादि पर हुक्म करने वाला बादशाह ४९ नौकरों के नौकर ५० नीचे, शर्मिन्दा: ५१ खैंची हुइ तल्वार ५२ .ग़ुस्से, क्रोधको ५३ बच्चे का खेल, नखरा

लैक[५४] शाह को थी जिस्म में आनर[५५] ।
शाहे शाँह[५६] का था आत्मा में घर ॥
क़िला मज़बूत उस का ऐसा था ।
ऊंचे सूरज से भी परे ही था ॥
कर सके कुच्छ न तीर की बुछार ।
खाली जाये बन्दूक़ की भर मार ॥
इस जगह ग़ैर[५७] आ नहीं सकता ।
यहां से कोई भी जा नहीं सकता ॥
इस बलन्दी से सर्फ़राज़ी से ।
क़िला-ए-मज़बूत शेरे ग़ाज़ी से ॥
यह ज़मीन और इस के सब शाहान ।
ताराः सां, ज़र्रह[५८] सां, कि नुक़ताः सां ॥
नुक़ता मौहूम[५९] बन, हूये नाबूद ।
एक वहदत[६०] हूं, हस्तो बाशदो बूद[६१] ॥

५४ परन्तु, लेकिन ५५ इज़्ज़त ५६ यहां मुराद है फ़क़ीर से ५७ अन्य, दूसरा ५८ प्रमाणु ५९ कल्पित ६० एक ६१ है, होगा, था, वर्त्मान, भविष्यत्, भूत

रुढ़ गये जूं सपाहे [62] तारीकी।
ताब किस को है एक झांकी की? ॥
रूये आलिम [63] पै जम गया सिक्का।
शाहे शाहां हूं, शाहे शाहां शाह ॥
एहले हैयत [64] ने भी पढ़ा होगा।
नुक़ता क्या खूब यह रियाज़ी का ॥
जबकि लाजुंब [65] एक सतारे का।
वैह्म में हो हसाब या लेखा ॥
सिफ़र सां यह ज़मीने पेचां [66] पेच।
हेच [68] गिन्ते हैं, हेच मुतलक़ हेच ॥
अब कहो ज़ाते वैहत के होते।
क्यों ना अजसाम जान को रोते?

६२ अन्धकार की फौज ६३ तमाम पृथ्वि ६४ नजूम, ज्योतिश के जानने वाले ६५ अचल ६६ पेचदार पृथ्वि ६७ कुछ नहीं ६८ स्वरूप के खालस अर्थात शुद्धि स्वरूप

(१७) जिस्म से बेतऽल्लुक़ी

(देहाध्यासरहित)

बादशाह इक कहीं को जाता था।
उस तर्फ से फ़क़ीर आता था॥
बादशाह को घुमंड ताज का था।
मस्त को अपनी ज़ात का था॥
मस्त चलता था चाल मस्ती की।
राह न छोड़ा सलाम तक न की॥
बादशाह तुर्श[1] हो के यूं बोला।
"सख्त मग़रूर शोख गुस्ताखा!॥
बादशाह हूं, तुझे सज़ा दूंगा।
जिस्म तेरा अभि जलादूंगा"॥
तिस पै मौला कबीर[2] आलीजाह[3]।
शाहे शाहान फ़क़ीर लापरवाह॥

१ कड़वा होकर २ महान् ३ बड़े रुतबे वाला

जिस का मुबदा-ओ-.कुतब आत्म था ।
महूवरे गुफ़्तगू भी आत्म था ॥
जिस्म पोयन्ट से कुच्छ न करता था ।
आत्मा ही था, नूर झरता था ॥
पास धक धक जले थी इक भट्टी ।
टांग उस में फ़क़ीरने धर दी ॥
तब मुखातब हो शाह से बोला ।
नक़्शे तस्वीर! शेरे क़िर्तासा !
मैं हूं क़िर्तास । उस पे तू तस्वीर ।
ज़ाते असली हूं । फ़र्ज़ है तस्वीर ॥
नक़्श दावा करे तकब्बर है ।
क़िबराई मेरी तो अज़हर है ॥
जिस्म के .इतबार ही से सही ।

४ शुरु और धुरी (आदि औ अन्त) ५ धुरी अर्थात प्राणि का आधार ६ शरीर के लिहाज़ से ७ ऐ कागज़ के शेर ! ८ कागज़ ९ अहंकार १० बड़ाई ११ ज़ाहर, विद्यमान

मैं हूं आज़ाद उस तरह से भी ॥
क़तल करने का क़दर है तेरा।
झिड़कना इख़तियार है मेरा ॥
क़तलो धमकी का गर्म है बाज़ार।
सौदा मेरा है, मैं हूं खुदमुख़तार ॥
जान लेना नहीं तेरे वस में।
तेरी तद्बीर[१२] है मेरे वस में ॥
तू जलायेगा दर्द क्या होगा?।
देख ले, पैर जल गया सारा ॥
इस से बढ़ कर तू सज़ा क्या देगा।
मेरा इक बाल भी न हो बींका ॥
आग में डाल दे, तू इस[१३] तन को।
ख़्वाह शोलों में डाल उस[१४] तन को ॥
दोनों हालत में मुझ को यक्सां है।

१२ सज़ा देना, क़ैद करना १३ फ़क़ीर के शरीर से मुराद है १४ बादशाह के शरीर से मुराद है

कुच्छ न विगड़ा न विगड सकता है ॥
तुम से वढ़ कर तुम्हारा अपना आप।
मैं ही तुम हूं, न तुम हो अपना आप ॥
आग मेरा ही एक तजल्ला[15] है ;
रोब[16] तेरा भी ज़ोर मेरा है ॥
मुझ में सब जिस्म बुलबुले से हैं।
एक टूटेगा और क़ायम[17] हैं ॥
साधू जब कर रहा था यह तक़रीर।
शाह का दिल होगया वहीं नख़चीर[18] ॥
दस्त बस्ता:[19] खड़ा हूवा आगे।
सायीं! आरिफ़[20] हैं आप अल्ला: के ॥
तर्क दुन्या की, आख़रत[21] की तर्क।
तर्क मौला को, तर्क की भी तर्क ॥

१५ रौशनी, प्रकाश १६ डर १७ स्थिर १८ शिकार गाह
१९ हाथ जोड कर २० आत्मवित २१ परलोक

दर्जा अव्वल के आप सागी हैं।
वारे दर्शन के हम भी भागी हैं॥

२२ एक दफा

---

(१८) फ़क़ीर का कलाम.

क़दम बोसी को शाह झुका ही था।
कल्मा बेसाखता[1] यह तब निकला॥
ऐ शहनशाह! तुम मुबारक हो।
तुम ही सब से बड़े तो तारक हो॥
अपनी कीजीयेगा क़दम बोसी खुद।
तुम ही त्यागी[2] हो, तुम ही जोगी खुद॥
कुच्छ नहीं इस फ़क़ीर ने त्यागा।
ज़ात के राज पाठ में जागा॥
खाक[3] ऊपर से जब हटा बैठा।

१ फौरन, लाधड़क २ त्यागी ३ यहां जिस्म (शरीर) से मुराद है

मादने बेबहा[4] को पा बैठा ॥
कूड़ा करकट उठा दीया इस ने।
महल सुथरा बना लीया इस ने ॥
जैहॅल[5] को त्याग आप हो बैठा।
ज़ात तेरी तरह न खो बैठा ॥
लैक[6] तुम ने स्वराज्य छोड़ा है।
कूड़ा रक्खा है, महल छोड़ा है ॥
राख को तुम अज़ीज़ रखते हो।
असल मॉदन[7] को तुम न तकते हो ॥
खाक सारे लपेट ली तुम ने।
क्या रमाई भबुत है तुम ने ॥
जुड़ गये हो अविद्या से आप।
जोगी कैसे जुड़े बला के आप ॥
तुम ही जोगी हो, मैं न जोगी हूं ॥

४ अनन्त क़ीमत की कान (खज़ाना) (आत्मस्वरूप)
५ अज्ञान, अविद्या ६ लेकिन, किन्तु ७ खान, चशमाः खज़ाना

ज़ाते तन्हा हूं, मैं वियोगी हूं ॥
सुन के शाह, यह फ़कीर की तक़रीर।
सकंता ग़श कर गया वना तस्वीर ॥

८ अद्वैत सत्ता ९ अलग, जुदा रहने वाला १० वेहोश आश्चर्यमय

---

(१९) गार्गी.

जनक राजा की हुक्मरानी में।
उन वैदेहों की राजधानी में ॥
नंगी फिरती थी गार्गी लड़की।
नूर चितवन में था जलाल भरी ॥
चिहरे से ग़ेव दाव वरसे था।
हुसन को माहताव तरसे था ॥
ज्ञान की असल ज़ात की खूवी।

१ जीवनमुक्त २ चांद

उस के हर रोम से चमकती थी ॥
तक सके आंख भर के उस रू[३] को ।
मारे दैहशत से तावँ[४] थी किस को?
पाकबाज़ी[५] का वह मुजस्सम[६] नूर ।
*शप्पर चशम को भगाता दूर ॥
एक दफ़ा मार्फ़त की पुतली पर ।
करती शक़ थी नगाहे ऐबँ[७] निगर ॥
दफ़ातन गार्गी यह भांप[८] गयी ।
जान क़ालब में सब की कांप गयी ॥
.ऐब बीनों का कुफर तोड़ दीया ।
रूएं अजसाम बीन[९] को मोड़ दीया ॥
ज्ञान से पुर दहान[१०] यूं खोला ।

३ मुख ४ ताकत ५ पवित्रता ६ पूरा पूरा अर्थात प्रकाश का शरीर ७ बुराई देखने वाले की दृष्टि, चमगिद्ड़ दृष्टि ८ ताढ़ गयी, समझ गयी ९ पृथ्वि के पदार्थ (शरीर) देखने वाले १० मुंह * चमगिद्ड़, प्रकाश में न देखनेवाला

नाफा तातार था, कि अग्नि था ॥
मैं वह खंजर हूं, तेज़ दम ज़ालम! ।
लोहा माने है मिहरो[11] माह अंजुम[12] ॥
तीन जामो[13] में, या मियानों[14] में ।
छिप के बैठी हूं तीन खानों में ॥
दूर गर पर्दा हया करदूं ।
फितना[15] मेहशर अभी बपा करदूं ॥
शम्श[16] कब ताब झलक की लाये ।
चकाचूंदी सी आंख में आये ॥
देख मुझ को फलक के सब अजराम[17] ।
मिस्ल[18] शबनम उड़ें, करें आराम ॥
*कोहर ऐसे यह दुन्या उड़ जाये ।
देखने की मुझे सज़ा पाये ॥

११ सूरज चान्द १२ स्तारे १३ पर्दो (कपड़ों) में १४ कोश ढकने १५ क़ियामत (प्रलय) का समय अभि पैदा कर दूं १६ सूरज १७ आकाश के तारे इत्यादि १८ मानन्द तरह * शबनम

काश[19]! देखो मुझे, मुझे देखो।
हर सरे[20] मू से चश्मे हैरत[21] हो॥
मैं ब्रहना थी तुम ने समझा क्यों?।
खाक इस समझ पर, यह समझा क्यों?॥
जिस्म मैं हूं, यह कैसे मान लीया?।
हाय! कपड़ों को जान ठान लीया॥
खप गया जिस के दिल में हुसन मेरा।
दंग सकते[22] का एक आलम[23] था॥
जान जब होचुकी हो नोछावर।
बोलो, वह फिर कहां रहा नाज़र?॥
नाज़रो नज़र[24] आप खुद मंज़ूर[25]।
वसल कैसे कहां हुवा महजूर[26]॥
टूटे पड़ता है, हाय हुसन मेरा।

१९ ईश्वर चाहे २० बाल के सिरे से २१ हैरानी की निगाह २२ अश्चर्य २३ अवस्था २४ दृष्टा और दृष्टि २५ दृश्य २६ जुदा किया हुवा

पर न गाहक कोई मिला उस का ॥
खुद ही माशूक आप आशक़ हूं ।
नै[27] ग़लत ! मैं तो इशके सादिक़ हूं ॥
तारे कब नूर से नियारे हैं ।
तुम हमारे हो हम तुम्हारे हैं ॥
ऐ अदू[30] ! अैंठ ले, बिगड़ तन ले ।
सख्त कह दे, कि सुस्त ही कैहले ॥
जोशे .गुस्सा नकाल ले दिल से ।
ताक़ते तैश[31] आज़मा तू ले ॥
मुझे भी इन तेरी बातों से रोक थाम नहीं ।
जिगर में धाम न कर लूं तो राम नाम नहीं ।

२७ नहीं (यह ग़लत है) २८ सच्चा असली .इशक़ अथवा प्रेम मैं हूं २९ जुदा ३० दुशमन ३१ .गुस्से का बल

२० गार्गी से दो दो बातें.

राम भी एक बात जड़ता है।
खंजर तेज़ दम से लड़ता है
हुसन की बेहर[1] ग़ैरते खूबी,[2]!।
इक नज़र हो ज़री इधर तो भी॥
माना दीदों[3] में है तेरे लाली।
जोत आंखों में है कपल[4] वाली॥
भसम करती है तू हज़ारों को।
कौन रोके भला अंगारों को॥
लैकँ[5] मैं एक हूं हज़ार नहीं।
राम पर तिरा इख़त्यार नहीं॥
झांक आईने[6] में दिल के देख ले।
तू ज़रा गर्दन झुका कर पेक्ष ले॥

१ समुद्र २ दूसरे को लजा देने वाली सुंद्रता ३ चक्षू ४ कपल मुनी का नाम ५ किन्तु ६ शीशा

कल्ब[7] किस से तेरा मुनव्वर[8] है।
जल्वागर[9] कौन उस के अन्दर है॥
चीं जबीं हो के कटल कर भृकुटि।
तिर्छे चितवन नज़र कीये टेढ़ी॥
क्यों ग़ज़ब तीर पास रखता है।
राम भृकुटि में वास रखता है॥
छोड़ दो घूर कर दिखानी आंख।
राम बैठा है तेरी दाहनी आंख॥
तल्ख़[10] कामी से किस को दी दुशनाम?।
शाहरग[11] और कंठ में है राम॥
चल करो गर दमाग़ में तकरार।
राम बैठा है तेरे दसवें द्वार॥
हर तरह राम से गुरेज़[12] नहीं।

७ अन्तःकरण ८ प्रकाशित ९ प्रकाश देने वाला, चमकाने वाला १० गुस्से होकर बुरी खराब बोली बोलना ११ गले के अन्दर बड़ी रग (नाड़ी) १२ भागना

जुदा आहन[13] से तेग़[14] तेज़ नहीं ॥
ऐ मुहीते किनार[15] ना पैदा ! ।
हुसनो खूबी पे तेरी खुदा शैदा[16] ॥
बैहरे मव्वाज[17] है तलातुम[18] में ।
हुसन तूफां है तेरा आलम में ॥
"मैं ब्रैहना[19] नहीं" यह क्यों बोला ।
साह्मने मेरे कुफर क्यों तोला ? ॥
पैहन कर आज मौज की चादर ।
नखरे टखरे हमीं से यह नादर ! ॥
"मैं ब्रैहना नहीं" यह क्या माने* ? ।
बुर्का[20] ओढ़ा हुबाबे[22] लायानि[21] ! ॥
तिनका भर किशती भर जहाज़ सही,

१३ लोहा १४ तलवार १५ ऐ बेहद (अत्यन्त) अहाता (विशालता) रखने वाले! १६ कुर्बान १७ लैहरों वाला समुद्र १८ तूफान (लैहरोंनों) १९ नंगा २० पर्दा २१ बगैर मतलब के (बेफायदा:) २२ बुलबुला * मतलब

कोह[२३] भर वैहर भर यह नाज़ सही ॥
हाय तुम ने तो क्या सितम ढाया।
जुम्ला[२४] आलम द्रोग़[२५] वह आया ॥
नून आंखो में कर दीया तुम ने।
झूठ सच कर दिखा दीया तुम ने ॥
तेरे पर्दे सभी उठा दूंगा।
झूठ बोले की मैं सज़ा दूंगा ॥
नाम रूपों की बू उठा दूंगा।
हू[२६] ही हू हूबहू दिखादूंगा ॥
हाय! अज़हार[२७] आज लूं किस से?।
रू बरू हो खड़ा बने किस से? ॥
आप ही गार्गी हूं आप हूं राम।
कुच्छ नहीं काम, रात दिन आराम ॥

२३ पर्वत सम २४ कुल जहान २५ झूठा (असत्य) २६ ईश्वर ही ईश्वर यह सब है (सर्वं खल्विदं ब्रह्म) २७ वियान्त

२१ गंगा पूजा.

गंगा ! तेथों सद[1] वलहारे जाऊं (टेक)

हाड चाम सब वार के फैंकूं ।

यही फूल पताशे लाऊं ॥१॥ गंगा०

मन तेरे वन्दरन को दे दूं ।

बुद्धि धारा में वहाऊं ॥२॥ गंगा०

चित्त तेरी मच्छली चब जावें ।

अहङ्क[2] गिर[3] गुहा में दबाऊं ॥३॥ गंगा०

पाप पुण्य सभी सुलगा कर ।

यह तेरी जोत जगाऊं ॥४॥ गंगा०

तुझ में पडूं तो तू बन जाऊं ।

ऐसी डुबकी लगाऊं ॥५॥ गंगा०

रमण करूं सुत धारा मांहि ।

नहीं तो नाम न राम धराऊं ॥६॥ गंगा०

१ सौ बार .कुर्बान जाऊं २ अहंकार ३ पर्वत की गुफा

२२ गंगा स्तुति.

नदीयां दी सरदार! गंगा रानी !।
छींटे जल दे देन वहार, गङ्गा रानी !॥
सानूं रख जिन्दड़ी[1] दे नाल, गङ्गा रानी !।
कदे[2] वार कदे पार, गंङ्गा रानी ! ॥
सौ सौ ग़ोते गिन गिन मार, गंङ्गा रानी !।
तेरीयां लैहरां राम अस्वार, गंगा रानी ! ॥

१ प्राण, जान २ कभी

---

२३ अमर नाथ की यात्रा का हाल.

१. पहाड़ों की सैर.

राग पहाड़ी ताल चलन्त.

पहाड़ों का यूं लम्बी तानें यह सोना ।
वह गुंञान[1] दरखतों का दोशाला[2] होना ॥

१ घने २ पोशाक ओड़े हुवे अर्थात सरसब्ज़

वह दामन में सब्ज़ाः का मखमल बछौना।
नदी का बछौने की झालर परोना॥
यह राहत मुँजस्सम यह आराम मैं हूं।
कहां कोहो दरया, यहां मैं ही मैं हूं॥१॥

यह पर्वत की छाती पै बादल का फिरना।
वह दम भर में अब्रों से परवत का घिरना॥
गरजना, चमकना, कड़कना, नाखिरना।
छमा छम, छमा छम, यह बूंदों का गिरना॥
अरूसे फ़लक का वह हसना, यह रोना।
मेरे ही लिये है फक़त जान खोना॥२॥

यह वादी का रंगीं गुलों से लहकना।
फिज़ा का यह बू से सरापा महकना॥

३ आनन्द, आराम से भरे हुवे ४ पर्वत अरु दरया ५ बादल ६ फैलना, ७ आकाश रूपी दुल्हन, मुराद इन्दर से है ८ घाटी, ९ पुष्पों १० खुला मैदान ११ अति सुंदर सुगंधि देना

यह बुलबुल सां[१२] खंदां लबों का चहकना।
वह आवाज़े नै[१३] का वहर[१४] सू लपकना ॥
गुलों की यह कसरत, अरम[१५] रूबरू है।
यह मेरी ही रंगत है, मेरी ही बू है ॥३॥
जो जू[१६] और चशमा: है, नग़मा:[१७] सरा है।
किस अन्दाज़ से *आब बल खा रहा है ॥
यह तख्तों पै तख्ते हैं रेशम बिछा है।
सुहाना[१८] समा मन लुभाना[१९] समा है ॥
जिधर देखता हूं, जहां देखता हूं।
मैं अपनी ही तांब[२०] और शां देखाता हूं ॥४॥

१२ हंसते हुवे, खिड़े हुवे १३ बन्सरी १४ सर्व तरफ १५ स्वर्ग का बाग़ १६ नैहर १७ आवाज़ दे रहा है, बोलता है १८ दिल पसंद १९ मन को मोह लेने वाला २० चमक, प्रकाश, तेज * पानी

२ आवशारों की वहार.

नहीं चादरें, नाचती सीमें[1] तन हैं।
यह आवाज? पांजेव[2] हैं नारह[3] ज़न हैं॥
पुहारों के दाने ज़मुर्रदें[4] फिगन हैं।
सफाई आहा! रूये[5] मह पुर[6] शिकन हैं॥
सँवा[7] हूं मैं गुल चूमता वोसा लेता।
मैं शमशाद[8] हूं, झूम कर दाद देता॥५॥
मेरे साह्मने एक मैहफल सजी है।
हैं सब सीमें[9] सर पीर, पुर सब्ज़ जी है॥

१ चांदी के बदन वाली (अर्थात यह पानी की चादरें वलकि: सफेद चांदी के शरीर वाली चादरें हैं जो नाच कर रही है) २ पाओं का एक ज़ेवर होता है जो चलते समय सुन्दर आवाज़ देता है ३ शोर कर रही हैं ४ एक प्रकार का मोती है मुराद यह है कि पुहारें जो अपनी बूंदे बाहर फैंक रही हैं वह मानो अति सुंदर मोती बाहर डाल रही हैं ५ चांद का मुंह ६ वल डाले हुवे है (अर्थात चांद भी इस सफाई से ईर्शा कर रहा है ७ प्रातःकाल की आनन्दित वायू ८ सरू वृक्ष को कहते हैं ९ चांदी के सिर वाले अर्थात सफेद वाल या सिर वाले

शंजर[10] क्या हैं, मीना पै मीना धरी है ।
न झरनों का झरना है, कुलकुल लगी है ॥
लुंढाये यह शीशे कि बैह निकलीं नैहरें ।
है मस्ती[11] मुजस्सम यह, या अपनी लैहरें ॥८॥

१० दरख़त ११ निजानन्द से भरपूर

---

३ श्रीनगर से अनन्त नाग को किशती में जाना.

रवां[1] आवे दरया है, कशती दवान्[2] है ।
सवा नुज़हत[3] आगीं, सुबहदम-व-ज़ान्[4] है ॥
यह लैहरों पै सूरज का जल्वाः[6] अयां है ।
बलन्दी पै बर्फ़ इक तजल्ली फ़शां[7] है ॥

१ दरया का पानी चल रहा है २ भाग रही है अर्थात बैह रही है ३ खुशी से भरी, शुद्धः वायू ४ सुंदर गाने वाली चिड़या ५ प्रातःकाल में बांग देती है अर्थात (प्रातःकाल की शुद्ध वायू सुंदर गानेवाले पक्षी की तरह सुबह के समय ईश्वर आराधन कराने के लीये बांग देती है) ६ प्रकाश भासमान, ७ चमक मारने वाली

जहूर अपने ही नूर का तूर पर है।
पदीद[10] अपनी ही दीदे[11] कुल बैहरो[12] बर है ॥७॥
डलकता है डैल[13], दीदाए[14] मह लका सा।
धड़कता है दिल आयीनाः[15] पुर सफा का ॥
हलाता है कोहों[16] को सदमाः[17] हवा का।
खिले हैं कंवल फूल, है इक बला का ॥
यह सूरज की किरणों के चप्पे लगे हैं।
अजब नाओ भी हम हैं, खुद[18] खे रहे हैं ॥८॥

८ नज़र आना, जाहर होना ९ पर्वत से मुराद है १० ज़ाहर ११ दृष्टि १२ कुल पृथिवि और समुद्र १३ सरोवर का नाम है १४ चांद से खूबसूरत की आंख जैसा १५ शुद्धः दिल साफ शीशे की तरह १६ पर्वत १७ चोट, टक्कर १८ चला रहे हैं, ठेल रहे हैं.

---

४ अमर नाथ की चढ़ाई, पूर्णिमा रात्री

चढ़ाई मुसीबत, उतरना यह मुशकल।

फिसलनी बरफ तिस पै आफत यह बादल ॥
.क्यामत[1] यह सरदी कि बचना है बातिल[2]।
यह बू बूटीयों की कि घबरा गया दिल ॥
यह दिल लेना जां लेना किसकी अदा[3] है ? ।
मेरी जां की जां, जिस पै शोख़ी फ़िदा[4] है ॥९॥
अजब लुत्फ़ है कोह पर चांदनी का ।
यह नेचर[5] ने ओढ़ा है जाली दुपट्टा ॥
दिखाता है आधा, छुपाता है आधा ।
दुपट्टे ने जोबन[6] कीया है दोबाला ॥
नशे में जवानी के माशूक़े नेचर[7]।
है लिपटी हुई राम से मस्त हो कर ॥ १० ॥

१ प्रलैय, आखर की २ झूठ ३ नखरा, काम ४ .कुर्बान, सदके हैं ५ .कुदरत ६ सुंदरता ७ प्रकृति (कुदरत) रूपी प्यारी प्रिया

(९) अमर नाथ का अज़हद विशाल खुदाई हाल (जिसे लोग गुफा कहते है)

बरफ जिस में सुस्ती है जड़ता, ला शै है।
अमर लिंग एस्तादः चेतन की जाः है ॥
मिले यार, हुवा वसॅल, सब फासला तै ।
यही रूप दायॅम अमर नाथ का है ॥
वह आये उपासक, तअर्य्यन मिटा सब ।
रहा राम ही राम, मैं तूं हटा जब ॥

१ खुला, लम्बा चौड़ २ कुच्छ चीज़ नहीं ३ खड़ा हुवा २ ४ स्थान, जगह ५ मलाप, मेल मुलाक़ात ६ सब फर्क़ दूर हुवा, मिट गया ७ नित्य, सर्वदा रहने वाला ८ भेद भाव, फर्क़, क़ैद, परिछिन्नता. ९ ईश्वर, कवि के नाम से भी मुराद है

---

(२४) उत्तरा खंड में निवास स्थान का वर्णन.

रात का वक़्त है वियावां है।

खुश वज़ा[1] पर्वतों में मैदां है ॥
*आस्मान का बतायें क्या हम हाल।
मोतियों से भरा हुवा है थाल ॥
चांद है मोतियों में लाल धरा।
अब्र[2] है थाल पर रुमाल पड़ा ॥
सिर पर अपने उठा के ऐसा थाल।
रक़्स[3] करती है नेचरे खुशहाल[4] ॥
बाद[5] को क्या मज़े की सूझी है।
राम के दिल की बात बूझी है ॥
पास जो बैह रही है गंगा जी।
अबख़रे[6] उस के लद लदाते ही ॥
ला रही है लपक कर राम के पास।
क्या ही ठंडक भरी है गंगा बास? ॥

१ तर्ज़.का २ बादल ३ ढंग नाच ४ खुश (आनन्द रूप) प्रकृति ५ हवा ६ जलके प्रमाणू * आकाश

फखरे खिदमँत[7] से बाद है खुरसंद[8]।
जा मिली बादलों से हो के बलन्द ॥
अब तो अटखेलियां ही करती है।
दामने अबर[9] को लो उलटती है॥
लो उड़ाया वह पर्दा-ओ-रूमाल।
आसमाँ दिखाया है माला माल ॥
शाद[10] नेचर[11] है जगमगाती है।
आंख हर चार सू[12] फिराती है ॥
क्या कहूं चांदनी में गंगा है।
दूध हीरों के रंग रंगा है॥
वाह ! जंगल में आज है मंगल[13]।
सैर कर इस तरफ की चल ! चल ! चल!

७ सेवाके गुमान ८ खुश ९ बादल का पल्ला १० खुश ११ प्रकृति १२ तरफ १३ आनन्द

---

२५ चान्द की करतूत.

अजब घूमते घूमते राम को।
मिला एक तालाब सर शाम को॥
जुलाहे की थी पास में झौंपड़ी।
थी लड़की वहां खेलती इक पड़ी॥
हवा चुपके से सरसराने लगी।
इधर चांदनी दम दमाने लगी॥
मैं क्या देखता हूं कि लड़की वहीं।
है बुत बन रही और हिलती नहीं॥
खुला मुंह है भोले से मुसकां रही।
है आंखों से क्या चांद को खा रही॥
उतर आंख से दिल में दाखल हुवा।
दिल साफ में चांद सब घुल गया॥
कहो तो अरे चांद! क्या बात है?।

१ हस रही

यह क्या कर रहे हो, यह क्या बात है ॥

पड़ा .अक्स[2] ही तेरा तालाब पर ।

पै लड़की के दिल में कीया तू ने घर ॥

दीया .आलमों[3] को न जिस राज़[4] को,

दिखाया न जो दूरबीने बाज़ को ॥

रियाज़ी[5] का माहर न जो पा सका ।

न हैयत[6] से जो भेद कुछ आ सका ॥

जुलाहे के घर में दीया सब बता ।

अरे चांद ! क्योंजी ! हूवा तुझ को क्या ?

वह नन्हे[7] से दिल में यह आराम क्या ।

ग़रीबों के घर में तेरा काम क्या ? ॥

२ साया, प्रतिबिम्ब ३ बुद्धिमानों, दाना लोगों को ४ भेद गुह्य बात ५ गणित में लायक़ ६ शकल का .इल्म, तस्वीर, नजूम ७ छोटे से

२६ आरसी.

दुलहन को जान से बढ़ कर भाती है आरसी[1]।
मुख साफ़ चांद का सा दिखाती है आरसी ॥
हस्ती[2] .इल्म सरूर का मज़हर[3] तो खूब है।
हां इस से आबरू[4] को मजाती है आरसी।
हम को बुरी बला से यह लगती है इसलीये।
वाहद[5] को कैदे दूई[6] में लाती है आरसी॥
अज़ बस[7] ग़नी है हुसन में वह अपने माहरू[8]।
हैरत है उस के सामने आती है आरसी॥
खूबी है रूये[9] खूब में, शीशे में कुच्छ नहीं।
हाथों में रूनमाई[10] को जाती है आरसी॥

१ अंगूठे में डालने का ज़ेवर जिस में शीशा लगा होता है २ सच्चिदानन्द ३ ज़ाहर होने का स्थान ४ शान, .इज्ज़त ५ एकता ६ द्वैत ७ बेहद दौलतमंद (अर्थात हुसन में .ज़्यादा) ८ चांद के मुखड़े वाला (माशूक़) ९ चेहरे १० चहरे को दिखाने को

ज़ाहर में भोली भाली, हैरां शकल वले[11]।
क्या झूठ को यह रास्त[12] बताती है आरसी॥
गैहनों में टुकड़ा आयीना का है हक़ीर[13] तर।
रुतबा[14] वले सफाई से पाती है आरसी॥
देखूं मैं या न देखूं, हूं आफ़ताब रू[15]।
ताहम हमारे दिल को लुभाती[16] है आरसी॥
गंगा समेरू[17] अबर[18] सही, मिहर[19]-ओ[20]-माह सही।
मुखड़े का अपने दर्स[21] कराती है आरसी॥
है शौक़े दीद[22] चेहरः-ए[23]-ताबां का राम को।
यकसू[24] दिली हरआन[25] बनाती है आरसी॥

११ लेकिन १२ सच १३ तुच्छ १४ दरजा १५ सूरज के मुंह वाल (प्रकाश वाले चेहरे वाला) १६ मोह लेती है १७ पर्वत १८ बादल १९ सूरज २० और चांद २१ दर्शण २२ देखने का शौक़ २३ प्रकाशस्स्वरूप (प्रकाशवाले चेहरे का) २४ एकाग्रता एकागर २५ हर वक़्त

---

२७ तस्वीरे यार.

इस लिये तस्वीरे जांना हम ने खिचवाई नहीं (टेक)
बात थी जो असल में, वह नक़ल में पाई नहीं। इस० १
पहिले तो यहां जान की तन से शनासाई नहीं॥ इस० २
तन से जाँ जब मिल गयी, तो उस में दो ताई नहीं॥ इस० ३
एक से जब दो हूए, तो लुतफे यकताई नहीं॥ इस० ४
हम हैं मुशताके सखुन, और उस में गोयाई नहीं॥ इस० ५
पाओं लंगड़ा हाथ लुंझा, आंख बीनाई नहीं॥ इस० ६
यार का खाका उड़ाना, यह भी दानाई नहीं॥ इस० ७

१ प्यारा यार (जान की जो जान उस की तस्वीर) अर्थात अपने स्वरूप की मूरत २ पैहचान अर्थात (तन) शरीर से तो असली अन्दरूनी जाँ पैहचानी (देखी) नहीं जाती इसवास्ते तन की तस्वीर से क्या हासल ३ दो होना (अर्थात जब शरीर के साथ प्राण मिलकर बिलकुल एक हो गये तो उन को फिर अलग अलग दो कर ही नहीं सकते, तो फिर तस्वीर कैसे ४ एकता का आनन्द ५ बातों के सुनने के शौक़ वाले ६ मगर तस्वीर में बोलने की शक्ति नहीं ७ (तस्वीर में) आंख देख नहीं सकती, पाओं चल नहीं सकते, हाथ हिल नहीं सकते ८ नक़शा

काग़ज़ और पैरेहन, यह दिल को भाई नहीं ॥ इस० ८
दिल में डर है कि मुसव्वर ही न बन बैठे रक़ीब ॥ इस० ९
दाम मांगे था मुसव्वर, पास इक पाई नहीं ॥ इस० १०
असल की खूबी किसी नक़ल में पाई नहीं ॥ इस० ११

९ काग़ज़ का लबास १० तस्वीर खैंचने वाला ११ शत्रू, दुसरा आशक़, सम् प्रीतम

---

२८ ख्याल दुन्या दार का

जे न मिलदा धन मिलीयां अमीर दे ।
जे न मिले मुराद मिलियां फक़ीर दे ॥
जे न जावे पीड़ मिलियां पीर दे ।
तीनों दयो रुढ़ा विच वगदे नीर दे ॥ १ ॥

जवाब मस्त आत्मवित (फ़क़ीर) का

दुन्या दी मुराद जो कहन फकीर नूं ।
दुन्या कारण मनन मुर्शद पीर नूं ॥

छड के हीरे फड़न जो लीड़ कचीर नूं ।
रोन्दे ढाईं मार सदा तक़दीर नूं ॥ २ ॥

मतलबः—(१) दुन्यादार कहता हैः—कि यदि अमीर से मिलने पर धनकी प्राप्ति न हो, और अगर फक़ीर के मिलने पर सर्व कामनायें और दुन्यावी मुरादें पूरी न हों, और अगर मुर्शद (गुरु) के मिलने से दुःख दूर न हों तो इन तीनों (मिलने वालों) को वहते पानी में बहादो अर्थात पानीमें डुवादो (संगत छोड़ दो).

(२) ज्ञानवान जवाव देता हैः—जो साधू को दुन्याकी मुराद की खातर मानते हैं (और किसी सवव से नहीं) या जो गुरु को दुन्या की खातर (दुन्यावी आनन्द के लिये) मानते हैं, और जो आत्मज्ञान, निजानन्द रूपी अमृत को छोड़ कर लीड़ और चीथडं मांगते रहते हैं वह सर्वदा ढाईं मार मार कर अपनी प्रारब्ध को रोते रहते हैं.

---

२९ राम का एक प्यारे के नाम खत.

आ देख ले वहार कि कैसी वहार है ॥ (टेक)
गंगा का है किनार, अजव सवज़ा ज़ार है ।

१ कनारा, तट

बादल की है बहार, हवा खुशगवार[2] है॥
क्या खुशनमा पहाड़ पै वह चशमा सार[3] है।
गंगा ध्वनी सुरीली है, क्या लुतफ[4] दार है॥ आ० १

बाहर निगह कीजीये तो गुल्ज़ार है खिला।
अंदर सरूर की तो भला हद कहां दिला[5]॥
कालिज क़दीम का यह सरे मूं नहीं हिला[6]।
पढ़ाता मारफत का सवक़ मेरा यार है॥ आ० २

वक़ते सुवाहे ईद[7] तमाशा सार है।
गलगूना[8] मुंह पै मल के खड़ा गुलऽज़ार[9] है॥
शाहे फ़लक[10] से या जो हूई आंख चार हैं।
मारे शरम के चेहरा बना सुरुख नार[11]॥ आ० ३

२ खुश करने (लगने) वाली ३ धारा बहती है ४ आनन्द ५ ऐ दिल ६ बाल बींका नहीं हूवा (अर्थात पढ़ाना बन्द नहीं हुवा) ७ आनन्द की प्रातःकाल ८ उबटना, (उगाल) ९ फूल जैसी गालों (कपोलों) वाला (स्वरूप) १० सूरज ११ आग-की तरह लाल

क़तरे हैं ओस के कि दुर्रों[12] की क़तार है।
किरनो की उन में, वल वे, नज़ाकत[13] यह तार है॥
मुर्ग़ाने खुश[14] नवां, तुम्हें काहे की आर[15] है।
गाओ बजाओ, शब का मिटा दिल से बार[16] है॥आ०४
माशूक़ क़द दरख्तों पे बेलों का हार है।
नै[17] नै ग़लत है, .ज़ुल्फ़[18] का पेचां यह मार[19] है॥
वाह वा! सजे सजाये हैं कैसा श्रृङ्गार है।
अशजार[20] में चमकता है, खुश आबशार[21] है॥ आ०५
अशजार सिर हिलाते हैं, क्या मस्त वार हैं।
हर रंग के गुलों से चमन लाला ज़ार[22] है॥
भंवरे जो गूंजते हैं, पड़े ज़र नेगार[23] हैं।

१२ मोती १३ नाज़ुक सा धागा १४ खुश (अच्छा) गाने वाले पक्षी १५ शरम १६ बोझ (अर्थात रात गयी और प्रातः-काल हुवा) १७ नहीं नहीं १८ पेचदार .ज़ुल्फ (लटला) १९ सांप २० दरखतों २१ झरना २२ सुरख रंग २३ सुनैहरी रंग जिन के परों पर होते हैं

आनन्द से भरी यह सदा[24] ओङ्कार है॥ आ०

गंगा के रू[25] सफा से फिसलती न गर नजर।
लैहरों पे .अक्स[26] मिहर[27] का क्यों बेक़रार है॥
त्रिशूल के शिव के घर का असासा यह गंग है।
यहां मौसमे खिजां[28] में भी फसले बहार[29] है॥ आ०

साकी[30] वह मै[31] पिलाता है, तुर्शी[32] को हार है।
वाह क्या मजे से खाने को ग़म का शकार है॥
दिलदार खुश[33] अदा तो सदा हमकनार[34] है।
दर्शन शरावे[35] नावे सखुन दिलके पार है॥ आ०

मस्ती मुदाम[36] कार, यही रोजगार है।
गुलबीन[37] निगाह[38] पड़ते ही फिर किस का खार[39] है।

२४ आवाज़ २५ शुद्ध रूप २६ प्रतिबिम्ब, साया, २७ सूरज २८ श्रावन भादों की ऋतु जब पत्ते झरने लगते हैं २९ वसन्त ऋतु ३० आनन्द रूपी शराब पिलाने वाला ३१ शराब ३२ खटाई ३३ अच्छे नखरे करने वाला ३४ साथ ३५ अंगूर की शराब ३६ हमेशः (नित) ३७ फूल (नेकी) देखने वाली ३८ द्रष्टि ३९ कांटा (बदी)

क्यों राम से नज़ार[40] है तू दिलफ़िगार[41] है।
जब राम .क़ल्ब[42] में तेरे ख़ुद यारे ग़ार[43] है॥ आ० ९

४० दुबला, पतला ४१ ज़ख़मी दिल ४२ अन्तःकरण
४३ घर का यार, अर्थात पक्का यार

---

३० बदले है कोई आन में अब रंगे .ज़माना[1]। (टेक)

आता है अमन[2] जाता है अब जंगे .ज़माना[3]॥
ऐ जैहल[4]! चलो, दर्द उड़ो, दूर हटो हसद[5]।
कमज़ोरी मरो डूब, बस ऐ नंगे .ज़माना[6]!
ग़म दूर! मिटा रश्क[7], न .ग़ुस्सा, न तमन्ना[8]।
पलटेगा घड़ी पल में नया ढंगे .ज़माना[9]॥
आज़ाद है, आज़ाद है, आज़ाद है हर एक।
दिल शाद[10] है क्या खूब उड़ा तंगे .ज़माना[11]॥

१. ज़माने का रंग २ आराम ३ लड़ाई का समय ४ अविद्या
५ ईर्षा ६ शरम का समय ७ द्वेश ८ इच्छा, ख़्वाहिश ९ समय का
ढंग १० खुश दिल ११ समय की तंगी, मुसीबत

(लो काठ की हंडिया से निभे भी तो कहां तक ।
अग्नि तो जला ज्ञान की दे संगे .जमाना[12]) ॥
आती है जहां में शाहे मशरक़[13] की स्वारी ।
मिटता है सियाहि[14] का अभि .जंगे .जमाना[15] ॥
वह ही जो इधर खार[16], उधर है गुले खंदां[17] ।
हो ढंग जो यूं जान ले नैरंगे .जमाना[18] ॥
देता है तुम्हें राम, भरा जाम[19] यह पी लो ।
सुनवायेगा आहंग नये चंगे .जमाना[20] ॥

१२ काठ की हांडी को अग्नि पर रखने से क्या हाथ लगेगा अगर कुच्छ जलाना चाहते हो तो ज्ञानाग्नि पर समय का गम रूपी पत्थर रख कर फूंक दो १३ सूर्य अर्थात ज्ञान का सूर्य उदय होनेवाला है १४ धब्बा, अंधकार १५ समय का जंगार (दाग) १६ कांटा १७ खिला हुवा फूल १८ समय का जादू, खेल १९ निजानंद की मस्ती का प्याला २० ज़माने के बाजे का नया राग.

माया और उस की हक़ीकत.

१ माया (शाम).

(यह सब कविता कलकत्ते के हाल की है और माया का विस्तार करके राम दर्शाते हैं).

गंगा की ठंडी छाती से आती है खुश हवा ।
है भीने भीने बाग़ का सांस, इस में मिल रहा ॥
गंगा के रोम रोम में रचने लगा वह बैहर[1] ।
आया ज़ुवार[2] .जोर का लैहरों पे लेके लैहर ॥
देखो तो कैसे शौक़ से आते जहाज़ हैं ॥
मारे खुशी के सीटी बजाते जहाज़ हैं ।
शादी .जमीं की ऐ लो! फ़लक[3] से हुई हुई ।
वह सायबान क़नात है जब ही तनी हुई ॥
दुल्हा के सिर पर तारों का सिहरा खिला खिला ।

१ समुद्र २ समुद्र में तुफान ३ आकाश

दुल्हन के बेंके दिल ने चरागां खिला दिया ॥

४ बिजली दिल में रहने वाली अर्थात पृथ्वी (इस जगह मुराद है) ५ बिजली की रौशनी फैल गयी

---

२ मुक़ाम (कलकत्ते का ईडन बाग़)

है क्या सुहाना बाग़ में मैदाने दिलकुशा।
और हाशियाः है बेञ्चों का सब्ज़ाः पे वाह वा ॥
मजमा हजूम लोगों का भर कर लगा है यह।
मैदान आदमी से लबालब भरा है यह ॥
बेञ्चों पे बाज़ बैठे हैं, अक्सर खुश खड़े।
बांके जवान बाग़ में हैं टहलते पड़े ॥
मैदान पार सड़क पर है बग्गीयों की भीड़।
घोड़ों की सरकशी है, लगामों की दे नपीड़ ॥
शौक़ीन कलकत्ता के हैं मौजूद सब यहां।
हर रंग ढंग वज़ा के मिलते हैं अब यहां ॥

१ दिलको अच्छा लगने वाला २ खुले दिलवाला अर्थात विशाल ३ किनारा ४ गरोह ५ सिर हिलाना.

३ काम.

अर्थात (कलकत्ते के बाग़ में लोगों का काम क्या है)

हम सब को देखते हैं, यह देखते कहां ?।
आंखे तनी हुई हैं, क्या पीर क्या जवान ॥
मर्कज़[1] सब निगाहों का उजला[2] चबूत्रा ।
खुश बैंड[3] बाजा गोरों का है जिस में बज रहा।
गाते फुला फुला के हैं वह गालें गोरियां।
क्या रौशनी से सुरख़ दमकती हैं कुरतियां ! ॥
ऐ लोगो ! तुम को क्या है ? जो हिलते .ज़रा नहीं।
क्या तुम ने लाल कुरती को देखा कभी नहीं ? ॥

१ केन्द्र २ रौशन, चमकीला ३ अंग्रेज़ी बाजे का नाम है.

---

४ परदा.

इसरार[1] इस में क्या है, करो ग़ौर तो सही।

१ भेद, गुह्य

लैहरा रहा है पर्दा सा सब की निगाह पर।
इस पर्दे से परोई है हर एक की नज़र ॥
यह पर्दा तन रहा है, .अजब ठाठ बाठ का।
जिस में ज़मीनो ज़मानो मकान है समा रहा ॥
पर्दा बला है, छेद कि सियो कहीं नहीं।
लेकिन मोटाई जो पूछो, तो असला नहीं नहीं ॥
पर्दा सितम है, सैहर के नक़शो नगार हैं।
हर आंख के लीये यां अलैहदा ही कार हैं ॥
सब सामयीन के साह्मने पर्दा है यह पड़ा।
हर एक की नगाह में नक़शा बना दीया ॥
पर्दों से राग का है यह पर्दा .अजब पड़ा।
गंधर्व शैहर का है कि मिराज का मज़ा ॥

२ देश काल वस्तू ३ सीया हुवा ४ बिलकुल ५ .ज़ुल्म, ग़ज़ब ६ जादू ७ काम ८ सुनने वाले, श्रोतागण ९ चढ़ाई, तरक्की, बलंदी (यहां मुराद स्वर्ग लोक से भी हो सकती है)

जादू है पियानोटिज़्म[10] है, पर्दा सुराब[11] है।
क्या सच है रंग ढंग, यह सब नक़्शे आब[12] है?
रखीये तो यार पर्दे में देखें तो कैफीयत[13]।
आंखें भिड़ी हैं पर्दा से क्यों? क्या है माहीयत[14]?॥
[15]दीदों में और रंगों में क्या है मुनास्वत?

१० पियानो बाजे के बजाने का नाम है ११ रेत का मैदान जो पानी की तरह नज़र आवे (मृग तृष्णा का जल) १२ पानी के नक़्श १३ हाल १४ असलीयत १५ चक्षु

---

५ विवाह.

वह नौजवां के रूबरू नूरी लेबास[1] में।
दुल्हन खिली है फूल सी फूलों की बास में॥
शादी के राग रंग में बाजा बदल गया।
ऐ लो! बात बैठी है, जलसा बदल गया॥
दुल्हन का रंग है वह गोया गुलाब है।

१ प्रकाश की पोशाक

और चश्मे नीम मैस्त से झड़ता शराब है ॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें ।
जब रंग ही ऐसा हो, तो जड़ जायें न आंखें ॥

२ आंखें ३ आधीमस्त

---

६ यूनीवर्स्टी कौन्वोकेशन.

.ऐनक लगाये लड़के को वह इस ही पर्दे पर ।
हरकारह दौड़ता हुवा लाया है क्या खबर ॥
लेते ही तार हाथ में लड़का उछल पड़ा ।
"मैं पास हो गया हूं, लो मैं पास हो गया"
"बी-ए-के इमतहान में बढ़ कर रहा हूं मैं ।
इंगलिश में और हसाब में अव्वल रहा हूं मैं" ॥
है चांसलर से जलसा में .इनाम पा रहा ।
और फैलो साहबान से है इक्राम पा रहा ॥

१ यूनीवर्स्टी के हालमें प्रधान पुरुष (प्रेज़ीडेंट) २ यूनीवर्स्टी के मैम्बर व मददगार ३ खताब इत्यादि

क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें ।
जब रंग ही ऐसा हो तो जुड़ जायें न आंखें ॥

---

७ बच्चा पैदा हुवा.

वह देखना किसी के लीये इस ही परदे पर ।
पूरी हूई है आर्ज़ू पैदा हुवा पिसर[1] ॥
मंगल है शाद्याना[2] है खुशियां मना रहा ।
दरवाज़े पर है भाट खड़ा गीत गा रहा ॥
नन्हा[3] है गोल मोल, कि इक कंवल फूल है ।
नाज़ुक है लाल लाल, अचंबा अमूल[4] है ॥
अब तो बहू की चांदी है घर भर में बन गयी ।
सास भी जो रूठी थी लो आज मन गयी ॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें ।
जब रंग ही ऐसा हो तु जुड़ जायें न आंखें ॥

१ बेटा २ खुशी के बाजे बज रहे हैं ३ छोटा सा बच्चा ४ बेशुमार क़ीमत वाला

नैशनल कांग्रेस.

वह देखना! किसी के लीये इसी परदे पर।
मण्डप है कांग्रेस का। ग़ज़ब धूम कर्रोफर[1]! ॥
लैक्चर वह दे रहा है धूवां धार सिहरकार[2]।
जो चीर शक्को शुभाः को है जाता जिगर के पार॥
हक्के-ओ-दक[3] सकुवत[4] में हैं पड़े हाज़रीन[5] तमाम।
वह मोतियों से आंख का छल्क[6] के पड़ा है जाम[7]॥
"गो आन"; गो आन"[8]! कहते हैं सब अहले[9] जिन्दगी।
हड्डी से खून से लिखेंगे तारीख हिन्द की॥
क्यों दायें से और वायें से मुड़ जायें न आंखें।
जब रंग ही ऐसा हो तु जुड़ जायें न आंखे॥
इस पर्दे पर है, ठेका में है, इक लाख की बचत।
इस पर्दे पर है, सेठ को, दो लाख की बचत॥

१ शान शौकत २ जादू की तरह असर करने वाला ३ हक्क दक अश्चर्य हैरान ४ चुप चाप ५ श्रोतागण ६ उच्छल पड़ना ७ प्याला (मोतियों का) ८ आगे बढ़ो, आगे बढ़ो ९ जान्दार

इस पर्दे पर है सिंह जवान् खूब लड़ रहा।
तन्हा है एक फौज से क्या डट के अड़ रहा॥
इस पर्दे पर जहाज़ हैं आते खुशी खुशी।
मक़्सद मुराद दिल की हैं लाते खुशी खुशी॥
इस पर्दे पर तरक्की है रुतवा बड़ा बढ़ा।
यक दम है मेरे यार का दर्जा चढा हुवा॥
इस पर्दे पर हैं सैरो तमाशे जहांन् के।
इस पर्दे पर हैं नक़्शे वहिश्तो जुनां के॥
बिछड़े हूये मिले हैं मुर्दे भी उठ खड़े हैं।
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें॥
जब रंग हों दिलख्वाह तो जुड़ जायें न आंखें।

१० मुराद ११ सैर और तमाशा १२ स्वर्ग नर्क १४ दिल पसन्द, स्वेच्छा १५ दिल पसन्द, स्वेच्छा

---

९ हक़ीक़ी (अवधूत का राज्य)

वाह! क्या ही प्यारा नक़्शा है, आंखों का फल मिला!।

उस सोहने नौजवान का जीना सफल हुवा।
महल उसका, जिस की छत पे हैं हीरे जड़े हूए।।
क़ौसे क़ुज़ाह[1]-व-अब्र[2] के पर्दे तले हूए ॥
मसनद[3] बलन्द तख़्त है पर्बत हरा भरा।
और शजरे देवदार[4] का है चंवर झुल रहा ॥
नग़मे[5] सुरीले "ओम" के हैं उस से आ रहे।
नदियां, प्रिन्दे[6], बाद[7] हैं, वह सुर मिला रहे ॥
बेहोशो हिस है गर्चिह पड़ा ख़ाक की तरह।
दुन्या है उस के पैर को फुट बाल[8] की तरह ॥
कैसी यह सल्तनत[11] है, अदू[9] का निशान नहीं!
जिस जां[10] न राज मेरा हो ऐसा मकान नहीं ॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें।

१ इन्द्र धनुष २ बादल ३ बैठने की जगह ऊंची ४ देवदार के वृक्ष ५ आवाज़ शब्द ६ पक्षी ७ वायू ८ पाओंसे खेलने का गेंद ९ दुशमन १० जगह ११ बादशाहत राज्य १२ असली वास्तव

चत्र रंग हो दिलखाह तो जुड़ जायें न आंखे।

---

१० माया सर्व रूप.

माया का पर्दा फैला है क्या रंग रंग में।
और क्या ही फड़ फड़ाता है हर आबो संग[1] में॥
इस पर्दे पर हैं झीलें[2] जज़ीरे[3] खलीजो[4] वेहर।
इस पर्दे पर हैं कोह[5]-ओ-वियावां[6] दियारो शैहर[7]॥
सब पीर सब जवान इसी पर्दे पर तो हैं।
वाशुन्दे और मकान इसी पर्दे पर तो हैं॥
पैगम्बर और कताव इसी पर्दे पर तो हैं।
सब खाको आसमान इसी पर्दे पर तो हैं॥
पील[8] अस्प[9] और गुलाम इसी पर्दे पर तो हैं।
शाहंशाहों के शाह इसी पर्दे पर तो हैं॥

१ पानी, पत्थर में २ सरोवर ३ द्वीप ४ खाड़ी (कोल) और समुद्र ५ पर्वत ६ जंगल ७ मुल्क और शैहर ८ हाथी ९ घोड़े

क्या झिलमलाता पर्दा है यह अनकबूत[10] का ।
दे है ख्याल (उगला हुवा) काम सूत का ॥

१० मकड़ी जो तन्तु अपने मुंह से नकाल कर जाला तन्ती है

---

११ नक़शो निगार और पर्दा एक हैं.

यह दो नहीं हैं एक हैं, पर्दा कहो कि नक़श ।
नक़शो नगार[1] पर्दा हैं, पर्दा ही तो है नक़श ॥
यह इस्तआरा[2] था, कि वह माया के रूप हैं ।
माया कहो कि यूं कहो यह नाम रूप हैं ॥
"इस्मो शकल[3]" ही माया है, माया है इस्म शकल ।
हमम़ानी[4] माया के हैं, यह सब रंग रूप शकल ॥

१ नाना प्रकार के रंग रूप २ मुबालगा, दृष्टान्त, तमसील ३ नाम रूप ४ एक जैसे माने (अर्थ) वाला.

---

१२ फ़िलसफ़ा.

पर्दा खड़ा है माया का यह किस मुक़ाम पर ।
है यह सर्व ऊपर कि हवासे आम पर ॥
है भी कहीं कि मवनी है, यह वेह्मे खाँम पर ।
क्या मच है, एस्तादाः है, यह मेरे राम पर ॥

शास्त्र, युक्ति २ आम इन्द्र थे अर्थात इन्द्रिय मय ३ सहारा लीये हुवे ४ कच्चा वेह्म अर्थात आरोप भरम ५ सीधा खड़ा हुवा.

---

१३ महले पर्दाः (दृष्टान्त)

है इस तरफ तो शोर सेरोदो सया का ।
और उस तरफ है ज़ोर शुनीदन की चाह का ॥
इन दोनों ताक़तों का वह टकराना देखिये ।
पुर ज़ोर शोर लेहरों का चकराना देखिये !
लेहरें मिलीं मिटीं। एलो ! पैदा हुवे हुबाब ।

१ राग रंग (आवाज़) २ सुनना ३ बुलबुला या बुदबुदे

यह बुलबुले ही बुर्क़ा[4] हैं, पर्दा बरूए[5] आब ॥
मौजों ही का मुक़ाबला पर्दा का है महल[*] ।
मौजें है आब, कहते नहीं क्यों महल है जल ? ॥
हां यह तो रास्त[6] है कि सरोद[7] और सामयीं[8] !
दोनो मिले मिटे हैं वह जल रूपे राम[9] में ॥
और राम ही में पर्दा है नक़शो नगार हैं ।
यह सब उसी की लैहरों के[10] मौजों के कार[11] हैं ॥

४ पर्दा ५ पानी के चेहरेपर अर्थात पानी की सताह (तैह) पर ६ सच ७ राग ८ सुनने वाले ९ जल रूपी राम में या राम जो जलरूप है उस में १० लैहरें ११ काम * पर्दे का अधिष्ठान् था आधार

---

१४ अहसासे आम. (दार्ष्टान्त)

मह्सूस[1] करने वाली इधर से आई लैहर ।
मह्सूस होने वाली उधर से आई लैहर ॥

१ इन्द्रिगोचर पदार्थों को अनुभव करने वाली वृत्ति

दोनो के अक़्द[2] शादी से पैदा हूवे हुबाब[3] ।
यानी नमूंद[4] "[5]शै" हूई पानी में झट शताब ॥
लैहरें भी और बुलबुले सब एक आब हैं ।
इन सब में राम आप ही रमते जनाब हैं ॥
माया तमाम इस की है हर फ़ेल-ओ-क़ौल[7] में ।
अफ़्उल फेलो फाइल है हर डील डौल में ।
आबशारों और फब्बारों की पुहारों की बहार ।
चशमासारों सब्ज़ाज़ारों गुलईज़ारों[10] की बहार ॥
बैहरो दरया[11] के झकोले और सबा[12] का खुश खराम[13] ॥
मुझ में मुसव्वर[14] हैं यह सब "ओम" में जैसे कलाम[15] ॥
पसर[16] कर लेटा हूं जग में सुबह में और शाम में ।

२ वियाह शादी अर्थात मेल ३ बुलबुला ४ दृश्य (व्यक्त) ५ वस्तु शकल (रूप) ६ जल ७ काम और इक़रार ८ कर्म कर्ण कर्ता ९ बाग इत्यादि १० पुष्प के रुखसार (कपोल) वाले प्यारे ११ समुद्र अरुदर्या १२ प्रातःकाल की वायू १३ मटक कर चलना १४ फर्ज़ी, आरोपत हैं १५ शब्द १६ फैलकर १७ सर्व का इन्द्रि गोचर सपर्श वा जानना

चान्दनी में रौशनी में कृष्ण में और राम में

(१.९) राम मुबर्रा[1] या (शुद्ध स्वरूप राम)

यह तो सब रास्त[2] हैं, बल्के[3] अज़ रूये[4] ज़ात भी।
देखो तो पर्दा नक़्श वगैरा ना थे कभी॥
है मौजें[5] ही में रद्दो बद्‌ल[6] जिस के बावजूद।
क़ायम है ज्यूं का त्यूं सदा इक आब[7] का वजूद॥
अज़[8] .इतबारे ज़ात यह कैहना पड़ा है अब।
पैदा ही कब हुवे थे वह अमवाज और हबाब[10]॥
अज़ रूये राम पूछो तो फिर वह नगारो नक़्श।
माया वगैराः का कहीं नामो नशानो नक़्श॥
.हर्कत सकून[11] और तग़य्युर[12] का काम क्या?।
नुतको[13] .ज़ुबां को दखल सफ़ातों[14] का नाम क्या॥

१ राम पाक (शुद्ध) २ सच ३ किन्तु ४ वुस्तुता से भी ५ लैहर ६ बदलना इत्यादि ७ जल ८ लैहरें ९ वस्तु के लिहाजसे कहना पड़ा १० बुलबुला ११ स्थिरता १२ तबदीली १३ वाणि १४ गुण

अॅक़बाल[15] कहां अॅदबार[16] कहां यां वेशी कमी को वार कहां।
यां पुण्य कहां अरु पाप कहां अरु मुझमें जीतो हार कहां॥
इक़ार कहां इनकार कहां तक़ार[17] कहां अॅसरार कहां।
महसूस हॅवास[18] अहसास कहां, खाक आब अरु बादो[19]
नार[20] कहां॥
सब मर्कज़[21] मर्कज़ मर्कज़ है इंकतार[20] कहां पॅरकार[21] कहां।

१५ विभूती १६ बोझ १७ हठ, ज़िद १८ स्पर्श, इन्द्रिय, पदार्थ वायू १९ अग्नि २० पंक्तियें २१ पंक्तिये डालने वाला औज़ार

---

१६ नतीजा.

गलताँ[1] है मुहीत बेपायाँ[2] यहां वार कहां अरु पार कहां?।
गंगा है कहां अरु बाग़ कहां है सुल्ह कहां पैकार[3] कहां?
यां नाम कहां अरु रूप कहां अख़फा[4] कहां अज़हार[5] कहां?।
नहीं एक जहां दो चार कहां अरु मुझ में सोच विचार कहां?॥

१ पेच खाता हुवा (ग़र्क़ हूवा २). २ बेहद (अनन्त) अहाता ३ लड़ाई जंग ४ पोशीदगी (भेद) ५ जाहर करना

मां बाप कहां उस्ताद कहां? गुरु चेले का यां कार कहां?।
इहसान कहां आज़ार[6] कहां? यां खादिम[7] और सरदार कहां?॥
न ज़मां[8] न मकां[9] का कभी था नशां, इल्लत[10] मालूल[11] अज़्कार[12]
कहां।
नहीं ज़ेर[13] ज़बर[14] पेस[15] पेश कहां? तक़्ती[16] और शेर अशआर[17]
कहां॥
इक नूर[18] ही नूर हूं शोले[19] फशां, गुलज़ार[20] कहां और
ख़ार[21] कहां॥
लैकचर तक़रीर उपदेश कहां? तहरीर[22] कहां प्रचार
कहां?।
तप दान और ज्ञान और ध्यान कहां? दिल बेबस सीना
फ़िगार[23] कहां॥

६ दुःख ७ नौकर ८ काल ९ देश १० कारण ११ कार्य १२ ज़िकर १३ नीचे १४ ऊंचे १५ पीछे आगे १६ टुकड़े करना, वज़न कविता का बनाना १७ कविता, नज़्में १८ प्रकाश १९ दमकने वाला, यां दमक मार रहा है २० बाग़ २१ कांटा २२ लिखित (लिखना) २३ सीना फाड़ने वाला या ज़ख़मी दिल [.आशक़)

नहीं शेखी शोखी ऑर[24] कहां? सिर टोपी या दस्तार[25]
कहां?।

नहीं बोली तानाः धमकी यहां, मूं[26]फार कहां और
दार[27] कहां॥

इक मैं ही मैं ही मैं ही हूं, शैय[28] ग़ैर का दारो मदार
कहां।

आलाइशे[29] क़ैदो नजात कहां? अहवामे[30] रसन[31] और मार[32]
कहां॥

घर बार कहां कोहसार[33] कहां मैदान कहां और ग़ार[34]
कहां।

मेह[35] अंजुम[36] फ़र्श[37] और अर्श[38] कहां? यां ख़्वाब[39] कहां
बेदार[40] कहां॥

२४ शरम हया २५ पगड़ी २६ तीर का मुंह २७ सुली २८ दूसरी वस्तु, भिन्न वस्तु २९ आलूदगी [अलेप] ३० वैहम भ्रान्ति ३१ रस्सी ३२ सांप ३३ पर्वत ३४ कन्दरा, गुफा ३५ चांद ३६ तारे ३७ पृथ्वि ३८ आकाश ३९ स्वप्न ४० जाग्रत

जब ग़ैर[41] नहीं डर खौफ़ कहां, उम्मेद से हालते ज़ार[42] कहां? ॥
मैं इक तूफाने वहदत[43] हूं कहो मुझ में इस्तफ़सार[44] कहां।
इक मैं ही, मैं ही, मैं ही हूं, यां बन्दे[45] और सिरकार[46] कहां ॥

४१ अन्य, ४२ रोने की अवस्था ४३ एकता का तूफान ४४ पूछना ४५ गुलाम, प्रजा ४६ बादशाह, राजा

तीन शरीर और वर्ण.

१ तीनों अजसाम[1].

गज़ल

जाने मन[2]! जिस्म एक खिलअ़त[3] है।
इस के उतरे न कुछ बिगड़ता है॥
याद रख, तू नहीं यह जिस्मे कसीफ़[4]।

१ शरीर २ ऐ मेरी जान! ऐ मेरे प्यारे! ३ चोगा कोट है ४ स्थूल शरीर

और हरगिज़ नहीं तू जिस्मे लतीफ़[५] ॥
जिस्म तेरा कसीफ़[६] ओवर कोट[७] ।
जिस्म तेरा लतीफ अंडर[८] कोट ॥
जिस्म बेरुनी[९] झट बदलता है ।
जिस्म अन्दर का देरपा[१०] सा है ॥
देह स्थूल मर गया जिस वक्त ।
देह सूक्ष्म चला गया उस वक्त ॥
देह सूक्ष्म फिरे है आवागवन ।
तू तो हर जा[११] है, आना जाना कौन? ॥
पक्की मट्टी के बेशुमार घड़े ।
भर के पानी से धूप में धर दे ॥
जितने बर्तन हैं, अक्स[१२] भी उतने ।
मुखतलिफ से नज़र आयेंगे ॥

५ सूक्ष्म शरीर ६ स्थूल ७ कोट के ऊपर का कोट ८ कोट के नीचे का कोट ९ वाह्य (अर्थात ओवर कोट) १० देर तक रहने वाला ११ हर जगह है १२ प्रतिबिम्ब

लैक सूरज तो एक है सब में।
और जो सायंस पढ़ा हो मकतब में॥
तब तो जानोगे तुम, कि यह साया।
आब[13] अन्दर कभी नहीं आया॥
नूर[14] बाहर है, लैक धोके से।
बीच पानी के लोग थे समझे॥
अब यह पानी घड़े बदलता है।
टूटते हैं सबू[15], यह रहता है॥
पानी जिस्मे लतीफ़ को जानो।
मट्टी जिस्मे कसीफ़ पेहचानो॥
जाने मन! तू तो मिहरे[16] ताँबां है।
एक जैसा सदा दरख़्शां[17] है॥
जैहल[18] से है तू क़ैद क़ालिब[19] में।

१३ पानी, जल १४ प्रकाश १५ घड़े, ठलिया १६ प्रकाश करने वाला सूर्य १७ चमकने वाला, प्रकाशस्वरूप १८ अविद्या, अज्ञान १९ शरीर

तुझ में सब कुछ है, तू ही है सब में॥
गो यह जिस्मे लतीफ पानी सां।
बदलता है हमेशा ही अबदान[20]॥
पर तेरी ज़ाते .कुदसे[21] वाला का।
बाल हरगिज़ न हो सका बीङ्का[22]॥
मेरे प्यारे! तू आफताब ही है।
.अक्स मुतलक नहीं, तू आप ही है॥
रूये अनवर[23] ज़रा दिखा तू दे।
पानी उड़ता है, .अक्स हो कैसे?॥
कैसा पानी, कहां तनासुख[24] हो?।
मैं खुदा हूं, यकीन रासिख[25] हो॥
.इल्मे औप्टिक्स[26] से गर करो कुछ गौर।

२० बहुत शरीर, देह २१ तेरे शुद्ध स्वरूप (आत्मा) २२ टेढ़ा २३ प्रकाश वाला मुख (अपना स्वरूप) २४ आवागमन (मरना और फिर जीना) २५ पक्का, मज़बूत २६ नज़र, दृष्टि का शास्त्र

तो सुबू, आब[27] मिहर[28] से नहीं और ॥
यह ज़मीन और सारे सय्यारे[28]।
चशमा-ऐ-[29]नूर से नहीं न्यारे[30] ॥
नैबूलर[31] मसले को जाने दो।
एक सीधी सी बात यूं देखो ॥
यह जो आबो सुबू-ओ-सैहरा[32] है।
रात काली में किस ने देखा है ॥
चशम जब आफताब ने डाली।
पानी वर्तन दखाये बनमाली ॥
आप वर्तन है, आप पानी है।
क्या अजब राम की कहानी है ॥
आप मज़हर[33] है, साया अफ़गन[34] आप।

२७ पानी और सूरज २८ आकाश के तारे इत्यादि २९ प्रकाश के धाम, खज़ाने से ३० जुदा ३१ आकाश के तारे इत्यादि की विद्या के भेद ३२ जंगल ३३ जगह ज़ाहर होने की ३४ प्रतिबिम्ब डालने वाला

साया मज़हर कहां ? है आप ही आप ॥
क्या तहय्युर[35] है, हाये हैरत है ।
ग़ैर से क्या ग़ज़ब की ग़ैरत है ॥
कैसी माया, यह कैसा तलिस्म[36] है ।
दुन्या तो हैरते मुजस्सम[37] है ॥
अब ज़रा और ख़ौज़[38] कीजेगा ।
यह अचंबा .अजीब है माया ॥
कहिये आश्चर्य क्या कहाता है ।
इन्तहा का मज़ा जो आता है ॥
इन्तहा का मज़ा है आनन्द घन ।
यैनी खुद राम सच्चिदानन्द घन ॥
पस यह माया भी आप ही है ब्रह्म ।
नाम रूप हैं कहां ? है खुद ही ब्रह्म ॥
उमंड आयी हो गर स्पाहे[39] वैहम ।

३५ अश्चर्य ३६ जादू ३७ अश्चर्यरूप ३८ विचार, सोच
३९ भ्रमकी फौज (लशकर)

फिर भगा दो उसे, न जाना सैहम[40] ॥
माया माया की कूछ नहीं दरअसल ।
वसल कैसे हो, अहद[41] में कब फसल ॥
इस को देखें बइतबारे अबद[42] ।
तब तो माया यह जैहल[43] है बेदर्द ॥
प्राण, अव्यक्त[44] और अविद्या भी ।
इल्लत[45] औला हैं नाम इस के ही ॥
ख्वाब[46] गफलत है घन सषुप्ती है ।
दीद कारण भी यह कहलाती है ॥
आलमे ख्वाब और बेदारी[47] ।
इसही चशमे से होगये जारी ॥

४० डर, भय ४१ अद्वैत, एक ४२ जीव के लिहाज़से, जीव दृष्टिसे ४३ अविद्या, अज्ञान ४४ अप्रकट कारण, अमूर्तीमान ४५ सबसे पैहिला कारण, इत्यादि ४६ स्वप्न ४७ जाग्रत

२ कारण शरीर.

जौग्रेफी[1] में नक़शा दरया का ।
जूं शजर[2] सरनगूं[3] है दखलाया ॥
गरचिः निसवत शजर से रखता है ॥
जड़ को ऊश्वा तने से रखता है ॥
(ऊर्ध्व मूल मधा शाखा, गीता)
बेख़[4] दरया की वरफ जड़ क़ायम ॥
रहती कैलास पर ही है दायम[5] ॥
मुर्तफ़ा[6] वेख की तरह कारण ।
मुंजमिद[7] सर्द ठोस ज़र्रीन[8] तन ॥
सखत मस्ती गुरूर से भर्पूर ।
नेसती[9], लाशरीक, हर्कत दूर ॥

१ भूगोल २ वृक्ष ३ शिर के बल, उलटा मुंह ४ जड़ ५ नित्य ६ ऊंचे उठी हूई अर्थात ऊंची जड़ वाले की तरह ७ जमा हुवा ८ सुनैहरी तन वाली ९ अव्यक्त

३ सूक्ष्म शरीर.

इस ही कारण शरीर से पैदा।
यह लतीफो कसीफ[10] जिस्म हुवा॥
ऊंचे [11]कोहों पै वर्फ सारे है।
सोने चान्दी की झल्क मारे है॥
पिघलते पिघलते वर्फ यही।
पर्वतों पर वनी है गंगा जी॥
इस से शफ्फाफ नदीयां वैहती हैं।
खेलती जिन में लैहरें रहती हैं॥
कोह का, फूल फल का, पत्तों का।
साया लैहरों पै लुत्फ है देता॥
नन्हे, [12]नन्हे यह सब नदी नाले।
वर्फ ऊंची के बालके वाले॥
देनी निसवत इन्हें मुनासब है।

---

१० सूक्ष्म और स्थूल ११ पर्वत १२ छोटे छोटे

देह सूक्ष्म से । ऐन वाजव है ॥
देह सूक्ष्म है "फ़िकरो अक़लो होश ।
इमत्याज़ो ख़ियालो गुफ़तो नोश[१३]" ॥
आलमें ख़्वाब में यही सूक्ष्म ।
चलता पुरज़ा बना है क्या चम ख़म ॥
टेढ़े तिर्छे कलोल करता है ।
चोहल पोहलों में क्या लचकता है ॥
वर्फ़ जड़ जो शरीर कारण है ।
ज़ेरे अन्वारे[१४] मिहरे रौशन है ॥
देह सूक्ष्म इसी से ढलता है ।
जूं पहाड़ी नदी निकलता है ॥

१३ अक़ल होश तमीज़ ख्याल, वाणी और श्रोत्रादि इन्द्रिय यह सब अन्तःकरण सूक्ष्म शरीर कहलाता है १४ प्रकाशस्स्वरूप सूर्य (आत्मा) के तले है

४ स्थूल शरीर.

ख्वाब गुज़रा तो जाग्रत आई ।
नदी मैदान में उतर आई ॥
जूहीं सूक्ष्म ने क़दम यहां रक्खा ।
गदला खाकी कसीफ[15] जिस्म लीया ॥
या कहो यूं कि जिस्मे नाज़ुक[16] ने ।
सूफ मोटे के कपड़े पैहने ॥
शब को शीरीं वदन जो सोता है ।
जामा[17] तन से उतार देता है ॥
जब ज़मिस्तां[18] की रात आती है ।
नंगा दरया को कर सुलाती है ॥
दरया करके मुशाहदा[19] देखा ।
खिर्क़ा[20] हर साल में नया ही था ॥
ठीक इस तौर पर ही, जिस्मे लतीफ़ ।

१५ मोटा, स्थूल १६ सूक्ष्म शरीर १७ कपड़ा, लबास १८ शरद् ऋतु, शीत काल १९ दृष्टि, नज़र करना २० लबास

वदलता पैरहन[21] है जिस्मे कसीफ ॥
यूं तो हर शव लवासे ज़ाहर को
दूर करता है वदने *दरवर को ॥
इल्ला[22] फिर सुवह पैहन लेता है।
स्थूल देह में फिर आन रहता है ॥

२१ पोशाक २२ किन्तु, लैकिन * अपने ऊपर के शरीरको

---

९ आवागमन.

लैक मरते समय यह जिस्मे लतीफ ।
वदलता मुतलैक़न[23] है जिस्मे कसीफ ॥
जव पुरानी यह हो गयी पोशाक ।
दे उतारी यह फैंक दी पोशाक ॥
कैंचली चोला को उतार दीया ।
ओर ही जिस्म फिर तो धार लीया ॥

२३ बिलकुल

इस को कहते हैं हिंदू आवागवन।
बदलना जिस्म का है आवागवन॥

---

६ आत्मा.

मिहर[1] जो वर्फ पर दरखशां[2] था।
साफ नालों पे नूर[3] अफशां था॥
वही स्थूल रंवदे[4] मैदान पर।
जलवा अफॅगन[5] था, आबे हैरान पर॥
एक दरया के तीन मौकों पर।
मिहर है एक हाज़रो नाज़र॥
बल्कि दुन्या के जितने दरया हैं।
तैहते[6] परतौ सभों के सेह[7] जा हैं॥
आत्मा एक तीन जिस्मों पर।

१ सूरज २ चमकीला ३ प्रकाश छिड़कता था ४ मैदान की नदी (दरया) ५ प्रकाश डालने वाला ६ प्रकाश के तले ७ तीनों स्थान

जल्वा अफगन है, हाज़रो नाज़र ॥
सारी दुन्या के तीन जिस्मों पर।
एक आत्म है वातनो ज़ाहर[८] ॥
आना जाना नहीं आत्म में।
यह तो मफ़रूज़[९] सब हूये तन में॥
आत्मा में कहां की आवागवन।
आये किस जा: को? और जाये कौन?॥

८ अन्दर और वाहर ९ कल्पित, फर्ज़ कीये गये

---

७ तीन वर्ण.

असल को अपने भूल कर इन्सान्।
भूला भटका फिरे है, हो हैरान् ॥
मरता खरगोश जबकि जाता है।
झाड़ी झाड़ी में सिर छुपाता है ॥
है तअक़्क़ुब[१] से वैहम का सय्याद[२]।

१ पीछे जाना, भागे हुवे का पीछा करना २ शिकारी

छोड़ता ही नहीं ज़रा जल्लाद[३] ॥
गाह[४] बदने कसीफ में आया ।
गाह जिस्मे लतीफ में धाया ॥
कभी कारण में है पनाहं[५] गज़ीं ।
वैहम से बन गया है बाख़्तः[६] दीन ॥

३ मारने वाला या पोस्त उतारने वाला ज़ालम ४ कभी ५ पनाह (आश्चर्य) लेने वाला ६ हारा हुवा, थका मान्दा

---

८ शूदर (क्षुद्र)

जिस ने स्थूल में निशस्त करी ।
"जिस्म[१] वेरूं हूं" ठान *जी में ली ॥
नक़दे उलफत को वदन में रक्खा ।
ऐशो इशरत हवास[२] में चक्खा ॥
करलीया जिस्म अपना पाया-ए-तख़्त ।
खाने पीने में समझ रक्खा बख़्त[३] ॥

१ बाह्यदेह २ इन्द्रिय ३ नसीबा * दिल

न रक्खी इल्मो फज़ल से कुछ गर्ज़।
एक तन परवरी[4] ही समझा फर्ज़॥
गर्ज़ यह थी, चला जो चाल कहीं।
कि न हो जिस्म को ज़वाल[5] कहीं॥
जिसको परवाह नहीं है इज़्ज़त की।
है फक़त आर्ज़ू[6] तो लज़्ज़त की॥
डाल कर लङ्गरे[7] अनानीयत।
समझा दरया कसीफ[8] जमीयत॥
वे दरम[9] देह कसीफ का चाकर।
इस को कहना ही चाहे शूदर॥

४ केवल प्राण रक्षा या देहका पालन पोषन ५ गिरना, घटना ६ इच्छा, ख्वाहश ७ अहङ्कार का लंगर ८ कट्ठा किया हुवा खज़ाना ९ एक पैसा भी जो दाम न रखता हो, एक कौड़ी क़ीमत वाला भी नहीं जो हो

९ वैश्य.

डेरा जिस ने लतीफ में रक्खा।
राजधानी उसे बना बैठा॥
कह रहा है ज़ुबाने हाल से वह।
"देह सूक्ष्म हूं मैं" जो हो सो हो॥
जो टटोली से क़ाबू आता है।
ताना खञ्जर सा चीर जाता है॥
भूका काटेगा नंगा रैह लेगा।
ज़ाहरी पीड़ दुःख सैह लेगा॥
मौक्या शादी का हो, कि मरने का।
मर मिटेगा नहीं वह डरनेका॥
घर गिरौ रख के खर्च करदेगा।
चोटी क़र्ज़े से भी जकड़ देगा॥
कोई मेरे को बोली मार न दे।

१ अपनी वाणी अर्थात वाणी और अमल से

जिस्म सूक्ष्म को गोली मार न दे ॥
फ़िकर हर दम जिसे यह रहती है।
देखूं क्या खल्क़[2] मुझ को कहती है ॥
जान जिस की है निन्दा उस्तति में।
हमनशीनों[3] से बढ़ के इज़्ज़त में ॥
पल में तोला, घड़ी में माशा है।
पैण्डूलम[4] की तरह तमाशा है ॥
राये लोगों की मिसले चौगां[5] है।
गैन्द सां दौड़ता हरासां है ॥
रात दिन पेचो ताव है जिस को।
नंग का इज़्ज़तराब[6] है जिस को ॥
रहता इसी उधेड़ बुन में है।
पासे नामूस[7] ही की धुन में है ॥

२ खलक़त, लोग ३ बराबर वाले साथीयों से ४ घड़ी के नीचे जो एक धातू का टुकड़ा लटकता रहता है ५ गुल्ली डंडा के खेल की तरह ६ घबराहट, बेक़रारी ७ इज़्ज़त का खियाल, डर

जीता औरों की राये पर जो है।
ख्याले वैहशर्त फ़ज़ाये पर जो है॥
क़ियास में जिस के टेढ़ा वेढ़ापन।
तवा जिस की सदा है मुतलैंव्वन॥
गाह चढ़ती है, गाह घटती है।
रुख पहाड़ी नदी बदलती है॥
ऐसा वैहमी मज़ाज है जिस का।
देह सूक्ष्म से काज है जिस का॥
वैश्य कहना बजा है ऐसे को।
शकलो सूरत में ख्वाह कैसे हो॥

८ नफरत बढ़ानेवाले ख्याल ९ प्रकृति (तबीयत) १० नाना रंग बदलने वाली

---

१० क्षत्रिय.

जिस की निष्ठा है देह कारण में।

है, अचल बज़्म[1] में हो या रण में ॥
दुन्या हिल जाये पर ना हिलता है।
मुस्तकिले .अज़्म[2] कौल पक्का है ॥
ख्वाह तारीफ ख्वाह मुज़म्मत[3] हो।
शादी और ग़म पै जिस की .कुद्रत[4] हो ॥
लाज से भै जिसे ना असला[5] हो।
दो दिली से न काम पतला हो ॥
जो नहीं देखता है पवलक[6] को।
मद्दे नज़र वातने मुबारक हो ॥
राये पर और की न चलता है।
कौम को आप जो चलाता है ॥
लोग दुन्या के बन मुखालफ सब।
जान लेने को आयें उस की जब ॥

१ सभा २ मज़बूत इरादा ३ निन्दा, हक़ारत ४ ताक़त ५ बिलकुल ६ खलक़त, लोग

ज़हर सूली सलीब[७] या फांसी ।
हंस के सैहता है जैसे हो खांसी ॥
जिस को तारीफ की नहीं परवाह ।
खाली तारीफ से ही वह होगा ॥
पैर पूजेंगे, नाम पूजेंगे ।
लोग सब उस की बात बूझेंगे[८] ॥
उस को अवतार करके मानेंगे ।
लोग जब उस की बात जानेंगे ॥
धर्म क्षत्रिय है, यह मुबारक धर्म ।
बरतर अज़ ज़ोफो नंगो आरो शरम[९] ॥
आज इस धर्म की ज़रूरत है ।
धर्म यह बरतर अज़ कदूरत[१०] है ॥
नाम को ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो ।

७ सूली ८ समझेंगे ९ ह्या और शर्म १० मलिनता, गदला पन

नाम को वैश्य हो कि शूद्र (क्षुद्र) हो ॥
सब को दर्कार है, यह क्षत्रिय धर्म ।
जान नेशन[11] की है, यह क्षत्रिय धर्म ॥
इस को कहते हैं लोग कैरैक्टर[12] ।
देह कारण को जान, इस का घर ॥
उस तलेटी पै रहता है क्षत्रिय ।
राना पर्ताप और सेवा जी ॥
जिस से नादियां तमाम आती हैं ।
वज्र व्योपार को सजाती हैं ॥
है चमक दमक और आबो ताव ।
यह बलन्दी है गोया आलम[13] ताव ॥
इस ज़मीन पर यह है बलन्द[14] तरीं ।
मसनद[15] शाही को है .जेब यहीं ॥

११ क़ौम १२ श्रेष्ठ प्रकृति, उत्तम चालचलन १३ कुल जगत को रौशन करने वाली (प्रकाश देने वाली) १४ बहुत ऊंची १५ गद्दी, तख्त

चशमा व्यवहार का है सम्भाला।
राज है उस का, मरतबा आला॥
जोश है और खरोश है जिस में।
शूर्मा पन की होश है जिस में॥
शेरे नर को न लाये खातर में।
तेहलका डाले फौजो लशकर में॥
गरज से कोह को हलाता है।
दिल बब्बर[16] का भी देहल जाता है॥
जौक़[17] दरजौक़, फौज दल बादल।
मिथ्या लॉ[18] शै है, हेच और बातल[19]॥
धर्म की आन पर है जान .कुर्बान।
[20]गीदी बन कर न हो कभी हैरान॥
वही क्षत्रिय है, राम का प्यारा।

१६ बड़ा भारी शेर १७ झुण्ड के झुण्ड १८ कुच्छ चीज़ नहीं, तुच्छ १९ झूठी २० कमज़ोर दिल

देश पर जिस ने जान को वारा ॥
मस्त फिरता है ज़ोर में, बल में।
कौन्द जाता है बिजली बन, पल में ॥
तोप बंदूक की सदों[21] बलन्द से डर।
उङ्गली लेता नहीं वह कान में धर ॥
कपकपी में नहीं कभी आता।
लाले जान के पड़ें, नहीं डरता ॥
गरचिः घायल हो, फिर भी सीनास्पर[22]।
शोक करता नहीं, ना कुच्छ डर ॥
तीरो तल्वार की दना दन में।
अभिमन्यू[23] सा जा पडे रण में ॥
जां बाज़ी ही जिस की राहत[24] हो।
जंगो ज़ोरावरी ही फरहत[25] हो ॥

२१ आवाज़ २२ हौंसला कीये हुवे (छाती मज़बूत कीये तय्यार) २३ अरुजन के बेटे का नाम २४ आराम २५ खुशी

रण[26] हो, घमसान का क़यामत हो ।
बला का हंगामा, और शामत हो ॥
ज़ख़्म ज़ख़्मों पै खूब खाता है ।
पैर पीछे नहीं हटाता है ॥
सख़्त से सख़्त कारज़ारो[27] रज़्म ।
शान्ति दिल में हो, अज़्म हो बिल्जज़्म[28] ॥
जिस्म हर्कत में, चित्त सोकन[29] हो ।
दिल तो फ़ारग़ हो, कारकुन तन हो ॥
हर दो जानब समा भयङ्कर था ।
तुन्द मोरो मलख़[30]-सा लशकर था ॥
हाथी घोड़ों का, शूर वीरों का ।
शंख बाजे का, और तीरों का ॥
शोर था आस्मां को चीर रहा ।

२६ युद्ध, लड़ाई २७ महाभारत २८ बड़े मज़बूत (पक्के) इरादे वाला २९ स्थिर, अचल ३० अनगिनत, वेशुमार, अगणेय

गर्द से मिहर बन फकीर रहा ॥
अफरा तफरी में और गड़बड़ में।
वह दलावर कमाल की जड़ में ॥
क्या दखाता जवान मर्दी है।
क्या ही मज़बूत दिल है, मर्दी है ॥
गीत ठण्डक भरा सुनाता है।
फ़िलसफ़ा[31] क्या अजब बताता है ॥
[33] जिस के नुक़तों को ता अबद[32] कामल।
सोचा चाहेंगे ग़ौर से मिल मिल ॥
सखत नारों[34] में शान्त यह सुर है।
सच्चा यह मन चला बहादर है ॥

३१ शास्त्र (ज्ञान) ३२ हमेशा तक ३३ इस जगह कृष्ण से मुराद है ३४ गर्जों में

---

११ ब्राह्मण.

कोह[1] पर शिव नज़र जो आता है।

१ पर्वत

बर्फ़ को आब कर बहाता है ॥
जिस से कैलास ही न ताबां है ।
रौनके बैहर और बियाबां है ॥
वैश्य क्षत्रिय को और शूदर को ।
दे है प्रकाश किह-ओ मिहतर को ॥
ओम आनन्द आत्मा चैतन्य ।
तीनों देहों में है जो नूर अफ़गन ॥
निष्ठा इस में है जिस की कि "यह मैं हूं"
"शिव हूं, सूरज हूं, खास शङ्कर हूं"
रूये आलम पै नूर अफगन है ।
वह ब्राह्मण है, वह ब्राह्मण है ॥
मुक्त खुद, दर्शनों से मुक्त करे ।
नूर और ज़िन्दगी से चुस्त करे ॥

२ जल ३ चमकीला ४ छोटे और बड़े को ५ प्रकाश, (तेज) डालने वाला ६ कुल जहान पर

तीन गुण से परे है, पर सब को।
नूर देता है, ख्वाह क्या कुच्छ हो॥
जिस को फरहत न दे कभी पैसा।
ब्राह्मण है वोही जो हो ऐसा॥
खड़ा करता है नहीं दस्ते दुँआ।
है ग़नी, ज़ात ही में वह धनी हुवा॥
मांगता ख्वाब में भी कुछ न है।
उस की दृष्टि से काञ्च कुंदन है॥
(विष्णु को लात मार देता है।)[१०]
वह ब्राह्मण है, वह ब्राह्मण है॥
तीनों अजसाम से गुज़र कर पार।
[११]यां अ[१२]दू है नहीं, न कोई यार॥
हुसन में अपने खुद दरखशां हूं।

७ मांगने के लीये हाथ पिसारना ८ अमीर बड़ा ९ स्वस्वरूप १० भृगू से यहां मुराद है ११ यहां से मुराद है १२ दुशमन, शत्रू १३ रौशन

मिहरे ताँवां[14] हूं, मिहरे तावां हूं ॥
मिल्लतें क्या मज़े से खाता हूं।
मौत चटनी मिर्च लगाता हूं ॥
मेरी किरणों में हो गया धोका।
आँवे[15] का था सुराबे[16] दुन्या का ॥
क़िला दुःखों का सर कीया, ढ़ाया।
राज अँफलाको[17] मिहर पर पाया ॥
हस्ते मुतलक़[18], सरूरे मुतलक़[19] पर।
झंडा गाड़ा, फुरेरा लैहराया ॥
कुच्छ न बिगड़ा था, कुच्छ न सुधरा अब।
कुच्छ गया था न, कुच्छ नहीं आया ॥

१४ चमकीला सूर्य १५ पानी १६ मृग तृष्णा के जल का
१७ आकाश और सूर्य १८ सत्य स्वरूप, १९ आनन्द स्वरूप

---

१२ दुन्या की हक़ीक़त

क्या हैं यह? किस तरह हूये मौजूद? ।

इक निगाह पर सब की हस्ती-ओ-बूद[1] ॥
हां जगत है, सबूत दीजेगा।
इन्द्रियों पर यक़ीन न कीजेगा ॥

(१) बेशक आती नज़र है दुन्या पर।
है कहां आप ही न देखें गर ॥
माहो माही[2]-व-शाहो ज़रीन् ताज।
अपनी हस्ती को हैं तेरे मोहताज ॥
बर्क़[3] मौजूद है सभी शै में।
गो हवासों के हो न हल्के[4] में ॥
वक़्ते अज़हार[5], बर्क़ शोख़ीबाज़।
खुद ही मुसबत है, खुद ही मनफ़ी नाज़ ॥
तेरी माया है बर्क़ *वश चञ्चल।
यारों आगे कहां चलें छल बल ॥

१ स्थिती और होना २ चान्द सूर्य (अथवा मछली पर्यन्त सब जीव जन्तु) ३ बिजली ४ घेरा, हद ५ दृश्य, ज़ाहर होने के समय * बिजली की तरह

तू इधर देखता है आंख उठा ।
तू उद्धर बन गया कोहो सेहरा ॥[6]

(२) ख्वाब में हैं ख्याल की दो शान ।
जुज्वी[7] कुल्ली[8] "यह एक मैं" "यह जहान"
"मैं हूं इक मर्द" शाने जुज्वी है ।
"जुमला आलम," यह शाने कुल्ली है ॥
ख्वाबे पुख्ता शुदा है बेदारी ।
जाग! सारे तिरी है गुलकारी[9] ॥
तूही शाहिद[10] बना है, तू मशहूद[11] ।
शान तेरी है आस्माने कबूद[12] ॥
ख्वाब तेरा, खियाल तेरा है ।
जो ज़मीन-ओ-ज़मान ने घेरा है ॥
जल्वा तेरा यह, अम्बसाती[13] है ।

६ पर्वत और जंगल ७ व्यष्टिः ८ समष्टिः ९ बाग़ बूटा १० गवाह, साक्षी ११ हाज़र कीया गया, देखा गया १२ नीला आकाश १३ अज्ञान अथवा माया की विक्षेप शक्ति

वीज माया ही फैल जाती है ॥
क्या यह दुन्या खियाल मात्र है ।
क्या यह सच मुच खियाले ख़ातर[14] है ॥
अगर तुझे इसमें शक नज़र आवे ।
कुछ भी विन खियाल के दिखा तो दे ॥

(मन वृत्ति (खियाल) के फ़ुरने वग़ैर कोई भी शै मैहसूस[15] नहीं होसकती)

हां यह ख्वावो खियाल माया है ॥
'एक' कसरत[16] में आ समाया है ॥

(३) मरना जीना यह आना जाना सव ।
ठैहरना चलना फिरना गाना सव ॥
सव यह करतूत जान माया की ।
मिहरे तावां की एक छाया की ॥
पुर[17] ज़िया आफतावे रौशन राये ।

१४ दिल (मन) का ख्याल १५ भान १६ नानत्व १७ प्रकाश से भरपूर

गंग लैहरों पै नाचता है आये ॥
साक्षी सूरज कहीं न हिलता है।
आब बैहता है, यूं वह फिरता है ॥
छोटी बूंदों पै नूर सूरज का।
क्या धनुष बन गया है अचरज सा ॥
शीश मंदर में शंअ़ा जो रक्खा।
क्या समां हो गया चराग़ां का ॥
फ़ितनागर[19] आयीना में चशमे निगार।
झूट है, गो है यार से दो चार ॥
यह अविद्या में जो पड़ा आभास।
ब्रह्म कहलाया इस से जीव और दास ॥
यूं जो संसर्ग[20] से हुआ अध्यास।
सानी[21] यकता का ला बढ़ाया पास ॥
माया आयीनाः कैसी खुर्सन्द[22] है।

१८ दीपक १९ फसाद डालने वाला २० अन्दर परवेश २१ दूसरा २२ खुश

मज़हरे[23] राम सच्चिदानन्द है ॥
कुच्छ नहीं काम रात दिन आराम ।
काम करता है फिर भी सब में राम ॥
क्यों जी जब आप ही की माया है ।
दिल पै अन्दोह[24] क्यों यह छाया है ॥
हेच[25] दुन्या के वास्ते फिर क्यों ।
भाई भाई से तीरह ख़ातर[26] हों ? ॥
खटका कैसा ? झजक खतर क्या है ?।
बीमो[27] उम्मेद कैसी ? डर क्या है ? ॥
बादशाह का बुरा जो चाहता है।
सख्त जुरमे कबीरह[28] करता है ॥
देखियेगा हक़ीक़ी शाहंशाह ।
राज जिस का है कोह[29] से ता माह ॥

२३ दिखाने वाली, ज़ाहर होने का स्थान २४ ग़म, फिकर २५ नाचीज़, तुच्छ २६ खराब दिल २७ डर २८ बड़ा भारा पाप २९ तृणसे चान्द तक

तेरे नस में रगों में नाड़ों में।
ऐहले[३०] सोदागरी हैं राहों में॥
जिस का .ऐहदे हकूमते बर्कत।
चैन दे सिर में अक़ल को हर्कत॥
ऐसा सुलतान् अज़ीमे आली जाह।
तेरा ही आत्मा है जाये पनाह॥
ऐसे सुलतां से जो हुवा ग़ाफल।
हाये खुदकुश[३१] है शाहकुश[३२] क़ातल॥
क्यों जी कुच्छ शर्मो आर[३३] भी है तुम्हें।
क्यों यह कङ्गलों से दान्त लिलके हैं?॥
रींगना क्यों? कमर यह टूटी क्यों?
वाये क़िस्मत तुम्हारी फूटी क्यों?॥
रास्ती के गले छुरी क्यों है?।

३० खून दम इत्यादि ३१ आत्मघात करने वाला ३२ आत्म स्वरूप रूपी बादशाहको मारने वाला ३३ शर्म, ह्या

हक़[34] ही जीतेगा, सत की है जै ॥
क्यों ग़ुलामी क़बूल की तुम ने।
दर बदर ख़्वार भीक ली तुम ने ? ॥
थी यह लीला रची अनोखे ढब।
खेल में भूल क्यों गये मनसँब[35] ? ॥
ताजे नूरी को सिर से फैंक दीया।
टोकरा रंजो ग़म का सिर पे लीया ॥
अब जलालो जमाले ज़ात सम्भाल।
उठो, शव सा हों सब विषय पामाल ॥
नैय्यरे आँज़म[36] हो, तुम तो नूर फ़िगँन[37]।
खिदमते माया में न ढूंडो धन ॥
वैहम का माँर[38] आस्तीन से खोल।
मत फिरो मारे मारे डाँवाँ डोल ॥

३४ सत्य ३५ मर्तबा, दर्जा ३६ सूरज ३७ प्रकाश डालने वाले ३८ सांप

१३ ज़ाते बारी..

लैक माया यह आ गयी क्योंकर?
रूये आलम[2] सजा गयी क्योंकर?
ज़ाते वाहद[3] को क्यों शरीक लगी?
बे बदल हुस्न को क्यों यह लीक लगी?
बदर[4] को गैहन[5] यह लगा कैसे?
ऐसा ज़िल्ले ज़मीन[6] पड़ा कैसे?

१ ईश्वर, असली स्वरूप २ जहान्, दुन्या ३ एक अद्वतीय ४ चौदश का चन्द्रमा ५ ग्रहण ६ साया, परछाई पृथ्वि की

---

१४ जवाब.

(१) ऐ ज़मीन[1] दोज़ चशमे दुन्या बीं!।
तू ही खुद है बनी ख़ुसूफ़[2] यहीं॥
चान्द राहू ने जा न पकड़ा है।

१ पृथ्वि के साथ एकसार रहने वाली २ ग्रहण की छाया, ग्रहण

वैह्म तेरे ने तुझ को जकड़ा है ॥
ज़ाते[3] बेहद सदा है जूं की तूं ।
उस में रद्दो[4] बदल है यां न यूं ॥
दायें बायें इधर उधर हर सूं[5] ।
आप ही आप एक रस है हूं[6] ॥
ईनूं[7] आनूं[8], चूं[9] चुगूं[10], चुनीं[11]-ओ चुनां[12] ।
लौट आते हैं वहां से हो हैरान ॥
बरतर[13] अज़ फ़ैह्मो अक़लो होशो गुमां ।
लामकां[14] लाज़मां[15] नशां[16] अमकान ॥

(२) रूये[17] ख़ुर्शीद पर नक़ाब[18] नहीं ।
दुपैहर को कोई हिजाब[19] नहीं ॥

३ अद्वैत स्वरूप ४ विकार ५ तरफ ६ ईश्वर, ब्रह्म ७ यह ८ वह ९ क्यों १० किस तरह ११ ऐसा १२ और वैसा १३ मन का होश और अक़ल से भी दूर १४ देश रहित १५ काल रहित १६ चिन्ह रहित, निराकार १७ सूरज के मुख पर १८ पर्दा १९ पर्दा

आब[20] हायल नहीं सहाब[21] नहीं।
देखने की किसी को ताब नहीं॥
मौजज़न[22] हो रही है .उर्यानी[23]।
तिस पै पर्दा है तुर्रह हैरानी॥

(३) जूं रसन[24] में पदीदे सूरते[25] मार।
मुझ में माया-नमूद है तूमार[26]॥
यह स्वरूपाध्यास[27] है अज़हार।
जान मुझको, रहे न यह पिंदार[28]॥
और संसर्ग[29] को जो माना था।
तब तलक ही था, जब न जाना था॥
मारे[30] मौहूम में मोटाई तूल[31]।
तो वही है जो थी रसन में मूल॥

२० चमक ढांपे हुये नहीं २१ बादल, पर्दा २२ लैहरें मार रही है २३ नंगा पन २४ रस्सी २५ सांप की सूरत नज़र आती है २६ ढेर, लम्बी गाथा, वैह्म २७ अपने स्वरूप का भर्म २८ ग़रूर, समझ २९ आवेश ३० कल्पित सांप ३१ लम्बाई

यह हक़ीक़ी रसन का तूलो अर्ज़[32] ।
सारे मौहूम में हो आया फ़र्ज़ ॥
इस तरह गरचिः माया मिथ्या है ।
उस में संसर्ग सत्त ही का है ॥
दूर रहते हैं सारे दैहशत[33] के ।
नागनी काली से सभी हट के ॥
पर जो आकर क़रीब[34] तर देखा ।
बेख़तर[35] हो गये, मिटा खटका ॥
माहीयत[36] पर निगाह गर डालो ।
असले हस्ती को खूब सम्भालो ॥
कैसी माया, कहां हुवा संसर्ग? ।
कब थी पैदायश-व-कहां है मर्ग[37]? ॥
काल वस्तु का देश का मुझ में ।

३२ लम्बाई, चौड़ाई ३३ डर, भय ३४ बहुत नज़दीक
३५ निडर, निर्भय ३६ असल वस्तू, हक़ीक़त ३७ मृत्यु

नाम होगा न, है, हुआ मुझ में ॥
कौन तालिब[38] हुआ था, मुर्शिद[39] कौन?।
किस ने उपदेश करा, पढ़ाया कौन?॥
किस को संशय शकूक उठे थे?।
कब दलायल से हल फिर तै[40] हूये?॥
हस्ती-ओ-नेस्ती नहीं दोनों।
रुस्तगारी[41]-ओ-क़ैद क्योंकर हो?॥
क्या .ग़ुलामी कहां की शाही है?।
.आली जाही कहां? तुम्हाही है॥
मैं कहां? तू कहां सग़ीर[42]-ओ-कबीर?।
किस का सैय्यादो[43] दाम दाना असीर[44]?॥
किस की वहदत[45] और उस में कसरत क्या?।
क्या खुदाई वहां .इबादत[46] क्या?॥

३८ जिज्ञासु ३९ गुरू ४० साफ हल हूये ४१ आज़ादि, मुक्ति ४२ छोटा, बड़ा ४३ शिकारी और जाल ४४ क़ैद ४५ एकता ४६ बन्दगी

किस की तशबीह[47] और मुशव्वाह[48] क्या ?।
जैहल[49] क्या और .इल्म हो कैसा ? ॥
कैसी गंगा यहां पै राम कहां ? ।
.जाते मुतलक़ में मेरी नाम कहां ? ॥
कब खिली चान्दनी ? है ख्वाब कहां ? ।
रात कैसी हो ? आफताब कहां ? ॥
कब रसन था ? यहां पै मार नहीं ।
कोई दुशमन हुवा न यार नहीं ॥
अक्स इस जा नहीं है, .ऐन नहीं ।
नुकता पैदा नहीं है, ग़ैन नहीं ॥
कब जुदा थे ? न पाई बीनाई[50] ।
खुद खुदाई है, बल बे रानाई[51] ॥
कुछ बियान कीजेगा हाले .जात ।

४७ हमशकल दृष्टान्त ४८ दृष्टान्त दीया हुवा, बराबरी वाला ४९ अज्ञान ५० चक्षु दृष्टि ५१ बे रंगी अथवा रंगामेज़ी

हाय कहने में आये क्यों कर बात? ॥
कब कंवारी के फ़ैहम[52] में आवे।
लज़्ज़ते वैसल[53] कौन बतलावे? ॥
दस्पना[54] पकड़ता है अँशया[55] को।
कैसे पकड़े जो उङ्गली क़ाबिज़[56] हो? ॥
अक़ल बुद्धि हवास मन सारे।
मिसल चिमटा हैं, दुन्या अङ्गारे ॥
आत्मा अक़ल बुद्धि मन सब को।
क़ाबू रखता है, हाथ चिमटे को ॥
दुन्यवी शै पे अक़ल का बस है।
आगे मुझ आत्मा के खुद खस है ॥
अक़ल से ब्रह्म चाहो पेहचाना।
हाथ चिमटे के बीच में लाना ॥

५२ समझ में आवे ५३ विषयानन्द ५४ चिमटा ५५ वस्तू
५६ जो उङ्गली चिमटा को खुद पकड़े हुवे हो

ग़ैर मुमकिन महाल ही तो है।
दम जो मारे मजाल किस को है? ॥
नुत़क़! मशहूर है तू कॉर आरा[58]।
राम तक पहुंचने का है यारा[59]? ॥
नुत़क़ ने ज़ोर जान तक मारा।
गिर पड़ा आखरश थका हारा ॥
आंख खांने[60] से अपने बाहर आ!
ढूंड बैठी है बाग़ वन सेहरा[62] ॥
छान मारा जहान को सारा।
कैसे देखियेगा आंख का तारा?
ऐ .ज़ुबान! मोम तुझ से है खारा[62]।
कुच्छ पता दे कहां पे है दारा[63]? ॥
अपना सब कुछ .ज़बान ने वारा।

५७ वाणि, बोलने की शक्ति ५८ काम पूरा करने वाली ५९ बल ६० घर ६१ जंगल ६२ पत्थर ६३ दारा बादशाह से भी मुराद है और अपने घर से या स्वरूप से भी मुराद है

चढ़ गया उड़ गया चले पारा ॥
खूं रोता क़लम है बेचारा ।
लिखते लिखते ग़रीब मैं मारा ॥
ऐ क़लम, नुत़क़ ! ऐ .ज़ुबान, दीदाः ! ।
जुँस्तजू[६४] में मरो, है निस्तारा[६५] ॥
आंख की आंख, जान की है जान ।
नुत़क़ का नुत़क़ प्राण के है प्राण ॥
कौन देखे यहां दिखाये कौन ? ।
कौन समझे यहां सुनाये कौन ? ॥
लद गया होशो .अक़ल बनजारा ।
ओस[६६] सा कर सका न नज़्ज़ारा[६७] ॥
राम मीठा नहीं, नहीं खारा ।
राम खुद प्यार है, नहीं प्यारा ॥

६४ ढूंड ६५ छुटकारा ६६ शबनम ६७ किसी वस्तू का देखना

राम हलका नहीं, नहीं भारा।
राम मिलता नहीं, नहीं न्यारा ॥
खंड टुकड़ा नहीं, नहीं कियारा।
ख़्याले तक़्सीम[68] पर चला आरा ॥
राम है तेग़ तेज़ की धारा।
खेल ले जान पर तू आ यारा[69]! ॥
उस को आदिल[70] रहीम ठेहराना।
उससे दुन्या में बेहतरी चाहना ॥
ख़्वाहशों का दिलों में भर लाना।
उन के बर आने की दुआ गाना ॥
मतलबी यार उस का बन जाना।
चल परे हट! नहीं वह अंजाना ॥
राम जारोब कश[71] नहीं तेरा।

६८ बांटने के ख्याल पर ६९ ऐ प्यारे दोस्त! ७० मुंसफ, न्यायकारी ७१ झाड़ू देने वाला (भङ्गी)

सिर से गुज़रो, वैसाल[७२] हो मेरा ॥
ख्वाहशों को जिगर से धो डालो ।
हवसे दुन्या[७३] को दिल से रो डालो ॥
आर्ज़ू को जला के खाक करो ।
लज़्ज़तों को मिटा के पाक करो ॥
वैहके फिरना भटक भटक बॉतल[७४] ।
छोड़ कर हूजीये अभी कामल ॥
तू तो मॉबूद[७५] है ज़माने का ।
देवताओं का देव तू ही था ॥
ऐहले अॅसलाम[७६] हिन्दु ईसाई ।
गिर्जा मन्दर मसीत, दोहाई ! ॥
दे के दोहाई राम कहता है ।
तू ही तो राम गौड[७७] मौला है ॥

७२ मुलाक़ात, दर्शन ७३ दुन्या के पदार्थों का लालच ७४ झूटमूठ ७५ पूजनीय, ७६ ऐ मुसल्मानों ! ७७ God, ईश्वर

सब मज़ाहब में सब के मोबंद में।
पूजा तेरी है, नेक में बद में॥
ऐ सदा मस्त राज मतवाला!।
रुतवा औसाफ से लिरा वाला॥
ऐ सदा मस्त लाल मतवाला!।
अपनी मैहमां में मौज कर वाला॥
*एकमेवाद्वितीय तेरी ज़ात।
वाहदु लाशरीक मेरी ज़ात॥
पास तेरे फड़क ले गैरीयत।
गैरमुमकन है, वल वे महवीयत॥
एक ही एक, आप ही हूं आप।
राम ही राम, किस की माला जाप?॥

७८ मंदर ७९ सिफतों ८० एक, बग़ैर मिसाल के ८१ मैहव होना * सिर्फ एक ही है दो नहीं, लासानी

---

१९ आदमी क्या है?

(१) दाना खशखश का एक बोया था।
बावा आदम[1] ने इब्तदा में ला॥
एक दाना में ज़ोर यह देखा।
बढ़ गया इस क़द्र, नहीं लेखा॥
इस क़दर बढ़ गया फला फैला।
जमा करने को न मिला थैला॥
कुठले कुठली भरे हुवे भरपूर।
बनीये सौदागरों के कोठे पूर॥
एक दाना हकीर[2] छोटा सा।
अपनी ताक़त में क्या बला निकला॥
आज बोने को दाना लाते हैं।
इस की ताक़त भी आज़माते हैं॥

१ हज़रत आदम जिसको ईसाई और मुसलमान अपना पैहला पैग़म्बर सृष्ठि रचने वाला मानते हैं २ नाचीज़

यह भी खशखाश ही का दाना है ।
यह भी ताक़त में क्या यँगाना है ॥
हूबहू है वुही तो इस में भी ।
शक्ती आदम के वीज में जो थी ॥
सच वतायें, है यह वुही दाना ।
न यह फैला हुवा न *दोगाना ॥
खूव देखो विचार करके आप ।
माहीयत वीज को क़लील सा नाप ॥
ग़ौर से देखिये हक़ीक़त को ।
नज़र आता है वीज क्या तुम को? ॥
असल दाना नज़र न आता है ।
न वह घटता है, वढ़ न जाता है ॥
मेरे प्यारे! तू ज़ाते वाहद है ।
तेरी कुदरत अगरचिः वेअ़द है ॥

३ अकेला, वे मिसाल ४ असलीयत ५ थोड़ा सा ६ वे शुमार बग़ैर, गिन्ती के * दूसरी क़िस्म का

(२) जान नन्ही[7] को जबकिः सायंसदान्[8]।
इम्तिहान् को है काटता यक्सान्॥
जिस्म गो होगया हो दो टुकड़े।
लैक मरते नहीं वह यूं कीड़े॥
पेशतर काटने के एक ही था।
जब दीया काट दो हूवे पैदा॥
दोनों वैसा ही ज़ोर रखते हैं।
जैसे वह कीड़ा जिस से काटे हैं॥
दो को काटें तो चार बनते हैं।
चार से आठ बन निकलते हैं॥
क्या दिखाती है, खोल कर यह बात।
काटने में नहीं है आती ज़ात[9]॥
गो मनु का शरीर छूट गया।
पर करोड़ों हनूद हैं पैदा॥

७ छोटी सी ८ सायंस विद्या का जानने वाला ९ सत्य वस्तु

हर ऋषि की नसल[10] में है तुही।
शक्ति आदि मनु में जो तव थी॥
हां अगर कुछ क़सर है ज़ाहर में।
दुर्रे यक्ता[11] पड़ा है कीचड़ में॥
झट नकालो यह हीरा साफ़ करो।
ज़िद न कीजीयेगा, बस मुआफ़ करो॥

(३) एक शीशे में एक ही रू[12] था।
शीशा टूटा, .अदद[13] बढ़ा रू का॥
मुख़्तलिफ हो गये बहुत अँबदां[14]।
इन में ज़ाहर है एक ही इन्सां॥
ज़ैद हो बकर हो .उमर ही हो।
मज़्हरे[15] आदमी है, कोई ही हो॥

१० औलाद ११ बेमसाल मोती १२ चेहरा, मुख १३ गिन्ती, नम्बर १४ देह, जिस्म १५ ज़ाहर होने का स्थान, जताने वाला

गो है नक़रे[16] का मॉरफों[17] में ज़हूर।
नाम रूपों में है, यही मामूर॥
पर यह नकरा बजाते खुद क्या है?
इस में हिस्सों का दख़ल बेजा है॥
इस्म फरज़ी, शकल बदलती है।
पर जो तू है, सो एक रस ही है॥
तू ही आदम बनाथा, तू हव्वा[18]।
तू ही लाट साहब, तूही हौवा॥
तू ही है राम, तू ही था रावण।
तू ही था वह गड़र्या[19] ब्रिन्द्राबन॥
झूट तुम को सनम[20]! न ज़ेबा[21] है।
तूही मौला है, छोड़ दे है है॥

१६ .आम शब्द जो बोलने वर्तने में आये १७ गुणवाचक अथवा नाम वाचक शब्द १८ आदम हव्वा मुसलमानों के दो पैग़म्बर हैं जिन से यह पृथ्वि उत्पन्न हुई मानते हैं १९ कृष्ण से मुराद है २० ऐ प्यारे! २१ वाजब, ठीक

सीमॅबर[22] का वह चांद सा मुखड़ा।
तेरा मज़हर है, नूर का टुकड़ा॥
दिल जिगर सब का हाथ में है तेरे।
नूरे मौफ़ूर[23] साथ में है तेरे॥
माहो खुर्शीद[24], वर्को अञ्जमो नार।
जान करते है राम पर ही निसार[25]॥

२२ चांदी वाला २३ बहुत .ज्यादा कीया हुवा प्रकाश, यानी प्रकाश स्वरूप २४ चांद, सूर्य, बिजली, तारे और अग्नि २५ कुर्बान्

नोट—(नम्बर १, २, ३ से मुराद तीन प्रकार की युक्तियों से है जिनसे लेखक ने सिद्धान्त को दर्शाया है)

भारत वर्ष.

१ भारत वर्ष की स्तुति.

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा।

हम बुलबुलें हैं उसकी, वह बोस्तां[1] हमारा ॥
गुर्बत[2] में हों अगर हम, रहता है दिल वतन[3] में।
समझो वुहीं हमें भी, हो दिल जहां हमारा ॥
पर्वत वह सब से ऊंचा, हमसाया आस्मां का।
वह सन्तरी हमारा, वह पास्बां[4] हमारा ॥
गोदी में खेलती हैं जिस के हज़ारों नदियां।
गुलशन है जिन के दम से रश्के जहां हमारा ॥
ऐ आबे रवदे[5] गंगा! वह दिन है याद तुझ को।
उतरा तेरे किनारे जब कार्वां[6] हमारा ॥
मज़हब नहीं सखाता आपस में बैर रखना।
हिंदीं हैं हम, वतन है हिन्दोस्तान हमारा ॥
यूनानो मिसरो रूमा सब मिट गये जहां से।
बाक़ी है पर अभी तक नामो नशां हमारा ॥

१ बाग़ २ परदेश ३ अपने देश में ४ चौकीदार, मुहाफ़िज़
५ ऐ गंगा नदी के जल ६ क़ाफ़ला

कुच्छ बात है कि हँस्ति मिटती नहीं हमारी।
सदीयों से आस्मां है ना मिहरवान् हमारा॥
अक़बाल अपना कोई मैहरम नहीं जहां में।
मालूम है हमीं को दर्दे निहां हमारा॥

७ मौजूदगी, वस्तुता ८ कवि का नाम है ९ वाक़फ १० छुपा हुवा दर्द

---

२ भारत वर्ष की महिमा.

चिश्ती ने जिस ज़मीन् में पैग़ामे हक़ सुनाया।
नानक ने जिस क़लीम में वहदत का गीत गाया॥
तातारियों ने जिस को अपना वतन बनाया।
जिसने हजाज़ियों से दश्ते अरब छुड़ाया॥
मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है (टेक)
यूनानियों को जिस ने हैरान कर दीया था।

१ मुसलमानों का पैग़म्बर २ ईश्वर का हुक्म ३ मुलक ४ अद्वैत ५ अरब मुलक का जंगल, रेगस्तान्

सारे जहां को जिसने .इल्मो हुनर दीया था॥
मिट्टी को जिस की हक़[8] ने ज़र का असर दीया था।
तुरकों का जिस ने दामन हीरों से भर दीया था॥
मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है॥
फिर ताव[9] देके जिस ने चमकाये कहकशां[10] से।
टूटे थे जो सितारे फारिस के आस्मां से॥
वहदत की [11] नै सुनी थी दुन्या ने जिस मकां से।
मीरे अ़रब[12] को आई ठंडी हवा जहां से॥
मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है॥
गौतम[13] का जो वतन है, जापान का हरम[14] है।
.ईसा के आशक़ों का छोटा योरूशलम[15] है॥
मदफ़ून[16] जिस ज़मीन में असलाम का चशम है।

६ ईश्वर ७ स्वर्ग ८ चादर का पल्ला अर्थात जेब ९ ताकत १० आकाश में दूधीया रास्ता (milky path) ११ बांसरी यानी अद्वैत का राग १२ महम्मद १३ बुद्ध भगवान १४ तीर्थ का मुक़ाम, बड़ा मंदर १५ .ईसायों के पूजने का मंदर १६ दफन कीया गया

हर फूल जिस चमन का फ़िरदौस[17] है, अरम[18] है ॥
मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है ॥

१७ बहिश्त १८ स्वर्ग

---

३ हुब्बे[1] वतन.

देखा है प्यारे! मैं ने दुन्या का कारखाना।
सैरो सफर कीया है छाना है सब ज़माना ॥
अपने वतन[2] से बेहतर कोई नहीं ठिकाना।
खारे वतन[3] को गुल से खुशतर[4] है सब ने माना ॥
ऐहले वतन[5] से पूछो, तुम खूबियां वतन की।
बुलबुल ही जानती है आज़ादियां चमन[6] की ॥ १ ॥
खाओ हवा वतन की, कुछ और ही मज़ा है।
पानी पीयो वतन का, अमृत से भी खरा[7] है ॥

१ अपने देश की महब्बत २ अपना देश ३ स्वदेश का कांटा अर्थात दुःख ४ उत्तम ५ स्वदेश के लोग ६ बाग़ ७ अच्छा, स्वच्छ

खाके वतन न कहिये, इक्सीरो कीमीया है।
रुतबा[9] तेरी ज़िमी का कुछ ऐ वतन ! जुदा है ॥
जो शै ग़रज़ यहां है दुन्या से है निराली।
नामे वतन ने इस में ताज़ाः है जान डाली ॥ २ ॥
बाग़ों में फिर के देखो कुछ और ही है नज़हतं[10]।
खेतों से यहां के आती है आंख में तरावत ॥
रखते हैं यां के दरया कुछ और ही लताफत।
यां के पहाड़ में है अर्शे बिरीं[11] की रफअत[12] ॥
दुन्या में फिर के देखा हरगज़ कहीं नहीं है।
बाग़े बहिश्त कहिये यां की ज़िमीन नहीं है ॥ ३ ॥
है धूप में वतन की कुछ और नूर[13] तावां।
और चांदनी यहां की चांदी सी है दरख्शां[14] ॥

८ दुःखनाशक ९ दर्जा १० शुद्धताई ११ सबसे अति ऊंचा आकाश १२ मेहरबानी, बरकत १३ और सूरज चमक रहा है १४ चांदी सी है चमकीली

अन्वाँर[15] की तंजल्ली[16] बिजली से है नुमायाँ[17] ॥
रैहमत की वह झड़ी है कहिये न उस को बाँरां[18] ॥
मिसले ज़मीरे[19] रौशन मतलों[20] की है सफाई।
दिल में उठीं उमंगे, जिस दम घटा भर आई ॥ ४ ॥
देखे यहां के इन्सां अक्सर फरिश्ता[21]: खो हैं।
सब औरतें हसीं[22] हैं सब मर्द खूबरू[23] हैं ॥
रखते हैं यहां के हैवां कुछ और [24]खो-ओ-बू हैं।
और ताइरों[25] को देखो तो क्या ही खुशगलू[26] हैं ॥
इन्सान और हैवान यूं तो हैं, देखे भाले।
लेकिन यहां हैं सब के अँन्दाज़[27] कुछ निराले ॥ ५ ॥
जौहर[28] वतन में आकर खुलता है आदमी का।

१५ अर्थात चांद स्तारे इत्यादि १६ प्रकाश १७ ज़ाहर १८ वर्षा १९ रौशन (शुद्ध) चित्त (दिल) की तरह २० आकाश से मुराद है २१ दैव स्वभाव रखने वाले २२ सुन्दर २३ सुंदर शकल २४ स्वभाव और मिज़ाज २५ पक्षी २६ उत्तम गले (सुर से गाने) वाले २७ माप, वज़न यहां क़द से मुराद है २८ गुण, खूबी

जब था वतन से बाहर, बेशक वह आदमी था ॥
यां आदमी नहीं वह है बाप या कि बेटा।
कहता है कोई भाई कोई उसे भतीजा ॥
यां गोशंज़द[२९] हैं हरसू उलफत भरी[३०] सदायें[३१] ॥
बाहर वतन से हरगज़ जो कान में न आयें ॥ ६ ॥
है हम को जानो दिल से अपना वतन प्यारा।
अच्छा वह दिन है उस की खिदमत में जो गुज़ारा ॥
कहते हैं हम वतन को आंखों का अपनी तारा।
वह जान है हमारी, ईमान है हमारा ॥
हां मेहर[३२]! यह सखुन[३३] है, दुन्या में सब ने माना।
अपने वतन से बेहतर[३४] कोई नहीं ठिकाना ॥ ७ ॥

२९ कान भर रही या कानों को सुना रहीं ३० प्रेम भरी ३१ आवाज़ें ३२ कवि का नाम है ३३ बात, नसीहत है ३४ अच्छा, उत्तम

---

४ राग देश.

कभी हम भी वलन्द इक़्बाल[1] थे, तुम्हें याद हो कि न
याद हो ।
हर फन में रखते कमाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद
हो ॥ १ ॥

पढ़ते थे जब हम वेद को, जानें थे सब के भेद को ।
रखते न अपनी मिसाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद
हो ॥ २ ॥

पाबन्द थे जब धर्म के, माहर थे अपने कर्मके ।
रौशन सभी पुर जलाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद
हो ॥ ३ ॥

जब से जहालत[2] आ गयी, तारीकी[3] हर सू[4] छा गयी ।
मुफलिस हैं जो खुशहाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद
हो ॥ ४ ॥

१ दबदबे वाले, बड़े तप वाले, २ अज्ञान ३ अन्धकार
४ तरफ

हाकिम हैं जो मँहकूम[5] थे, खादिम[6] हैं जो मँखदूम[7] थे।
शेर अब हुवे जो शृगाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद
हो ॥ ९ ॥

हालत दिगर[8] गूं हो गयी, क़िसमत किशवर[9] की सो गयी।
रोते हैं अब जो निहाल[10] थे, तुम्हें याद हो कि न याद
हो ॥ ६ ॥

५ प्रजा, जिन पर हकूमत थी ६ नौकर ७ खिदमत कीया गया अर्थात मालक ८ दूसरी तरह ९ मुलक १० खुश, आनन्द

---

९ भजन.

इक दिन राहे तरक्की में हम भी रहनमां[1] थे।
अब लोग पूछते हैं नामो नशां हमारा॥
यूनान[2] मिसर[2] रूमा[2] इंगलैण्ड[2] गाल[2] जरमन[2]।
शागिर्द इक ज़माने में था जहां हमारा।

१ लीडर, रास्ता दिखाने वाला २ मुलकों के नाम हैं

दुन्या में हो रहा था भारत वर्ष का चर्चा ।
सब की .ज़ुबान् पर था लुत्फे बियान् हमारा ।
गोतम व्यास भीषम थे नामवर यहीं के ।
अर्जुन सा तीर अफगन था इक जवान् हमारा ॥
रौनक़ चमन की सारी फसले खज़ां ने लूटी ।
वीरान हो गया है सब गुलिस्तान् हमारा ॥
हां अहले हिन्द उठो, हालत ज़रा संभालो ।
नक़्शाः हुवा दिगर गूं है वे गुमान् हमारा ॥
राहत की गर तलब है, सब इत्तफ़ाक़ करलो ।
छोड़ो नफ़ाक़ इसी में होगा ज़ियान् हमारा ॥

३ हमारे ही ज़िकर के गीत अथाव महिमा ४ तीर फैंकने वाला ५ जवान मर्द, वहादर ५ वाग़ की वहार ६ भारत वर्षा ७ उलट, दूसरी तरह का ८ आराम, आनन्द ९ जिज्ञासा १० नुक़्सान

६ लौनी.

(टेक) आज्ञा में जिन की जहान था, उन की कुल में हमीं तो हैं।
सात द्वीप नवखंड बीच में जिन का मान था हमीं तो हैं ॥
(चौक) चौदाः[1] विद्या जो निधाने थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
जिन से चतुर हैं पशू हैवान् अब, उन की कुल में हमीं तो हैं ॥
वेदों का मानें प्रमाण थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
सांचे है मिथ्या .कुरान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
सब विद्याओं की जो खान[2] थे, उन की कुल में हमीं तो हैं ॥ १ ॥ सात द्वीप०
ब्रह्मण यहां पूरे गुणवान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।

१ चौदह विद्यामें चतुर अर्थात चौदह विद्या के खज़ाने वाले २ कान, मंबा, खज़ाना

मूर्ख हूये जाती अभिमान में, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
सब का जो चाहें कल्याण थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
ठग्गी की धरली दुकान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
विद्या का करते थे दान जो, उन की कुल में हमीं तो
हैं ॥ २ ॥ सात द्वीप०
ऋषी मुनी जहां ज्ञान वान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
भंग चर्स में हैं गल्तां[३] अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
जिन का देव सर्व शक्तिमान था, उन की कुल में हमीं तो हैं।
जिन का इष्ट है विषय ध्यान अब, उन की कुल में हमीं
तो हैं।
संसकृत जिन की अपनी ज़बान थी, उन की कुल में
हमीं तो हैं॥ ३ ॥ सात०
आकाश में चलते विमान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
रेल देख हो गये हैरान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥

३ फंसे हुवे, डूबे हूवे

भीम सैन वाली बलवान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
घुटनों पर रख उठें हाथ अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
कृष्ण, राम, भीषम् समान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं
॥ ४ ॥ सात०

ब्रह्मचर्य की जिन को बान थी, उन की कुल में हमीं तो हैं।
बल वीर्य खोय नातवाँ हुवे, ऐसे नादान् हमीं तो हैं॥
लक्षसिंहारी जिन के बान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
चूं का नहीं कटें कान अब, ऐसी सन्तान हमीं तो हैं॥
अंगद सुग्रीव हनूमान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
५ ॥ सात०

देश उन्नति का था ध्यान जिन्हें, उन की कुल में हमीं तो हैं।
भारत में कर बैठे हान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
प्राणियों पर देते प्राण जो, उन की कुल में हमीं तो हैं।
मद् मांस को करे पान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं॥

४ कमज़ोर ५ लक्ष सिंहों को मारने वाले

गौ जान पर जिनकी जान थी, उन की कुल में हमीं तो हैं ॥ ६ ॥ सात०

आर्यावर्त जिन का स्थान था, उन की कुलमें हमीं तो हैं।
जिन का स्थान हिन्दुस्थान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
बड़े बड़े यहां धनवान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
भोजन बिन हो रहे विरान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
विद्या में करते शिनान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं ॥ ७ ॥ सात०

सत उपदेश करते थे गान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं।
काक शास्त्र करें बिखान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
सत असत लेते थे छान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं।
सुन के सत जायें बुरा मान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
नैवलसिंह कहे वेद धर्म पर धरे ध्यान फिर हम ही तो हैं ॥ ८ ॥ सात द्वीप०

६ एक शास्त्र का नाम है जिसमें विषय भोग करने की नानाविधि लिखी हुई हैं अर्थात विषय भोग का शास्त्र ७ कवि का नाम है

७ भारत को सुन्ना छोड़ के वह कहां गये महाराजे (टेक)
(कली) गये राम लक्ष्मण कहां शूरवीर बलधारी
जिनके बल से पृथिव कांपे थी सारी
गये कहां युधिष्ठर भीम भीषम तपधारी
कहां परशुराम अरुजन से शसत्र से खिलारी
कहां करण गये अभिमानी कहां गुरु गुविंद लासानी[1]
प्रताप सिंह बलवानी जिन की विक्ष्यात[2] कहानी
(कीये काज उन्हों ने वडे, न मन में डरे।
युद्ध में लड़े, नहीं मुंह मोड़ के ॥)
रण अन्दर हर दम गाजे, वह कहां गये महाराजे ॥ १ ॥
कहां गये वसिष्ठ और व्यास से विद्याधर
कहां कनाद गोतम कपल जैमिनी मुनीवर
कहां पतंजल से ऋषी और पाराशर
जिन की कृपा से विद्या फैली घर घर

१ अद्वतीय, जिस की मानन्द कोई और न हो २ मशहूर, प्रसिद्ध

कहां गये पाणिनि भाई जिन रचदी अष्टाध्यायी
कहां गये कृष्ण सुखदाई, जो वेदक धर्मानुयायी
(गये नारद ब्रह्मा कहां, करूं क्या बियान।
रहे नहीं यहां, वह नाता³ तोड़ के ॥)
जा कर परलोक विराजे ॥ वह कहां गये० ॥२॥
कहां हरिश्चंद्र से, राम गये सतवादी
दीये पुत्र स्त्री त्याग और राजादि
कहां गये दशरथ और जनक धर्मानुयायी⁴
नहीं टरे वचन से प्यारी जान गंवाई
कहां शिव धधीज राजा नल, कहां मोर्ध्वज विक्रम शल
कहां दलीप अज रघू निर्मल, रहे बने धर्म में निश्चल
(अब क्या तदवीर बनायें, कहां से लायें।
मुफ्त चिल्लायें, मरें सिर फोड़ के ॥)
सब हो गये काज अकाजे⁵ ॥ कहां वह गये० ॥३॥

३ सम्बन्ध, रिशताः ४ धर्म के मुताबक चलने वाले ५ खराब बेकार, बुरे

क्षत्री कुल में होगये वेश्यागामी[6]
दी डोर धर्म की छोड़ पाप की थामी
व्रह्मण कुल जो ऋषी मुनीयों के नामी
वह होगये विद्या हीन और बहु दाँमी[7]
संध्या और गुरुमंत्र बिसारा, लगे अग्निहोत्र नहि पियारा
यूं भारत करे पुकारा, कुल डूवा सभी हमारा
(अव भी सोच मतहीन, बनो प्रवीर्ण[8]।
मुरारी चीन्[9], दिलो जान जोड़ के ॥)
वेदों के वजाओ वाजे ॥ कहां वह गये० ॥ ४ ॥

६ कंचनी से विषय भोग करने वाले ७ भारे के टट्टू अर्थात बहुत दाम मज़दूरी ले कर काम करने वाले, या विद्या धन को छोड़ कर जड़ माया (दौलत) अर्थात रुपय अकट्ठा करने पर लगे हुवे ८ चतुर, चालाक ९ पाओ, अनुभव करो

---

८ राग—समा कैसा यह आया है (टेक)

न यारों में रही यारी, न भाइयों में वफादारी।

महब्बत उठ गयी सारी, समां कैसा यह आया है॥ १ ॥
जिधर देखो भरी कुलफ़त, भुलादी सब ने है उलफ़त।
बुरी सोबत बुरी संगत, समां कैसा यह आया है ॥ २ ॥
सभायें कीं बहुत जारी, बने खुद उन के अधिकारी।
न छोड़े कर्म बिभचारी, समां कैसा यह आया है ॥ ३ ॥
बहुत उपदेश कहें लैक्चर, मगर उलटा चलें उन पर।
अक़्ल पर पड़ गये पत्थर, समां कैसा यह आया है ॥४॥
सचाई को छुपाते हैं, दिल औरों का दुःखाते हैं।
वृथा साँचे कहाते हैं, समां कैसा यह आया है ॥५॥
नहीं व्यवहार की शुद्धि, विपर्यय हो रही बुद्धि।
विचारें सत नहीं कुछ भी, समां कैसा यह आया है ॥६॥
घटा है पाप की छाई, उपद्रव होवें हर जाई।
है इक को इक दुःखदाई, समां कैसा यह आया है ॥७॥
न जानें देश के वासी, बनें कब सत्य विश्वासी।

१ द्वेष २ सच्चे पुरुष ३ उलटी ४ हर जगह, सब तरफ.

मिटे अब कैसे उदासी, समां कैसा यह आया है ॥८॥

---

९ रेखता

सत्य धर्म को छिपा दिया, किसने? नफाक़ ने।
लोगों में छल फैला दिया, किसने? नफाक़ ने॥ } टेक

यह देश इक ज़माने में दुनिया की शान था
अब सब से अदनाः[1] कर दिया, किस ने?॥ नफाक़ ने० १

द्विज[2] धर्म कर्म करने में रहते थे नित मगन
अब उन को पँस्त[3] कर दिया, किस ने?॥ नफाक़ ने० २

हर घर में शब्द सुनते थे वेदों पुराण के
उन सब को ही मिटा दिया, किस ने?॥ नफाक़ ने० ३

महाबली रावण को तो जानत सभी यहां
सब नाश उस का कर दिया, किस ने?॥ नफाक़ ने० ४

१ तुच्छ, नीचा २ ब्रह्मन, क्षत्री, वैश्य जाति ३ गिरा दीया

आया है वक्त अब तो हितैशी[४] बनो सभी
घर घर में दख़ल कर लिया, किस ने? ॥ नफ़ाक़ ने० ५

[४] आपस में हित (प्यार) करने वाले

---

१० सदाये आस्मानी (आकाशवाणी)

हाये चेचक[१] ने वाये चेचक ने ।
इस अविद्या के हाये चेचक ने ॥
कर दिया आतमा क़ीबुले[२] मर्ग ।
क़ैदे[३] कसरत में हो गया संसर्ग[४] ॥
चेहरा रौशन था साफ़ शीशा सा ।
हो गया दाग़ दाग़ यह कैसा ॥
मिहरे तॅलअ़त[५] पै दाग़ आन पड़े ।

१ माता नाम बिमारी को कहते है (small pox), यहां द्वैत रूपी बिमारी से मुराद है २ मृत्यु के तुल्य ३ नानत्व प्रच्छेद (बहुल्य नानापने की कैद में) ४ आवेश्य, प्रवेश ५ सूरज जैसे सुन्दर मुख पै

तारे सूरज पै कैसे आन चढ़े ॥
एक रस साफ रुये ज़ेबा[6] था ।
दाग़े कसरत का लग गया धब्बा ॥
होगया पुरुष माल[7] माँता[8] का ।
यानि वाहर्न यह सीतला का हुवा ॥
मर्ज़ ऐसा बढ़ा यह मुतअद्दी[9] ।
हिन्द सारे की खबर इसने ली ॥
वह दवा जिस से मर्ज़ जायेगा ।
गौ माँता[10] के थन से आयेगा ॥
पुर ज़रूरी है वैक्सी[11] नेशन ।
वरना मरली है यह अभी नेशन[12] ॥
छोड़ दो तुम ज़री तअस्सव[13] को ।

६ सुन्दर रूप ७ सीतला देवी की स्वारी ८ सवारी अर्थात गधा क्योंकि माता का वाहन गधा होता है ९ बढ़ जाने वाला, फैल जाने वाला १० इस जगह उपनिषद् से मुराद है ११ (अद्वैत का) टीका लगाना १२ कुल नसल, कौम १३ तर्फदारी

टीका लगवायेगा अब सब को ॥
गाये के थन से अलफ[१४] की निशतर ।
ला रही है अलाज, लीजे कर ॥
शहर हर इक में हर गली घर घर ।
टीका अद्वैत का लगा देना ॥
बच्चे लड़के बड़े हों या छोटे ।
यह सरायत[१५] भरा दवा देना ॥
गर न मानें तो पकड़ कर बाज़ू ।
टीका यह तीन[१६] जा लगा देना ॥
दर्द भी होगा पीड़ भी होगी ।
डर का नोटस[१७] न तुम ज़रा लेना ॥

१४ अलफ इस जगह उस रसाले से मुराद है जिस को स्वामी रामजी महाराज ने अपनी कलम से लिखकर छपवाया था और जिस रसाले के अन्त में यह कविता दर्ज है १५ जलदी अन्दर घुस (दाखल हो) जाने वाला १६ तीन जगह (यहां तीन शरीरों से मुराद है, कारण सूक्ष्म स्थूल) १७ ख्याल, ध्यान

"शुद्ध तू है" "निरञ्जनोसि[18] त्वम्"।
लोरी राते समय यह गा देना॥
फिर जो चेचक के ज़ख्म भर आयें।
सीतला भी खुदा मना देना॥
ग़ैर[19] बीनी-ओ-ग़ैर दानी[20] को।
मार कर फूंक इक उड़ा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम तत्सत् है ओम् तत् सत् ओम्॥
प्यारे हिन्दुस्तान! फलो फैलो।
पौद[21] पौदे को ब्रह्म विद्या दो॥
यह है वह आबे गंग[22] मर्दुम[23] खेज़।
बूटे बूटे को कर जो दे ज़र[24] रेज़॥
वन है या बाग़ खूबसूरत है।

१८ तू कल्याण रूप है १९ द्वैत दृष्टि भेद दृष्टि २० भेद ज्ञान २१ बूटे बूटे को २२ गंगा जल २३ आंख जगाने वाला अथवा आंख खोलने वाला या पुरुषों के जगाने वाला २४ मालदार, हरा भरा

सब को इस आब[25] की ज़रूरत है ॥
रौशनी यह सदा मुबारक है ।
जान सब की है, यह मुबारक है ॥
सर्व[26] हो गुल, ग्याह[27], गन्दुम[28] हो ।
रौशनी बिन तो नाक में दम हो ॥
सिफला पन[29], दास पन, कमीना पन ! ।
छोड़ दे हिंद और चलता बन ॥
काशी मक्का युरुशलम[30] पैरस ।
रूस अफरीका अम्रिका फारस ॥
बेहरो बर[31], तूल[32] बल्दो अर्ज़[33] बलद ।
और मरीखे[34] सुर्खो माहे ज़र्द[35] ॥
कुतब[36] तारा, फ़लक[37] के कुल अंजम[38] ।

२५ पानी २६ सरु वृक्ष का नाम है २७ घास २८ गेहूं अनाज २९ कमीना पन, कंजूसी ३० इसायों का तीरथ ३१ खुश्की और तरी (पृथ्वि समुद्र) ३२ तमाम लम्बाई ३३ तमाम चौड़ाई ३४ मंगल तारा ३५ बसन्त ऋतु का मास ३६ ध्रुव ३७ आकाश ३८ तारे

काले अंजराम[39] जो न जानें हम ॥
यह जगह, वह जगह, कहीं, हर जा।
वह जो था, और है, कभी होगा ॥
मुझ में सब कुछ है, सब मुझी में है।
मैं ही सब कुछ हूं, ग़ैरे मैंन लाशै[40] ॥
ऐ शिषर सीमें[41] तन हिमालय की ! ।
ब्रह्म विद्या की तू ही माता थी ॥
गोद तेरी हरी रहे हर दम।
गिर्जा[42] पैहलू में खेलती हर दम ॥
मौनसूनों[43] को यह बता देना।
इन्द्र और वर्ण को सुझा देना ॥
वर्षा जब देश में करेंगे जा।

३९ आकाश के पदारथ ४० मेरे बिना सब नाचीज़ है अर्थात मेरे बग़ैर कुच्छ नहीं ४१ चान्दी के तन वाली अर्थात बर्फ से ढकी हुई हिमालय की चोटी ४२ पार्वती, ब्रह्म विद्या से मुराद है ४० ग्रीष्म ऋतू में जो तूफ़ान वायू का होता है (Mon soons)

नाज में यह असर खपा देना ॥
चाख भी ले जो नाज मेवों को ।
नशा वहदत[44] में मस्त फौरन हो ॥
खुद बखुद उस से यह कहा देना ।
शक शुभा एक दम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
ऐ सबा[45]! जा गुलों की महफल में ।
शेर मर्दों के दल में बादल में ॥
चौंक उट्ठें जो तेरी आहट[46] से ।
कान में उन के सरसराहट से ॥
चुपके से राज़[47] यह सुना देना ।
शक शुभाः एक दम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।

४४ अद्वैत ४५ पर्वा की वायू (प्रातःकाल की वायू) ४६ आवाज़ ४७ गुप्त भेद

ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
बिजली ! जा कर जहान पर कौंदो ।
तीराः रवानो को जगमगा तुम दो ॥
दमक कर फिर यह तुम दखा देना ।
शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
द्वैत के, पक्षपात के, भरम के ।
कड़क कर राँदे ! दो छुड़ा छक्के ॥
गर्ज कर फिर यह तुम सुना देना ।
शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
जाओ जुँग जुग जीयोगी गंगा जी ।

४८ अंधेरी कोठी में रहनेवाले ४९ बीजली ५० युग से मुराद है.

ले अगर घूंट कोई जल का पी ॥
उस के हर रोम में धसा देना ।
शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उटा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
गाओ वेदो ! सैंना मेरी गावो ।
जाओ जीते रहो, सदा जावो ॥
ऐहले टिंट विट हो, कोई पंडित हो ।
भक्ति तुमरी सदा अखंडित हो ॥
खैंच कर कान यह पढ़ा देना ।
शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
ऐहले अखबार ! अपने पेपर्ज़ पर ।
कूक कैलास की छपा देना ॥

५१ तारीफ ५२ वर्तमान काल का पढ़ा हुवा प्रया। ५३ अखबारों में.

ऐहले ता़लीम ! मदरस्सों में तुम ।
बच्चों कच्चों को यह पिला देना ॥
नौंज़रीन ! हिन्दुवो के जलसों पर ।
कूक से सब के सब जगा देना ॥
चौक, मन्दर में, रेल में जाकर ।
ऊंचे पञ्चम का सुर से गा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
रिशता नाता क़ौ.मी सम्बंधी सब ।
शादी जलसे पै हों अकट्ठे जब ॥
शॉदी जोयां हों, हेच दुन्या में ।
भूल बैठे हों यह कि "हूं क्या मैं" ॥
चोट नक़ारे पर लगा देना ।
शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।

५४ ऐ देखनेवालों ५५ ब्याह करनेवाले, आनन्द ढूंढनेवाले.

ओम् तत् सत् हैं ओम् तत् सत् ओम् ॥

जाने मन ! वक्ते नज़ा[56], वालिद[57] को ।

पाठ गीता का यह सुना देना ॥

" तत्त्वमसि " फूंक कान में देना ।

" तू खुदाई[58] " का दम लगा देना ॥

बैठ पैहलू में बाअदब[59] यह कूक ।

आह में खूब पिस पिसा देना ॥

हल आंसू में करके फिर इस को ।

सीने पर बाप के गिरा देना ॥

कूक कैलास से उठा है ओम् ।

ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥

मौत पर यह सबक़ सुना देना ।

मातमी मुर्दा दिल जला देना ॥

लाधड़क शंख यह बजा देना ।

५६ मृत्यु काल ५७ पिता ५८ तू वह यार खास है (तूही वह महल है) ५९ तू खुदा है ६० .इज्ज़त के साथ

शक शुभा एक दम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
मरने लड़ने को फौज जाती हो ।
साह्मने मौत नज़र आती हो ॥
मिसल अर्जुन के दिल बढ़ा देना ।
मारु वाजे में गीत गा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
घुर्की तुम को जो दे कभी नाफैह्म[61] ।
तुम ने हरगीज़ भी छोड़ना मत रैह्म ॥
धमकी गाली गलोच और अनबन ।
प्यारे ! खुद तू है, तू ही है दुशमन ॥
रमज़ आंखों से यह बता देना ।
हाथ में हाथ फिर मिला देना ॥

६१ ना समझदार, कमअक़्ल.

कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
गर .अदालत में तुम को लेजायें ।
.ईसा सुक्रात तुम को ठैहरायें ॥
तुम तो खुद मस्तीये मुजस्सम[६२] हो ।
दावा अर्जी क़सूर कैसे हो ॥
चीफ जस्टस का दिल हिलादेना ।
हां ! गला फाड़ कर यह गा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
नीज़ मक़्तल[६३] में खुश खड़े होकर ।
हाज़िरीं[६४] के दिलों में घर कर कर ॥
उङ्गलियां उठ रहीं हों चारों तरफ ।
हर कोई रख रहा हो तुम पर हर्फ़[६५] ॥

६२ आनन्द स्वरूप ६३ क़त्ल (फांसी) की जगह ६४ मौजूद लोग ६५ नुक्स अलज़ाम.

क़ातलों का भरम मिटा देना।
"ग़ैर फ़ानी[66] हूं मैं" दिखा देना॥
काटा जाने को सिर झुकादेना।
नारा[67]ह से गूंज इक उठा देना॥
शक शुभाः एकदम मिटा देना
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम्॥

६६ न मरनेवाला, अमर ६७ गरज.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

इति रामवर्षा समाप्ताः

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

भजनों की वर्णानुक्रमणिका.

अ

भजन.	पृष्ठ.

भजन. पृष्ठ.

भजन. पृष्ठ.

भजन. पृष्ठ.

(क्ष) ख

भजन. पृष्ठ.

ग

भजन.	पृष्ठ.

भजन. पृष्ठ.

ज (ज्ञ)

भजन. पृष्ठ.

भजन.	पृष्ठ.
जो मस्त हैं अज़ल के उन को शराब क्या है	....१३८
जो मोहन में मन को लगाये हुवे हैं	.... ६०
जोगी का सच्चा रूप (चरित्र)	....२६४
ज्ञान के बिना शुद्धि ना मुमकिन....	....४०९
ज्ञानी का घर (सिर पर आकाश का मंडल है)....	....२३९
ज्ञानी का निश्चय व हिम्मत (गराचि .कुतब)	....२३९
ज्ञानी का प्रण (हम नंगे .उमर बतायेंगे)	....२३८
ज्ञानी का वसले .आम अर्थात सर्व से अभेदता	....२३३
ज्ञानी की अवस्था	....२०५
ज्ञानी की सैर (मैं सैर करने निकला ओढ़े अम्बर की चादर)	२४२
ज्ञानी की सैर (यह सैर क्या है .अजब अनोखा)	....२४४
ज्ञानी को स्वप्न (घर में घर कर)	....२४०

भजन: पृष्ठ.

ट.

ठ.

त.

भजन. पृष्ठ.

ध

न

भजन. पृष्ठ

प

भजन.	पृष्ठ.

भजन.	पृष्ठ.

भजन. पृष्ठ.

य

र

भजन. पृष्ठ-

भजन पृष्ठ.

इति वर्णानुक्रमणिका समाप्तः